नाशिर (पब्लिशर) : सेक्रेटरी सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट, वाराणसी
एडिशन अव्वल, २,००० ; जून १९६३
दुव्वम, १,५०० ; मई १९६४
कुल : ३,५००
ताबअ (प्रिंटर) : विश्वनाथ भार्गव
मनोहर प्रेस,
जतनबर, वाराणसी
कीमत : दो रुपये
एक डालर
पाँच शिलिंग

Title : ROOHUL QURAN
(Urdu, Nagari)
Publisher Secretary
Sarva Seva Sangh
Rajghat, Varanasi
Edition : First, 2 000 June 63
Second 1,500 May '64
Total Copies 3,500
Price : Rs. 2 00
$ 1
sh. 5.

रूहुल्-कुरआन के उर्दू तर्जमे का यह नागरी रूप पेश करते हुए हमें बहुत खुशी होती है।

यह किताब उर्दू रस्मुल्ख़त (लिपि) न जाननेवाले उर्दू ज़बानदानों के काम आ सकेगी और हिन्दी जाननेवालों के भी काम आयेगी। किताब में जगह-जगह मुश्किल लफ़्ज़ों के मानी दिये गये हैं।

असल रूहुल्-कुरआन कुरआन-शरीफ से विनोबाजी की चुनी हुई आयतों का मजमूआ है, जिसे उन्होंने ख़ास तरीके से अल्फ़ातहा (दीपिका) के साथ तर्तीब दिया है। कुरआन-शरीफ में से चुनी हुई १ ६५ आयतें इसमें ८ हिस्सों, ३ बाबों, ८ फ़स्लों और मौज़ूओं में मुरत्तब की गयी है।

रूहुल्-कुरआन का तर्जमा अच्युत देशपाण्डेजी ने किया और काशी में अरबी ज़बान के आलिम मौलाना अब्दुल अलीम साहिब और मौलाना मुहम्मद हसन साहिब 'अहसन' मरहूम ने उसे जाँचा। कश्मीर के मशहूर आलिमेदीन मौलाना मुहम्मद सईद साहिब मसूदी ने इस तर्जमे को देख लिया है। उनकी कुछ हिदायतें भी इसमें शामिल हैं।

अल्फ़ातहा के तर्जमे को जनाब अब्दुल् कय्यूम (पन्ना) ने देख लिया है। नागरी में इसे अब्दुलभाई ने तैयार किया है और जनाब मज़हर हसन और मौलवी मुख्तार अहमद 'अख्तर' फ़ैज़ी मुफ़्ती (काशी) की मदद भी इसमें शामिले-हाल रही है।

इस सिलसिले में जिन हज़रात ने हमारी मदद फ़र्माई हम उनके निहायत ही शुक्रगुज़ार हैं।

तम्हीद

साइन्स ने दुनिया छोटी बनायी और वह सब इन्सानों को नज़दीक लाना चाहता है। ऐसी हालत में इन्सानी समाज फ़िर्क़ों में बँटा रहे, हर जमाअत अपने को ऊँचा और दूसरे को नीचा समझे यह कैसे चलेगा? हमें एक-दूसरे को ठीक से समझना होगा। एक-दूसरे के अख़्लाक़ को हासिल करना होगा। यह किताब 'रूहुल्-कुरआन' इस जानिब एक छोटी-सी सयी है।

इसी मक़सद से 'धम्मपद' की तर्तीब मैंने की थी और गीता के बारे में अपने ख़यालात 'गीता-प्रवचन' के ज़रीये लोगों के सामने पेश किये थे।

बरसों से 'भूदान' के ज़रिये मेरी पदयात्रा चल रही है, जिसका ज़ाहिर मक़सद दिलों को जोड़ना है। बल्कि मेरी ज़िन्दगी के कुल काम दिलों को जोड़ने के ज़ाहिर मक़सद से मुन्हसिर हैं।

इस किताब की इशाअत में बड़ी तहरीक कारफ़र्मा है। मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह तआला के फ़ज़्लो-करम से यह कारआमद होगी।

मैत्री-आश्रम आसाम
७-३-६२
२५ रमज़ानुल मुबारक
१३८१

फ़ेहरिस्त

सहल-उल्-कुरआन में कुरआन-शरीफ़ से मुतफ़र्रक़े जैस मुख्तसर पूरे लिये गये हैं। १ ९२ ९३ ९४ ९७ ९९ १ १ १ २ १ ३ १ ४ १ ७ ११२ ११३ ११४।

सहल-उल्-कुरआन में इनका इन्तख़ाब विस्तरतीब इन सफ़हात में है १७ १२७ १७ १७५, ५९ ११ ११ १३७ १२६ ११७ १२२ २५, ६०–६ ।

मुतफ़र्रक़े पैस मामलों पूरे दर्ज की हैं।

$\frac{२६१–२६६}{२}$ $\frac{२८४–२८६}{२}$ $\frac{२६–३}{१७}$ $\frac{३५–४}{२४}$

$\frac{७६–८२}{२८}$ $\frac{१२–१९}{३१}$ $\frac{८–११}{६३}$ ।

इनका इन्तख़ाब विस्तरतीब इन सफ़हात में है १ ७ १०४ १४१ ९१ १ ५, १४३ १४०।

२ जलालते-किताब

१ ज़ियाये-किताब

२ किताब मुत्तक़ी के लिए

१ अलिफ़   लाम   मीम

२ यह वह किताब है जिसमें कोई शक नहीं रहनुमा है, परहेज़गारों—सलामत-रवों—के लिए।

३ जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, और सलात क़ायम करते हैं, और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

४ और जो ईमान लाते हैं उस पर, जो तुम पर उतारा गया और तुमसे पहले उतारा गया और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

५ यह लोग अपने पर्वरदिगार की हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह पानेवाले हैं।

२ १–५

जलालते-किताब—ग्रन्थ-गौरव ज़िया—प्रकाश मुत्तक़ी—संयमी, अर्थात् मानी ईश्वर से डरनेवाला रहनुमा—मार्गदर्शक परहेज़गार—संयमी ईमानी सलामत-रव—शान्तिगामी ग़ैब—अप्रत्यक्ष सलात—प्रार्थना, नमाज़ ईमान लाना—श्रद्धा रखना आख़िरत—परलोक परलोक यक़ीन—विश्वास पर्वरदिगार—प्रभु, पालक हिदायत—मार्गदर्शन फ़लाह—सफलता।

३ दो नौमी आयतें

१ वही है जिसने तुझ पर किताब उतारी इसमें कुछ आयतें वाज़ेह हैं, वही किताब की अस्ल है, और दूसरी मुतशाबेह हैं सो जिनके दिल में कजी है, वह गुमराही फैलाने के लिए और हक़ीक़त की टोह लगाने के लिए, मुतशाबिहात के पीछे पड़ते हैं, हालाँकि उनकी हक़ीक़त अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता ३ ७

४ बेहतरीन माहिय्यत का

१ जो लोग इस कलाम को सुनते हैं और उसके बेहतर पर चलते हैं, उन्हीं को अल्लाह ने रास्ता दिखाया है और वही लोग अक़्लमन्द हैं। ३९ १८

५ खुली हिदायत

१ बेशक यह एक नसीहत है।
२ जो चाहे, उसको सोचे। ८० ११ १२

६ किताब ज़ाहिर करनी होती है छिपानी नहीं

१ तुम ज़रूर लोगों के वास्ते इस किताब को ज़ाहिर करोगे उसको छुपाओगे नहीं। ३ १८७

वाज़ेह—स्पष्ट दो नौमी—दो प्रकार की मुतशाबिहात—सांकेतिक वचन अस्ल—मूल कजी—कुटिलता हक़ीक़त—वास्तविकता हालाँकि—यद्यपि माहिय्यत—सार नसीहत—उपदेश।

३ कैफ़ियत-किताब

७ किताब मादरी ज़बान में

१ अगर हम इसको अरबी के सिवा दूसरी ज़बान का कुर्आन बनाते तो यह कहते कि इसकी आयतें खोल कर क्यों नहीं समझाई गईं। यह क्या! गैर अरबी ज़बान और अरबी लोग! कह, यह ईमानवालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है।

४१-४४

८ आसान कुर्आन

१ हमने कुर्आन को समझने के लिए आसान बनाया, तो है कोई सोचनेवाला? ५४।१७

९ शाइर का कलाम नहीं

१ क़सम खाता हूँ उस चीज़ की जो तुम देखते हो

२ और उस चीज़ की जो तुम नहीं देखते

३ कि यह कुर्आन बुज़ुर्ग पैग़ाम्-रसाँ का कहना है

४ किसी शाइर का कहना नहीं (मगर) तुम लोग कम ही ईमान लाते हो।

५ और न किसी काहिन की बात है, (मगर) तुम कम ही ग़ौर करते हो।

६ यह उतारा हुआ है, परवर्दिगारे-आलम का ६९–३८–४३

कैफ़ियते-किताब—ग्रंथवर्णन; मादरी ज़बान—मातृभाषा; शिफ़ा—दवा, उपाय; शाइर—कवि; कलाम—वचन; पैग़ाम्-रसाँ—संदेश पहुँचानेवाला; काहिन—शकुन-अपशकुन देखनेवाला या भविष्य कहनेवाला ज्योतिषी आदि।

१० दिल को नरम बनानेवाली किताब

१ अल्लाह ने बेहतरीन बात यानी ऐसी किताब उतारी जो बाहम मिलती-जुलती दुहराई जानेवाली है। जिससे उनके दिल नर्म उठते हैं, जो अपने परवर्दिगार से डरते हैं। फिर उनके जिस्म और उनके दिल यादे-खुदा पर नर्म होते हैं। ३९ २३

११ दुहराई जानेवाली सूरः-फ़ातिहा

१ यकीनन् हमने तुमको दुहराई जानेवाली सात आयतें दीं और कुरआने-अज़ीम। १५ ८७

४ तरीकए तिलावत

१२ पाक होकर

१ बेशक यह कुरआन इज़्ज़तवाला है।

२ इसको वही छूते हैं जो मुतहहर (पाक) होते हैं। ५६ ७७ ७९

१३ अल्लाह से पनाह माँगकर

१ जब तू कुरआन पढ़ने लगे तो अल्लाह को पनाह माँग धुतकारे हुए शैतान से। १६ ९८

तस्कीन-संतोष बाहम-परस्पर यादे-खुदा-स्मरण अज़ीम-महान् तरीकए-तिलावत-पठनविधि पाक-पवित्र पनाह-संरक्षण।

३ एक और बेमिसाल

१ तौहीद

१४ अल्लाह एक है

१ कह, अल्लाह एक है।
२ अल्लाह बे-नियाज़ है।
३ वह न वालिद है, न औलाद।
४ और न कोई उसके बराबर का है। ११२ १–४

१५ औलाद रखना ख़ुदा के शायाँ नहीं

१ लोग कहते हैं, कि अल्लाह औलाद रखता है।
२ तुम एक सख़्त बात कह रहे हो।
३ इससे ज़मीन फट जाये और आस्मान टुकड़े-टुकड़े हो जाये और पहाड़ रेज़ारेज़ा होकर गिर पड़े।
४ कि वह लोग अल्लाह के वास्ते औलाद क़रार देते हैं।
५ और रहमान के शायाँ नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे।

१६ ८८–९२

बेमिसाल—अनुपम, अद्वितीय   तौहीद—एकेश्वरता   बे-नियाज़—निरपेक्ष   वालिद—बाप   औलाद—सन्तान   शायाँ—शोभास्पद   रेज़ा—टुकड़ा   क़रार देना—ठहराना   रहमान—कृपावान्   इख़्तियार करे—स्वीकार करे।

१६ मोमिनों की गवाही

१ क़सम है, सफ़ें बाँधकर खड़े होनेवालों की

२ डाँटनेवालों की

३ और ज़िकर करते हुए तिलावत करनेवालों की

४ बेशक तुम्हारा हाकिम एक है।

५ वह रब है ज़मीन और आस्मानों का और उनमें जो चीज़ें हैं उन सबका और तुलूअ करने की जगहों का। ३७ १-५

१७ ईसा अलैहिस्सलाम की गवाही

१ जब अल्लाह कहेगा—ऐ मर्यम के बेटे ईसा! क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो मा'बूद मानो? (ईसा) कहेगा तू पाक है मेरे वास्ते ऐसा नहीं कि वह बात कहूँ जिसका मुझे हक़ नहीं। अगर मैंने कहा होगा तो तू उसे ज़रूर जानता होगा। तू जानता है, जो कुछ मेरे जी में है। और जो कुछ तेरे जी में है, वह मैं नहीं जानता। बेशक तू ही ग़ैबों का जाननेवाला है।

मोमिन—श्रद्धावान् भक्त सफ़ें—पंक्तियाँ हाकिम—आदेष्टा रब प्रभु तुलूअ [illegible]—उदित होना अलैहिस्सलाम—उन पर [illegible] मा'बूद—उपास्य।

२ फिर जब रात में उस पर अँधेरा छाया तो उसने एक सितारा देखा। बोला यह है पर्वर्दिगार। फिर वह जब डूब गया तो बोला मैं डूबनेवालों को पसंद नहीं करता।

३ फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो कहा यह है मेरा पर्वरदिगार, फिर जब वह ग़ायब हो गया तो कहा अगर मेरा पर्वर्दिगार मुझको हिदायत न करे तो यक़ीनन् मैं गुमराहों में हो जाऊँगा ?

४ फिर जब उसने जगमगाते हुए सूरज को देखा तो कहने लगा कि यह है मेरा पर्वरदिगार। यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह डूब्ब हो गया तो बोल उठा ऐ मेरे लोगो जिनको तुम शरीक क़रार देते हो उनसे मैं बिलकुल बेज़ार हूँ।

५ बेशक मैंने यकसू होकर, अपना रुख़ उसीकी तरफ़ फेर दिया है, जिसने आसमान और ज़मीन बनाये हैं, और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। ६ ७५–७६

२ सूरज और चाँद पैदा करनेवाले को सज्दा करो

१ सज्दा न करो सूरज को और न चाँद को बल्कि सज्दा करो अल्लाह को जिसने उनको पैदा किया अगर तुम उसीकी बिबादत करते हो। ४१ ३७

डूब्ब हो गया—अस्त हो गया शरीक—साझीदार, ईश्वर के साथ जिन अन्य व्यक्तियों की भक्ति की जाती है वे यकसू—एकाग्र एक–मुख, मुश्रिक—मिश्रक अव्यभिचारी निष्ठा न रखनेवाला।

६ शरीकों की नफ़ी

२१ कई मा'बूद होते तो !

१ अल्लाह ने किसीको बेटा नहीं क़रार दिया और न उसके साथ कोई और मा'बूद है। अगर ऐसा होता तो हर मा'बूद अपनी बनाई हुई चीज अलग कर ले जाता और एक-दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह इनकी बयानकरदा बातों से पाक है।

२३ ६१

२२ कई आक़ाओं का गुलाम

१ अल्लाह ने एक मिसाल बयान की कि एक शख़्स है, जिसके कई झगड़ालू आक़ा हैं, और एक शख़्स पूरा एक ही का है। क्या दोनों मिसाल में बराबर हो सकते हैं? सब तारीफ अल्लाह के लिए है, लेकिन बहुत से लोग समझते नहीं।

३९ २९

२३ मकड़ी का घर

१ जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा और हिमायती बनाये हैं, उन लोगों की मिसाल मकड़ी की-सी है, उसने एक घर बना लिया लेकिन इसमें शक नहीं कि सब घरों में बड़ा ही बोदा है मकड़ी का घर। काश ये समझते!

२९ ४१

२४ शिर्क और उसकी सफ़ाई

१ याद रखो ख़ालिस बंदगी अल्लाह ही के लिए है और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा और हिमायती बना रखे हैं कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वह हमें ख़ुदा के नज़दीक कर दें बेशक अल्लाह फ़ैसला कर देगा उनके

नफ़ी–निषेध आक़ा–मालिक हिमायती–सहायक पुश्त-पनाह ख़ुदा–ईश्वर को शिर्क–मिश्रित ख़ालिस–शुद्ध।

दरमियान उस चीज़ के बारे में जिसमें वह इख्तिलाफ़ कर रहे हैं। बेशक अल्लाह राह नहीं दिखाता उसको जो झूठा और हक़ न माननेवाला है। ३९ ३

२५ खल्क़ और हिदायत की कुदरतें शुरका में नहीं

१ पूछ तुम्हारे शरीकों में कोई है, जो पहली बार पैदा करे, फिर दोबारा पैदा करे? कह, अल्लाह पहली बार पैदा करता है और फिर दोबारा पैदा करेगा। तो तुम कहाँ उल्टे फिर जाते हो।

२ पूछ तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है, जो हक़ की राह दिखाये? कह दे अल्लाह हक़ की राह दिखाता है, फिर जो हक़ की राह दिखाता है, वह पैरवी किये जाने के ज़्यादा लायक़ है? या वह कि जो बग़ैर बतलाये खुद ही राह न पाये। तो तुमको हुआ क्या है कैसा फ़ैसला करते हो? १ ३४ ३५

२६ शुरकाऽ मक्खी भी नहीं बना सकते

१ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, सो इसको कान लगाकर सुनो। अल्लाह के सिवा तुम जिनको पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी भी नहीं बना सकेंगे अगरचे उसके वास्ते सब इकट्ठा हो जायें। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले जाये तो वह उससे छुड़ा नहीं सकते। कैसे बोदे हैं यह तालिब और मतलूब। २२ ७३

इख्तिलाफ़—विरोध हक़—सत्य शरीक—साथी पैरवी करना—अनुसरण करना मिसाल—उदाहरण हरगिज़—कदापि तालिब—चाहक मतलूब—चाह्य।

४ अलीम

७ "अल्लाहुन्नूर"

२७ नूरे-इलाही की मिसाल

१ अल्लाह आसमानों का और ज़मीन का नूर है। इस नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ है, उसमें एक चिराग़ है। चिराग़ शीशे में है। शीशा गोया एक चमकता हुआ तारा है। चिराग़ रोशन किया जाता है, बरकतवाले दरख़्त यानी ज़ैतून से जो न मशरिक़ी है न मग़रिबी। क़रीब है, कि उसका तेल रौशन हो जाय चाहे उसे आग न छुए। 'नूर-अ'ला-नूर'। अल्लाह जिसको चाहता है अपने नूर का रास्ता दिखलाता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज़ को जाननेवाला है।

२ यह ऐसे घरों में है, जिनको बुलंद करने का और जिनमें अल्लाह के नाम याद करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। वहाँ सुबह व शाम उसकी याद करते हैं।

३ वह लोग जिनको अल्लाह की याद इक़ामते-सलात और अदायगीये-ज़कात से न तिजारत ग़ाफ़िल करती है न ख़रीद व फ़रोख़्त। वह जो ऐसे दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखें उलट जायेंगी।

अलीम—ज्ञानमय अल्लाहुन्नूर—ईश्वर प्रकाश है नूर-इलाही—ईश्वरीय प्रकाश ताक़—आला बरकत—सम्पदा, मंजुमक्षा नूर-अ'ला-नूर—प्रकाश पर प्रकाश बुलंद—ऊँचा इक़ामते-सलात—नियम-नियमित मान्यता करना अदायगीये-ज़कात—दान देना ग़ाफ़िल—प्रमादी, असावधान फ़रोख़्त—बिक्री।

४ ताकि अल्लाह उनको उनके कामों का बेहतर से बेहतर बदला दे और अपने फ़ज़्ल में से उनको ज़्यादती दे। और अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।

५ और जो लोग मुन्किर हैं, उनके आ'माल हैं, जैसे सहरा में सराब। जिसको प्यासा पानी समझता है, यहाँ तक कि जब वह उसके पास आता है, तो उसको कुछ नहीं पाता। और वह पाता है ख़ुदा को अपने पास। पस उसने उसका लेखा पूरा कर दिया और ख़ुदा जल्द हिसाब लेनेवाला है।

६ या जैसे तारीकियाँ एक गहरे समंदर में जिस पर छायी हुई है मौज उस मौज पर एक और मौज और मौज पर बादल तारीकियों पर तारीकियाँ। अपना हाथ जब बाहर निकलता है तो देख नहीं पाता। और जिसे अल्लाह ने रोशनी नहीं दी उसके वास्ते कोई रोशनी ही नहीं। २४ ३५–४

फ़ज़्ल–दया मुन्किर–नास्तिक आ'माल–कृति सहरा–जंगल
सराब–मृगजल–तारीकियाँ–अँधेरा रोशनी–प्रकाश।

८ मालिमे-कुल

२८ अल्लाह दिलों का शाहिद, उसका अर्श पानी पर

१ आगाह । वह अपने सीनों को दोहराते हैं, ताकि उससे छुपायें । सुनो जिस वक्त वह अपने कपड़े ओढ़ते हैं, अल्लाह जानता है, जो कुछ वह छुपाते हैं और जो कुछ जाहिर करते हैं । बेशक वह सीनों के भेद से वाकिफ़ है ।

२ कोई जमीन पर बसनेवाला ऐसा नहीं जिसकी रोजी अल्लाह के जिम्मे न हो । वह जानता है उसके ठहरने की जगह, और उसके सौंपे जाने की जगह । सब चीजें बयान करनेवाली किताब में मौजूद हैं ।

३ और वही है, जिसने छ दिन में आस्मान और जमीन को पैदा किया । और उसका अर्श पानी पर था (और है) ताकि तुम्हारा इम्तिहान करे कि कौन तुममें अच्छा काम करता है । और अगर तू कहे, कि मौत के बाद यकीनन् उठाये जाओगे तो वह लोग जो मुनकिर हैं, जरूर कहेंगे कि यह तो महज खुला जादू है ।

११ ५–७

२९ हर अमल का देखनेवाला

१ और तू किसी हाल में नहीं होता और न तू अल्लाह की तरफ़ से कुछ कुरआन की तिलावत करता है और न तुम लोग कोई काम करते हो मगर हम तुम्हारे पास मौजूद होते हैं, जब कि

मालिमे-कुल—सर्वज्ञ शाहिद—साक्षी अर्श—सिंहासन आगाह—खबरदार सीना—वक्ष भेद—छिपी हुई बात वाकिफ़ होना—जानना महज—केवल इम्तिहान—परीक्षा अमल—कृति, आचरण हाल—स्थिति ।

तुम उसमें मशगूल होते हो। और तेरे रब से ज़र्रा भर कोई चीज़ नहीं छुपती ज़मीन में न आसमान में। और उससे न कोई छोटी न कोई बड़ी चीज़ है, जो इस बयान करनेवाली किताब में नहीं है। १० ६१

१० अल्लाह के पास ग़ैब की कुंजियाँ

१ और उसीके पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। और वह जानता है जो कुछ खुश्की और समंदर में है। और कोई पत्ता नहीं झड़ता मगर वह उसे जानता है। और कोई दाना ज़मीन के अंधेरों में नहीं गिरता और न कोई हरी चीज़ और न कोई सूखी चीज़ मगर बयान करनेवाली किताब में मौजूद है। ६ ५९

११ पाँच बातें, जिन्हें अल्लाह ही जानता है

१ बेशक क़ियामत का इल्म अल्लाह ही को है। वही मेंह बरसाता है। और माँ के पेट में जो कुछ है, उसे वही जानता है। कोई नफ़्स नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा। और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह ही अलीम और ख़बीर है। ३१ ३४

मशगूल—मस्त ज़र्रा—कण खुश्की व समंदर—थल-जल
क़ियामत—अन्तिम दिन ख़बीर—जानकार।

५२ अल्लाह जानता है जो रिह्म में है

१ अल्लाह जानता है, जो हर मादा हमल में रखती है, और जो कुछ रिह्मों में कमी-बेशी होती है। और हर चीज उसके पास एक अंदाजे से है।

२ वह पोशीदा और जाहिर का जाननेवाला आ'ला मर्तबा आलीशान है।

३ तुममें जो चुपके से कहे और जो पुकारकर कहे, और जो रात में छुप जाये और जो दिन में चले-फिरे, सब बराबर हैं।

१३ ८–१०

५३ रगे-जान से भी नजदीक

१ हमने इन्सान को पैदा किया है। और उसके जी में जो ख्यालात आते रहते हैं, उन्हें हम जानते हैं। और हम उससे रगे-जान से ज्यादह नजदीक हैं। ५० १६

५४ निगाहों को मुहीत करनेवाला

१ उसको निगाहें नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है और वह बारीक-बीन और बाखबर है। ६ १०३

५५ अव्वल, आखिर, जाहिर, बातिन

१ वही है अव्वल वही है आखिर। वही है जाहिर वही है बातिन। और वह सब कुछ जानता है। ५७ ३

रिह्म—गर्भस्थान हमल—गर्भ अंदाजा—अनुमिति आ'ला-मर्तबा—उच्च श्रेणी आलीशान—उच्च, महिमावान् रग—नस निगाह—दृष्टि मुहीत करनेवाला—घेरनेवाला बारीक्-बीन—सूक्ष्मदर्शी बातिन—गुप्त।

५ रहीम

६ रहमान

१६ अस्माउल्हुस्ना व सिफ़ाते-आलिया

१ बेशक वही पहली बार पैदा करता है। और वही दोबारा पैदा करेगा।

२ वही बख्शनेवाला मुहब्बत करनेवाला।

३ अर्श का मालिक और मज्दवाला है।

४ जो चाहता है, कर गुज़रता है। ८५ १३-१६

१७ अल्लाह चाहता है, कि तुम्हारा बोझ हल्का करे

१ अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते खोल दे और दिखा दे तुमको उन लोगों की राह जो तुमसे पहले थे। और तुमको मुआफ़ करे। और अल्लाह जाननेवाला हिकमतवाला है।

२ और अल्लाह चाहता है, कि तुम पर तवज्जो करे। और जो लोग नफ़्सानी ख्वाहिशात के पीछे लगे हुए हैं, वह चाहते हैं, कि तुम राह से बहुत दूर जा पड़ो।

३ अल्लाह चाहता है, कि तुमसे बोझ हल्का करे। और आदमी नातवाँ पैदा किया गया है। ४ २६-२८

रहीम—करुणामय रहमान्—कृपावान् अस्माउल्हुस्ना—सर्वोत्तम नाम सिफ़ाते-आलिया—सर्वोच्च गुण मज्द—महानता नफ़्सानी—दैहिक ख्वाहिशात—कामनाएँ नातवाँ—दुर्बल।

३८ इस्लाह रहमत है

१ जब तेरे पास हमारी आयतों के माननेवाले लोग आयें तो तू कह दे कि तुम पर सलाम (अमन व रहमत) हो। तुम्हारे रब ने रहमत को अपना जिम्म करार दिया है, कि तुममें से जो कोई नादानी से बुरा काम करे, फिर उसके बाद तौब करे और अपनी इस्लाह करे, तो वह बख्शनेवाला मेहरबान है। ६ ५४

३९ मुआफ करनेवाला, सज़ा देनेवाला
(गफ्फार और शदीदुल अिकाब)

१ बेशक मेरा पर्वरदिगार लोगों को उनकी ज्यादतियों के बावजूद मुआफ करनेवाला है। और यह भी वाकिआ है कि तेरा रब सख्त सज़ा देनेवाला है। १३ ६

४० कबूलियते-तौब के कुयूद

१ अल्लाह पर तौब की कबूलियत सिर्फ़ उन लोगों के लिए है, जो नादानी से बुराई करते हैं फिर जल्दी से तौब करते हैं, पस ऐसे ही लोगों को अल्लाह मुआफ़ करता है। और अल्लाह जाननेवाला और हिकमतवाला है।

२ और उन लोगों के लिए तौबा की कबूलियत नहीं है जो बुराई करते रहते हैं। यहाँ तक कि जब उनमें से किसीके आगे मौत आ जाती है, तो कहता है मैने अब तौब कर ली। और ऐसों के लिए भी नहीं जो हालते-कुफ्र में मरते हैं। ऐसे लोगों के लिए हमने एक दर्दनाक सज़ा तय्यार रखी है। ४ १७-१८

इस्लाह-सुधार रहमत-करुणा अमन-शांति नादानी-नासमझी तौबः-पश्चात्ताप कबूलियत-स्वीकृति हालते-कुफ्र-नास्तिकता की स्थिति।

४१ नाक़ाबिले-मुआफ़ी जुर्म

१ बेशक अल्लाह इस बात को नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाये। और उसके सिवा और गुनाह मुआफ़ करेगा जिसके लिए चाहे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठहराये उसने यक़ीनन् बड़े गुनाह की बात बनाई। ४ ४८

१० निअ्मतें

४२ रूहानी अख़लाक़ी और मादी निअ्मतें

१ रहमान ने।
२ सिखाया क़ुरआन।
३ पैदा किया इन्सान को।
४ उसको बोलना सिखाया।
५ सूरज और चांद हिसाब से हैं।
६ और सितारे और दरख़्त सज्दा करते हैं।
७ और आस्मान को ऊँचा किया। और तराज़ू रखी।
८ कि तौल में बे-ऐतदाली न करो।
९ और इन्साफ़ से सीधी तौल तौलो और तौल में कमी न करो।
१ और ज़मीन बनाई मख़लूक़ के लिए।
११ उसमें मेवे हैं, और गिलाफ़्दार फलवाली खजूरें हैं।
१२ और अनाज भूसीवाला और ख़ुश्बूदार फूल।
१३ पस तुम दोनों अपने पर्वरदिगार के किन-किन एहसानात और करिश्मा-साज़ियों से मुकरोगे? ५५ १-१३

निअ्मतें–देनें दरख़्त–वृक्ष सज्दा–प्रणिपात बे-ऐतदाली–अनुचित मख़लूक़–प्रजा गिलाफ़–आवरण ख़ुश्बू–सुवास करिश्मासाज़ी–चमत्कार करना।

४३ मांगा सो सब दिया

१ अल्लाह वह है, जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया। और आस्मान से पानी उतारा। फिर उससे तुम्हारे लिए मेवों का रिज़्क़ निकाला। और कश्तियों को तुम्हारे अख़्तियार में कर दिया कि उसके हुक्म से समंदर में चलें। और नदियों को तुम्हारे काम में लगाया।

२ और लगाया तुम्हारे काम में सूरज और चांद को जो कि लगातार चले जा रहे हैं। और रात और दिन को तुम्हारी ख़िदमत पर मामूर किया।

३ और वह सब तुम्हें दिया जो तुमने मांगा। और अगर तुम अल्लाह की निअमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते।

१४ ३२–३४

४४ तख़लीक़े-अय्याम रहमत है

१ कह, देखो तो अगर अल्लाह रोज़े-क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो सिवाय ख़ुदा के कौन हाकिम है कि तुम्हारे पास कहीं से रोशनी लाये। फिर क्या तुम सुनते नहीं?

२ कह, देखो तो अगर अल्लाह रोज़े-क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन कर दे तो ख़ुदा के सिवा कौन हाकिम है कि तुम्हारे पास ऐसी रात लाये जिसमें तुम आराम पाओ। फिर क्या तुम सोचते नहीं?

३ और अपनी मेहरबानी से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाये कि उसमें आराम करो और उसका फ़ज़्ल चाहो और ताकि तुम शुक्र करो।

२८ ७१–७३

रिज़्क़–रोज़ी अख़्तियार–अधिकार ख़िदमत–सेवा मामूर–नियुक्त
तख़लीक़े-अय्याम–काल-निर्माण।

४५ इन्सान की शिक्षा

१ पस इन्सान अपने खाने की तरफ देखे ।
२ कि हमने ऊपर से खूब पानी बरसाया ।
३ फिर हमने खास तरह से जमीन को फाड़ा ।
४ फिर उसमें अनाज उगाया ।
५ और अंगूर और गिजाई पौदे ।
६ और जैतून और खजूरें भी ।
७ और घने बाग़ ।
८ और मेवा और चारा ।
९ तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए । ८० २४–३२

४६ दूध, अंगूर, शहद

१ बेशक तुम्हारे वास्ते चौपायों में भी सबक है । उनके पेट की चीजों में से गोबर, और खून के दर्मियान से खालिस दूध जो पीनेवालों के लिए खुशगवार है, हम तुम्हें पिलाते हैं ।

२ और खजूर और अंगूर के फलों से भी जिससे तुम लोग नशा और अच्छा रिज़क बनाते हो । इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं ।

३ और परवरदिगार ने शहद की मक्खी के जी में यह बात डाली कि पहाड़ों में और दरख्तों में और जहाँ-जहाँ ऊँची-ऊँची टट्टियाँ बाँधते हैं उनमें घर बना ले ।

चौपाये—पशु-जानवर ।

८ फिर सब फलों में से खा। फिर अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चलती रह। उनके पेट से एक रंग-बिरंग की पीने की चीज निकलती है, जिसमें लोगों के वास्ते शिफ़ा है। बेशक इसमें निशानी है, उन लोगों के लिए जो सोचते हैं।

१६ ६९-६८

४७ हिक्मत सबसे बड़ी देन

१ वह जिसे चाहता है हिक्मत देता है, और जिसे हिक्मत दी गई, ख़ैरे-कसीर (बहुत भलाई) दी गई। और अक़्लवाले ही नसीहत क़बूल करते हैं।

२ २६९

हिक्मत–विवेक।

५ ख़ालिक़

११ ख़ालिक़े-कायनात

४८ अम्मन ख़ल्क़ा

१ भला किसने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को। और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा। फिर हमने उससे रौनक़वाले बाग़ उगाये। उनके दरख़्त उगाने की क़ुदरत तुमको न थी। क्या अल्लाह के साथ कोई और हाकिम है?–नहीं। बल्कि वह ऐसे लोग हैं, कि कज-रफ़्तारी किये जाते हैं।

२ भला किसने ज़मीन को ठिकाना बनाया। और उसके बीच में नदियाँ बनायीं। और उसके वास्ते पहाड़ बनाये। और दो समन्दरों के बीच हद्दे-फ़ासिल रखी। क्या है अल्लाह के साथ कोई और हाकिम? नहीं। बल्कि उनमें अक्सर समझते नहीं।

३ भला कौन सुनता है बेक़रार की जब वह उसको पुकारता है। और मुसीबत दूर कर देता है। और तुमको ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है। क्या अल्लाह के साथ और कोई हाकिम है? तुम लोग कम ही ध्यान देते हो।

ख़ालिक़–स्रष्टा ख़ालिक़े-कायनात–सृष्टि-निर्माता ख़ल्क़ा–पैदाक
अम्मन–भला किसने अम्मन-ख़ल्क़ा–भलापैदाक रौनक़–शोभा
कज-रफ़्तारी–मुँह फेरना हद्दे-फ़ासिल–दूर करनेवाली सीमा बेक़रार–अशान्त
मुसीबत–कष्ट दुख ख़लीफ़ा–[illegible]।

४ भला कौन है, जो तुमको खुश्की और समंदर की तारीकियों में राह दिखाता है। और कौन भेजता है हवाओं को अपनी रहमत के आगे खुशखबरी देनेवाली बनाकर। क्या कोई और हाकिम है अल्लाह के साथ? अल्लाह बुलंद व बरतर है, उस चीज़ से जिसे वह शरीक क़रार देते हैं।

५ भला कौन पहिली बार पैदा करता है, फिर दोबारा करेगा। और कौन तुमको आस्मान से और ज़मीन से रिज़्क़ देता है। क्या है और कोई हाकिम अल्लाह के साथ? कह, अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ। २७ ६०—६४

४९ फ़िरिश्तों को पैदा करनेवाला

१ तारीफ़ सब अल्लाह ही के वास्ते है। जो आस्मानों और ज़मीन को पैदा करनेवाला। फ़िरिश्तों को क़ासिद बनानेवाला है, जो दो-दो तीन-तीन और चार चार परोंवाले हैं। तख़लीक़ में जो चाहता है, बढ़ा देता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। ३५ १

५ नशोनुमा देनेवाला

१ बेशक अल्लाह फाड़नेवाला है दाना और गुठली को ज़िन्दः को मुर्दे से निकालता है। और मुर्दे को ज़िन्दः से निकालने-वाला है। यह है अल्लाह। फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो?

२ सुबह की पौ फोड़नेवाला है। और उसीने रात बनायी राहत के लिए। और सूरज और चाँद हिसाब के लिए। यह तालिब भिल्मवाले का अन्दाज़ा है।

बर्तर—श्रेष्ठ, अधिक अच्छा दलील—प्रमाण, तुहूद क़ासिद—सन्देशवाहक नशोनुमा—विकास राहत—आराम भिल्मवाला—देवदूत।

३ और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये। ताकि उनके ज़रिये ख़ुश्की और समुन्दर की तारीकियों में राह पाओ। बेशक हमने समझदार लोगों के लिए तफ़्सील के साथ निशानियाँ बयान कर दी हैं।

४ और वही है जिसने तुम सबको एक जान से पैदा किया। फिर एक जाये-करार है। और एक सौंपने की जगह। यक़ीनन् हमने उन लोगों के लिए जो सोचते हैं—निशानियाँ खोल खोल बयान कर दी हैं।

५ और वही है, जिसने आस्मान से पानी उतारा। फिर हमने उससे हर तरह की नबातात उगायी। फिर उससे सब्ज़ा उगाया, जिससे हम ऊपर तले चढ़े हुए दाने निकालते हैं। और खजूर के गाभे से फलों के गुच्छे जो झुके होते हैं। और अंगूर के बाग़। और ज़ैतून और अनार, जो आपस में मिलते-जुलते हैं, और जुदा भी हैं। उसके फल की तरफ़ देखो जब वह फलता है। और उसके पकने को। बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो ईमान रखते हैं। ६,९५–९९

४१ तन्ज़ीले-काएनात के अध्याय

१ कह क्या तुम उसका इन्कार करते हो जिसने दो दिन में ज़मीन पैदा की? और उसका हम्सर बनाते हो? वह है सारे जहाँ का रब।

२ और उसने ज़मीन में उसके ऊपर से पहाड़ रखे। और उसमें बरकत रखी। उसने चार दिन में उसकी पैदावार का अन्दाज़ा ठहराया पूरा-पूरा माँगनेवालों के लिए।

तफ़्सील—विस्तार नबातात—वनस्पति इन्कार—अस्वीकार हम्सर—समान अय्याम—दिन।

३ फिर आस्मान की तरफ़ तवज्जो की। और वह धुवाँ था। फिर उससे और ज़मीन से कहा तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से। दोनों बोले हम आये ख़ुशी से।

४ पस दो दिन में उनको सात आस्मान बनाये। और हर आस्मान में उसका हुक्म उतारा। और इस क़रीब के आस्मान को चिराग़ों से सजाया और महफ़ूज़ कर दिया। यह उस ग़ालिब इल्मवाले का अंदाज़ा है। ४१ ९–१२

५२ आग, पानी और अनाज का मालिक

१ क्या तुमने ग़ौर किया उस पर, जो तुम बोते हो?

२ क्या तुम उसको उगाते हो या हम उगानेवाले हैं?

३ अगर हम चाहते तो उसको चूरा चूरा कर देते। फिर तुम बातें बनाते रह जाते।

४ कि हम पर तो तावान पड़ा।

५ बल्कि हम महरूम कर दिये गये।

६ क्या तुमने ग़ौर किया पानी पर, जो तुम पीते हो?

७ बादल से उसको तुमने उतारा या हम उतारनेवाले हैं?

८ अगर हम चाहते तो उसको खारी कर देते। फिर तुम क्यों नहीं शुक्र करते?

९ फिर क्या तुमने ग़ौर किया आग पर, जिसे तुम सुलगाते हो?

१० क्या उसका दरख़्त तुमने पैदा किया या हम हैं पैदा करनेवाले?

११ हमही ने बनाया उसको नसीहत और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए।

१२ पस तू अपने रब्बे-अज़ीम के नाम की तस्बीह कर।

५६ ६३–७४

तावान–हर्जाना, अन्धरख तस्बीह–जप करना, जयजयकार करना महरूम–वंचित रब्बे-अज़ीम–महान प्रभु।

५३ सबका सहारा

१ क्या उन लोगों ने अपने ऊपर परिंदों को नहीं देखा पर फैलाये हुए, और कभी समेट लेते हैं। उनको कोई नहीं थाम रखता बजुज रहमान के। बेशक वह हर चीज को देखनेवाला है। ६७ १९

१२ अल्लाह की हसीन सनअत

५४ सनअत-खुदावंदी का नक़्स

१ बहुत बरकतवाला है वह, जिसके हाथ में बादशाही है, और वह हर चीज पर क़ादिर है।

२ जिसने मौत और जिन्दगी को पैदा किया ताकि तुमको जांचे कि कौन तुममें से ज्यादा अच्छा है अमल में। और वह ग़ालिब और बख़्शनेवाला है।

३ जिसने तह पर तह सात आसमान बनाये। तू रहमान की सनअत में कोई फ़र्क़ नहीं देखेगा। फिर दोबारा निगाह डाल तुझे कहीं दराड़ नज़र आती है ?

४ फिर बार-बार निगाह डाल तेरी निगाह लौट आयेगी नाचार और थकी हुई। ६७ १-४

५ खुदा ने मुतनासिब दुनिया बनायी

१ क्या हमने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया ?
२ और पहाड़ों को मेखें ?
३ और हमने तुमको जोड़े-जोड़े पैदा किया।
४ और हमने तुम्हारी नींद को सामाने-राहत बनाया।

परिंदे—पक्षी पर—पंख बजुज—सिवा सनअत—कारीगरी तफ़ावुत रखना नक़्स—व्यवस्था खुदावंदी—ईश्वरीय मालिक की क़ादिर—समर्थ नाचार—निरुपाय मुतनासिब—अनुपातयुक्त, व्यवस्थित सामाने-राहत—विश्राम का सामान।

५ और रात को पर्दा बनाया ।
६ और दिन को कमाई के लिए बनाया । ७८ ९–११

५६ ऊंट वग़ैरः अजायबाते-क़ुदरत

१ क्या वह ऊंटों की तरफ नहीं देखते कि वह कैसे बनाये गये ?
२ और आस्मान की तरफ कि कैसे ऊंचा किया गया ?
३ और पहाड़ की तरफ कि कैसे नस्ब किये गये ?
४ और ज़मीन की तरफ कि कैसी बिछायी गई ? ८८ १७–२०

५७ ग़ैब के बारे में दिमाग़ न लगाओ

१ हमने आस्माने-दुनिया को तारों की सजावट से सजाया ।
२ और उसे हर सर्कश शैतान से महफ़ूज़ किया ।
३ वह आलमे-बाला की तरफ कान नहीं लगा सकते और खदेड़ने के लिए हर तरफ से उन पर शिहाब फेंके जाते हैं ।
४ और उनके लिए दायमी अज़ाब है ।
५ मगर जो झप से उचक ले तो उसके पीछे एक चमकता शो'ला लगता है । ३७ ६–१०

१३ आयात इलाही

५८ एक पानी से मुख़्तलिफ़ फल

१ ज़मीन में पास-पास कई क़त्अे हैं और अंगूर के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं, और खजूरें हैं । एक की जड़ दूसरे से मिली हुई, और बा'ज़ बिन मिली अकेली ही । एक ही पानी सबको दिया जाता है । और हम बा'ज़ को बा'ज़ पर बढ़ा देते हैं फलों

अजायबात–अद्भुतताएँ नस्ब करना–गाड़ना सर्कश–विद्रोही महफ़ूज़–सुरक्षित आलमे-बाला–ऊपर लोक शिहाब–अंगारा, शोले दायमी–नित्य अज़ाब–पीड़ा शो'ला–अंगारा, ज्वाला क़त्अे–टुकड़े ।

में। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए, जो अक्ल से काम लेते हैं। १३४

५९ कुद्रत की चंद निशानियाँ

१ उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से बनाया। फिर अब तुम इन्सान होकर ज़मीन पर हर तरफ़ फैल पड़े हो।

२ और उसकी निशानियों में यह है, कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाये ताकि उनके पास तुम सुकून पाओ और तुम्हारे दर्मियान प्यार और रहम पैदा किया। बेशक इसमें फ़िक्र करनेवालों के लिए निशानियां हैं।

३ और उसकी निशानियों में से है, आस्मानों और ज़मीन का बनाना। और तुम्हारी बोलियों और रंगों का अलग-अलग होना। बेशक इसमें दानिशमंदों के लिए निशानियां हैं।

४ और उसकी निशानियों में से है तुम्हारा रात में और दिन में सोना। और तुम्हारा उसके फ़ज़्ल को तलाश करना। बेशक इसमें निशानियां हैं उनके लिए, जो सुनते हैं।

५ और उसकी निशानियों में से यह है, कि वह तुमको बिजली दिखलाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी। और आस्मान से पानी उतारता है। फिर उससे ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िन्दा करता है। बेशक इसमें अक्ल वालों के लिए निशानियां हैं।

कुद्रत—ईश्वरीय सामर्थ्य जिन्स—जाति सुकून—शांति।

६ और उसकी निशानियों में से यह है, कि उसके हुक्म से जमीन और आस्मान क़ायम हैं। फिर वह जब तुमको पुकारकर जमीन में से बुलायेगा तो तुम उसी वक्त निकल पड़ोगे।

३० २०–२५

६० अल्लाह साया करनेवाला

१ क्या तूने अपने पर्वर्दिगार की तरफ नजर नहीं की कि उसने साये को कैसे फैला रखा है। और अगर वह चाहता तो उसको ठहरा हुआ रखता। फिर हमने सूरज को उसकी अलामत बनायी।

२ फिर हमने उसको अपनी तरफ़ आहिस्ता-आहिस्ता समेट लिया।   २५.४५–४६

६१ मुख्तलिफ़ रंगों का पैदा करनेवाला

१ क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा। और फिर उससे हमने मुख्तलिफ़ रंग के फल निकाले। और पहाड़ों में तबके हैं, सफ़ेद और कई तरह के लाल और सुर्ख़ काले।

२ और इसी तरह आदमियों में और जानवरों में और चौपायों में भी कई तरह के रंग हैं। अल्लाह से उसके बंदों में वही डरते हैं, जो जानते हैं। बेशक अल्लाह जबर्दस्त बख्शने वाला है।   ३५ २७–२८

अलामत–निशानी तबके–स्तर मुख्तलिफ़–विविध।

७ कादिर मुतलक़

१४ क़ादिर

६२ मुख़्तारे-आला

१ कह, किसकी है ज़मीन और जो इसमें है ? अगर तुम जानते हो।

२ वह ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह के हैं। तू कह, फिर तुम सोचते नहीं ?

३ कह, कौन है पर्वरदिगार सातों आस्मानों का और मालिक अर्शे-अज़ीम का ?

४ वह ज़रूर कहेंगे सब अल्लाह का है। कह, फिर तुम क्यों नहीं डरते ?

५ कह, किसके हाथों में हर चीज़ की बादशाही है ? और वह पनाह देता है। और उसके मुक़ाबले में पनाह नहीं दी जा सकती। अगर तुम जानते हो।

६ वह ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह के लिए। तू कह, फिर तुम पर कहाँ से जादू आ पड़ता है ? २३ ८४—८९

६३ क़ियामत बर्पा करनेवाला

१ और वह नहीं समझे अल्लाह को जितना कि वह है। क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी एक मुट्ठी में होगी। और आस्मान उसके दाहने हाथ में लिपटा हुआ होगा। वह पाक है, और बुलंद है उससे जिसको वह शरीक क़रार देते हैं। ३९ ६७

क़ादिरे-मुतलक़—सर्वसमर्थ मुख़्तारे-आला—सर्वशक्तिमान् मालिक अर्शे-अज़ीम का—महान् सिंहासन का स्वामी क़ियामत बर्पा करनेवाला—प्रलयंकारी बुलंद—ऊँचा।

६४ बनानेवाला, सँवारनेवाला और मिटानेवाला

१ परवर्दिगारे-आलीशान के नाम की तस्बीह कर।
२ जिसने बनाया फिर दुरुस्त किया।
३ और जिसने अन्दाज़ा किया और फिर राह दिखलायी।
४ और जिसने चारा निकाला।
५ फिर उसको स्याह कूड़ा-करकट कर डाला। ८७ १–५

६५ दोबारा ज़िन्द: करनेवाला

१ इन्सान ने ग़ौर नहीं किया कि हमने उसको एक क़तरे से पैदा किया। पस नागहाँ वह खुला झगड़ालू हो गया।

२ और हमारी निस्बत अजीब बातें बोलने लगा। और अपनी पैदाइश भूल गया। कहता है, कौन ज़िन्द करेगा हड्डियों को जो गल गयी हों।

३ कह, उनको वह ज़िन्द करेगा जिसने उनको पहली बार बनाया और वह सब तरह का पैदा करना जानता है।

४ जिसने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की फिर अब तुम उससे आग सुलगाते हो।

५ क्या वह, जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैद: किया इस बात पर क़ादिर नहीं कि उनके जैसों को पैद: करे? क्यों नहीं? और वही पैद: करनेवाला और जाननेवाला।

६ उसका हुक्म यही है, कि जब किसी चीज़ का इरादः करता है तो उससे कहता है, 'हो जाओ'। पस वह हो जाती है।

७ तो पाक है वह जात जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाही है। और उसकी तरफ़ तुम सबको लौटकर आना है।

३६ ७७–८३

स्याह–काला कूड़ा–कचड़ा नीर–बिल्कुल क़तरा–बिन्दु
नागहाँ–एकाएक निस्बत–बारे में सब्ज़–हरे।

१५ मुख्तारे-कुल

६६ घटा-बढ़ी देनेवाला

१ अल्लाह का राज है, आस्मानों में और ज़मीन में जो चाहता है, सो पैदा करता है। जिसको चाहता है, बेटियाँ देता है। और जिसको चाहता है, बेटे देता है।

२ या उनको जोड़े देता है, बेटे और बेटियाँ। और जिसको चाहता है, बे-औलाद रख देता है। बेशक वह बड़ा जाननेवाला, क़ुदरतवाला है। ४२ ४९–५

६७ अल्लाह तेरे हाथ

१ कह, ऐ अल्लाह, मुल्क के मालिक तू जिसको चाहे मुल्क दे। और जिससे चाहे, मुल्क छीन ले। और जिसको चाहे, इज़्ज़त दे। और जिसको चाहे, ज़िल्लत दे। सब भलाई तेरे हाथ में है। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। ३ २६

६८ ख़ुदा मुख़्तार है, बन्दा मजबूर

१ तेरा पर्वरदिगार जिसको चाहता है, पैदा करता है, और चुन लेता है। उनको मुतलक़ इख़्तियार नहीं। अल्लाह पाक है, और उनके शिर्क से बुलंद है। २८ ६८

६९ जिसे चाहे, रहमत के लिए ख़ास करे

१ कह, फ़ज़्ल यक़ीनन् अल्लाह के हाथ में है। जिसको चाहे, दे। और अल्लाह बहुत गुंजाइशवाला और जाननेवाला है।

२ जिसको चाहता है, अपनी रहमत के लिए ख़ास करता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्लवाला है। ३ ७३–७४

मुख्तारे-कुल—सर्वसमर्थ, इच्छा—समर्थ इज़्ज़त—प्रतिष्ठा ज़िल्लत—अपमान मालाहमति हुकूमतवाला—शासक फ़ज़्ल—दया, महत्ता।

७० ईमान मशिय्यते-इलाही पर मुनहसिर है

१ किसी नफ़्स के लिए मुमकिन नहीं कि अल्लाह की मशिय्यत के बग़ैर ईमान लाये। और गंदगी डाल देता है उन लोगों पर, जो अक़्ल से काम नहीं लेते। १० १००

७१ अल्लाह ही शरहे-सद्र करता है

२ जिसको अल्लाह राहे-रास्त दिखाना चाहता है, खोल देता है उसके सीने को अपने इताअत के लिए। और जिसको गुमराह रखना चाहता है उसके लिए उसको तंग बहुत तंग कर देता है। गोया वह ज़ोर से आस्मान पर चढ़ता है। इस तरह अल्लाह ईमान न रखनेवालों पर फटकार डालता है। ६ १२५

१६ सिफ़ाते-इलाही इदराके-बयान से बाहर

७२ "हुवल् अलीउल् अज़ीम"—आयतुल्कुर्सी

१ अल्लाह है कि उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं। ज़िन्दा है। सब का क़ायम रखनेवाला है, उसे न ऊँघ आती है, न नींद। उसीका है, जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है। उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर, कौन सिफ़ारिश कर सकता है। वह जानता है, जो कुछ उन लोगों के आगे है, और जो कुछ उन लोगों के पीछे है। और वह लोग उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता नहीं कर सकते मगर वह जो चाहे।

मशिय्यते-इलाही—ईश्वरेच्छा शरहे-सद्र करता है—हृदय को विशाल करता है इदराक-बयान से बाहर—अवर्णनीय हुवल् अलीउल् अज़ीम—वह सर्वोच्च महान् आयतुल् कुर्सी—ईश्वरीय सिंहासनविषयक संकेत (वचन)।

उसकी कुर्सी ने आस्मानों और जमीन को समा लिया है। और इन दोनों की निगहबानी उसको थकाती नहीं। और वह बरतर है, अज़मतवाला है। २ २५५

७३ समंदर रोशनाई हो तो भी नाकाफ़ी

१ कह मेरे रब की बातें लिखने के लिए अगर समंदर स्याही हो तो मेरे रब की बातें खतम होने के पहिले समंदर खर्च हो जाय। अगरचे हम वैसे ही दूसरे समंदर भी उसकी मदद के लिए लायें। १८ १ ९

७४ अगर सब दरख्त कलम हो जायें

१ जमीन में जितने भी दरख्त हैं, अगर वह कलम हो जायें और समंदर (स्याही हो जाय) उसके अलावा सात समंदर और हो जायें तो भी अल्लाह की सिफ़्त का बयान तमाम नहीं होगा। बेशक अल्लाह ग़ालिब है, हिकमतवाला है।

३१ २७

निगहबानी—देखभाल सिफ़्त—गुण दरख्त—वृक्ष।

८ जिकरुल्लाह

१७ अल्लाह का नाम

७५ "अस्माउल्-हुस्ना"

१ दोज़खवाले और बेहिश्तवाले बराबर नहीं हो सकते। जो बेहिश्तवाले हैं वह मुराद पानेवाले हैं।

२ अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते। तो तू देखता कि वह अल्लाह के डर से दब जाता फट जाता। और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं। ताकि वह सोचें।

३ वही अल्लाह है, जिसके सिवा और कोई हाकिम नहीं। पोशीदः और ज़ाहिर का जाननेवाला है। वह बहुत मेहरबान और निहायत रहमवाला है।

४ वही अल्लाह है, जिसके सिवा और कोई हाकिम नहीं। वह बादशाह है, पाक ज़ात है, सलामतीवाला है, अमन देनेवाला पनाह में लेनेवाला ग़ालिब ज़बर्दस्त साहिबे-अज़मत है। अल्लाह पाक है उस चीज़ से जिसको यह शरीक ठहरा देते हैं।

५ वही है अल्लाह, पैदा करनेवाला दुरुस्त करनेवाला सूरत बनानेवाला। उसीके लिए हैं सारे अच्छे नाम। उसकी तस्बीह करते हैं, जो कुछ आस्मानों में है, और ज़मीन में है। और वही ग़ालिब हिक्मतवाला है। ५९ २०—२४

मुराद पाना—सफल होना पोशीदः—गुप्त पाकज़ात—पावन स्वरूप सलामतीवाला—कल्याणकारी सूरत बनानेवाला—रचनाकार।

९ दीदार और ता'लीमे-ग़ैबी

१८ दीदार और ता'लीमे-ग़ैबी

५६ मूसा अलैहिस्सलाम का मुशाहिदा और गुफ़्तगू

१ हमने मूसा से तीस रात का वादा किया और उसको दस बढ़ाकर पूरा किया। फिर उसके पर्वरदिगार की मुद्दत चालीस रातें पूरी हुईं। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि तू क़ौम में मेरा ख़लीफ़ा रहकर, काम को सँवारता रह। और मुफ़सिदों की राह की पैरवी न कर।

२ और जब मूसा हमारे मुक़र्रर वक़्त पर आया। और उसके पर्वरदिगार ने उससे कलाम किया। तो बोला 'ऐ मेरे पर्वरदिगार! तू मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझको देखूँ।' कहा 'तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा। लेकिन तू पहाड़ की तरफ़ देख। अगर वह अपनी जगह पर क़ायम रहा तो अलबत्ता तू मुझको देख सकेगा।' फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर तजल्ली की तो उसने पहाड़ को चकनाचूर कर दिया। और मूसा ग़श खाकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया तो बोला 'पाक है तेरी ज़ात। मैंने तेरी तरफ़ तौबा की। और मैं सबसे पहला ईमान लानेवाला हूँ।'

दीदार—साक्षात्कार ता'लीमे ग़ैबी—साक्षात्कार मुशाहिदा—दर्शन गुफ़्तगू—बातचीत मुफ़सिद—झगड़ा करनेवाले कलाम किया—भाषण किया तजल्ली की—प्रकाश डाला, ज्योति प्रकट की ग़श खाना—मूर्च्छित होना।

३ कहा ऐ मूसा ! अपने पैग़ामों के साथ और अपने कलाम के साथ मैंने तुमको लोगों पर इम्तियाज़ दिया। पस ले जो कुछ मैंने तुमको दिया। और शुक्र-गुज़ारों में से हो जा।
४ और हमने उसको तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी। कहा उनको मज़बूती से थाम ले। और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि वह उसकी बेहतर बातों को पकड़े रहें। ७ १४२–१४५

७० मूसा अलैहिस्सलाम को दीदार

१ क्या तेरे पास मूसा की ख़बर पहुँची ?
२ जब उसने एक आग देखी तो अपने घरवालों से कहा ठहरो ! यक़ीनन् मैंने एक आग देखी है। शायद मैं उससे तुम्हारे पास एक अंगारा ले आऊँ। या आग के पास पहुँचकर रास्ते का पता पाऊँ।
३ फिर जब उसके पास पहुँचा तो आवाज़ दी गयी 'मूसा' !
४ बेशक मैं तेरा परवर्दिगार हूँ। सो अपनी जूतियाँ उतार डाल। तू मुक़द्दस मैदान 'तवा' में है।
५ और मैंने तुमको मुन्तख़ब कर लिया। पस जो कुछ कि वह्य की जाती है वह सुन।
६ बेशक मैं जो हूँ, अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। सो मेरी इबादत कर। और मेरी याद के लिए सलात क़ायम रख। २० ९–१४

इम्तियाज़–बैशिष्ट्य मुक़द्दस–पवित्र मुन्तख़ब किया–चुना
वह्य–ईश्वरीय ज्ञान प्रदान।

७८ मुहम्मद स ···का आसमानी मुशाहदा (मेराज)

१ कसम है सितारे की जब कि वह नीचे झुके ।
२ तुम्हारा यह साथी न बहका न बेराह हुआ ।
३ और न वह ख्वाहिशे-नफ्स से बोलता है ।
४ यह तो सिर्फ़ वह्य है, जो भेजी जाती है ।
५ ज़बर्दस्त कुव्वतवाले ने उसको सिखाया है ।
६ वह साहिबे ताक़त है । और पूरी सूरत में नमूदार हुआ ।
७ और वह आस्मान के बुलंद किनारे पर था ।
८ फिर वह नज़दीक हुआ । फिर और उतर आया ।
९ फिर दो कमान के बराबर फ़ासला रह गया । या उससे भी नज़दीक ।
१० फिर हमने वह्य की अपने बंदे की तरफ़ जो कुछ कि वह्य की ।
११ जो देखा उसको दिल ने झूठ नहीं समझा ।
१२ अब तुम उससे झगड़ते हो उस पर, जो उसने देखा ।
१३ और उसने उसको और भी एक बार उतरते हुए देखा है ।
१४ सिद्रतुलमुन्तहा के पास ।
१५ उसके पास आराम से रहने का बेहिश्त है ।
१६ जब सिद्र पर जो छा रहा था सो छा ही रहा था ।
१७ उस वक्त निगाह न तो हटी और न बढ़ी ।
१८ यक़ीनन् उसने अपने पर्वर्दिगार की बड़ी निशानियाँ देखीं ।

५३ १–१८

सल्ल अल्लाहु अलैहि व सल्लम–उस पर परमात्मा का आशीर्वाद और कृपा हो और रहे । ख्वाहिशे नफ्स–विषयवासना । नमूदार–प्रकट ।

७९ खामोशी-जैसी के तीन पर्दे

१ किसी आदमी की ताकत नहीं कि अल्लाह उससे बात करे। मगर वह्य के ज़रीये । या पर्दे के पीछे से । या कोई रसूल भेजे कि वह पहुँचाये अल्लाह के हुक्म से जो अल्लाह चाहे । यक़ीनन वह बुलंद मर्तबा और हिकमतवाला है ।

२ और इसी तरह हमने तेरी तरफ़ अपने हुक्म से वह्य भेजी । तू नहीं जानता था कि किताब क्या है, और ईमान क्या है। लेकिन हमने उसको एक ऐसी रोशनी बनायी जिसके ज़रीये अपने बंदों में से हम जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। और बेशक तू लोगों को सीधी राह दिखलाता है।—

३ उस अल्लाह की राह, जिसके लिए है, जो कुछ आस्मानों में है, और जो कुछ जमीन में है । खबरदार ! अल्लाह की तरफ़ सब काम रुजूअ होंगे । ४२ ५१–५३

८० एक रात हजार महीनों के बराबर है

१ हमने उसको (कुरआन को) लैलतुल्क़द्र (बरकत और महिमा की रात) में उतारा ।

२ और तुझे क्या जाना कि लैलतुल्क़द्र क्या है ?

३ फ़ज़ीलतवाली रात हजार महीनों से बेहतर है ।

४ उस रात में फ़िरिश्ते और रूह अपने परवरदिगार के हुक्म से हर काम के वास्ते उतरते हैं ।

५ सलामती और रहमत है वह रात फ़ज्र तुलूअ होने तक ।

९७ १–५

८१ वह्य के लिए जल्दी न कर

१ अल्लाह बुलंद मर्तबा है जो बादशाहे-हक़ीक़ी है । और तू कुरआन के साथ जल्दी न कर, जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो चुके । और कह, ऐ परवरदिगार ! मुझे इल्म में ज़्यादह कर । २० ११४

बुलंद मर्तबा—उच्चपदस्थ रूह—मेघ फ़ज्र—सवेरा हक़ीक़ी—यथार्थ ।

१० दुआ

११ दुआ

८२ सुपुर्दगी

१ आस्मानों और जमीन के पैदा करनेवाले ! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा सरपरस्त है। मुझे फ़रमाँबरदारी की हालत में बफ़ात दे। और मुझे नेक बंदों में शामिल कर।

१२ १०१

८३ शुक्रगुज़ारी

१ ऐ मेरे पर्वरदिगार ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी निअमतों का शुक्र करूँ। जो निअमतें तूने मुझे और मेरे माँ-बाप को अता कीं। और वह नेक काम करूँ जो तू पसंद करे। और मुझको अपनी रहमत से अपने नेक बंदों में दाख़िल कर दे।

२७ १९

८४ आफ़ात से पनाह

१ कह, मैं सुब्ह के पर्वरदिगार की पनाह लेता हूँ।
२ हर चीज़ की बदी से जो उसने बनायी।
३ और अंधियारी की बदी से जब कि वह छा जाये।
४ और उनकी बदी से, जो गिरहों में फूँकती हैं।
५ और हासिद की बदी से जब कि वह हसद करे।   ११३ १–५

८५ बुरे वसवसों से पनाह

१ कह, मैं पनाह माँगता हूँ, लोगों के पर्वरदिगार की।
२ लोगों के बादशाह की।
३ लोगों के माबूद की।
४ वसवसा डालनेवाले पीछे हट जानेवाले की बदी से।
५ जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है।
६ जिन्नों में हों या आदमियों में।   ११४ १–६

सुपुर्दगी—शरणता [illegible] सरपरस्त—नाथ, [illegible] फ़रमाँबरदारी—आज्ञापालन तौफ़ीक़—प्रेरणा आफ़ात—संकट हासिद—[illegible], [illegible] वसवसा—विकार।

३ मिवादत

११ जिबादत

२० हुक्मे-सलात

८६ सात अम्र

१ ऐ लिहाफ़ ओढ़नेवाले !
२ उठ । और लोगों को हुशयार कर ।
३ और अपने पर्वर्द्गार की बड़ाई बोल ।
४ और अपने नफ़्स को पाक रख ।
५ और गंदगी से अलग रह ।
६ ज़्यादह लेने की ग़रज़ से इहसान न कर ।
७ और पर्वर्द्गार के वास्ते सब्र कर । ७४ १—७

८७ सलात के लिए रात की अहमियत
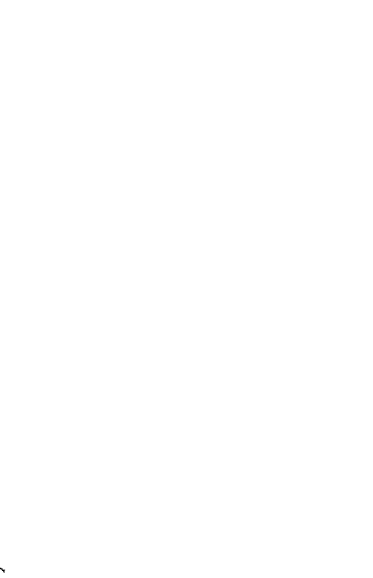
१ ऐ चादर में लिपटनेवाले
२ रात को उठकर, ख़िबादत कर । मगर थोड़ी देर ।
३ आधी रात । या उससे थोड़ा सा कम कर ले ।
४ या उससे ज़्यादह कर । और ठहेर-ठहेरकर साफ़ क़ुरआन पढ़ ।
५ बेशक हम तुम पर एक भारी बात डालनेवाले हैं ।
६ बिला शुबह रात को उठना नफ़्स के कुचलने में बहुत सख़्त है, और बात को सीधा करनेवाला है ।
७ बेशक तुझे दिन में बहुत काम रहता है ।
८ और अपने पर्वर्द्गार का नाम लेता रह । और सबसे अलग होकर, उसकी तरफ़ मुतवज्जे रह ।

अम्र–विधि आज्ञा लिहाफ़ ओढ़नेवाले–मुहम्मद (धर्मपुरुष) सब्र–धीरज अहमियत–महत्त्व मुतवज्जे रह–ध्यान दे ।

९ वह मशरिक और मग़रिब का मालिक है। उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं। सो उसीको अपना कारसाज़ बना ले।

१ और वह लोग जो कुछ कहते रहें, वह सहता रह। और खूब-सूरती के साथ उनको छोड़ दे। ७३ १-१०

८८ अल्लाह की याद मोऽद्बाना ख़ुशू में

१ जब क़ुर्आन पढ़ा जाय तो उसकी तरफ़ कान लगाओ और चुपके रहो। ताकि तुम पर रहम किया जाय।

२ और अपने पर्वरदिगार को अपने जिस में याद करता रह आजिज़ी और ख़ौफ़ के साथ। और कम आवाज़ से। सुबह और शाम। और ग़ाफ़िलों में से न हो जा।

३ बेशक जो तेरे रब के नज़दीक हैं, वह उसकी इबादत से तकब्बुर नहीं करते। और उसकी तस्बीह करते हैं। और उसको सज्दा करते हैं। ७ २ ४-२ ६

८९ अल्लाह कहो या रहमान

१ अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर। जो भी कहकर पुकारो सारे अच्छे नाम उसीके लिए हैं? और अपनी सलात बहुत बुलन्द आवाज़ से न पढ़ और न चुपके पढ़। उसके दर्मियान राह इख़्तियार कर। १७ ११०

९० इस्तिग़फ़ार कर

१ तू यह जान कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। और अपने गुनाह के वास्ते मुआफ़ी माँग। और ईमानवालों के लिए और ईमानवालियों के लिए भी। और अल्लाह तुम्हारे चलने-फिरने को जगह और तुम्हारा ठिकाना जानता है। ४७ १९

मशरिक़—पूर्व मग़रिब—पश्चिम मोऽद्बाना—विनीत, आजिज़ी—आजिज़ी—नम्रता ख़ौफ़—भय तकब्बुर—अहंकार बुलन्द—स्वर इस्तिग़फ़ार—क्षमा-याचना।

९१ अल्लाह की याद तिजारत और तमाशे से बेहतर

१ ऐ ईमानवालो ! जब नमाज के लिए जुमअ के दिन तुम्हें पुकारा जाय तो अल्लाह की याद को दौड़ो। और ख़रीद व फ़रोख्त छोड़ो। अगर तुम समझते तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है।

२ फिर जब नमाज पूरी की जाये तो जमीन में फैल जाओ। और अल्लाह का फ़ज़्ल ढूँढो। और अल्लाह को बहुत याद करो। ताकि तुम्हारा भला हो।

३ और (लोग) जब देखते हैं सौदा बिकता या तमाशा तो बिखर कर, उसकी तरफ दौड़ जाते हैं। और तुमको खड़ा छोड़ देते हैं। (उन्हें) कह, जो अल्लाह के पास है, वह तमाशे से और तिजारत से बेहतर है। और अल्लाह बेहतर रोजी पहुँचानेवाला है। ६२ ९-११

९२ अल्लाह का ज़िक्र अकबर है

१ जो किताब तेरी तरफ़ उतरी उसे पढ़। और सलात क़ायम रख। बेशक सलात बेहयाई और नामाक़ूल बातों से रोकती है। और अल्लाह की याद सबसे बड़ी है। और अल्लाह जानता है, जो कुछ तुम करते हो। २९.४५

९३ अल्लाह की याद से इतमीनाने-क़ल्ब

१ ख़ूब समझ लो कि अल्लाह की याद दिलों को शांति से भरपूर कर देती है। १३ २८

बेहयाई—निर्लज्जता नामा क़ूल—अयोग्य ज़िक्र—स्मरण मनन
इतमीनाने क़ल्ब—मनःशांति ।

२१ सारी कायनात अल्लाह की बंदगी करती है

९४ बादलों की गरज तस्बीह् करती है

१ बादलों की गरज अल्लाह की तारीफ़ के साथ उसकी तस्बीह् करती है। और सब फ़िरिश्ते उसके ख़ौफ़ से तस्बीह् व तह्मीद करते हैं। १३ १३

९५ परिंदे हम्द करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन में जो कोई है, और परिंदे पर खोले हुए, अल्लाह की तस्बीह् करते हैं। हरएक अपनी तरह् की नमाज़ और तस्बीह् जानता है। और अल्लाह जानता है, जो कुछ वह करते हैं। २४ ४१

९६ कायनात की तस्बीह् जो तुम नहीं समझते

१ सातों आस्मानों और ज़मीन और जो कोई उनमें है, उसकी तस्बीह् करते हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो तारीफ़ के साथ उसकी तस्बीह् न करती हो। लेकिन तुम उनकी तस्बीह् नहीं समझते। बेशक वह तह्मुलवाला बख़्शनेवाला है। १७ ४४

९७ साये सज्दा करते हैं

१ आस्मानों और ज़मीन में जो कोई है वह ख़ुशी-नाख़ुशी से अल्लाह को सज्दा करते हैं। और उनकी परछाइयाँ भी सुब्ह् व शाम सज्दा करती हैं। १३ १५

कायनात–सृष्टि तह्मीद–स्तुति तह्मुलवाला–सहनशील।

९८ कायनात का सज्दा

१ क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह ने जो चीज़ें भी पैदा की हैं, उनके साये दायें और बायें अल्लाह को सज्दा करते हुए ढलते हैं, और वह आजिज़ हैं।

२ और अल्लाह को सज्दा करते हैं जितने भी जानदार हैं आस्मानों और ज़मीन में और फ़रिश्ते। और वह तकब्बुर नहीं करते।

३ डर रखते हैं अपने पर्वरदिगार का जो उन पर बालादस्त है। और करते हैं, जो हुक्म पाते हैं। १६ ४८–५

९९ सारी कायनात और बहुत से इन्सान सज्दा करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि जो आस्मानों और ज़मीन में हैं, और सूरज और चाँद और तारे, और पहाड़ और दरख़्त और जानवर और आदमियों में से बहुत से लोग अल्लाह को सज्दा करते हैं। २२ १८

आजिज़—नम्र तकब्बुर—घमंड बालादस्त—वरिष्ठ।

२२ ईमान

१०० इस्लाम और ईमान

१ गँवार कहते हैं कि हम ईमान लाये। कह, तुम ईमान नहीं लाये। बल्कि तुम यह कहो कि हमने इताअत कबूल कर ली है। अभी तुम्हारे दिलों में ईमान दाखिल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह का और रसूल का हुक्म मानो तो अल्लाह तुम्हारे आमाल से ज़रा भी कम न करेगा। बेशक अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है।

२ मोमिन सिर्फ वही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाये फिर शक न किया और अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह की राह में जद्दो-जहद की वही लोग सच्चे हैं। ४९.१४, १५

१०१ तक़्वा ईमान और नेक काम का मुसल्सल

१ जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वह लोग जो खाते हैं उसमें गुनाह नहीं। जबकि वह तक़्वा इख्तियार करें और ईमान लायें और नेक काम करें। फिर तक़्वा इख्तियार करें और ईमान रखें। फिर तक़्वा इख्तियार करें और नेक अमल करें। और अल्लाह नेकी करनेवालों से मुहब्बत करता है। ५.९३

१०२ जीना अल्लाह के लिए, मरना अल्लाह के लिए

१ कह, बिलयक़ीन मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहाँ का रब है। ६.१६२

इस्लाम–शरणता ईमान–निष्ठा इताअत–शरणता तक़्वा–संयम मुहसिन–विनीत मोमिन–भक्त।

१०३ हम अल्लाह के रंग में रँगे हैं

१ रंग दिया हमको अल्लाह ने। और रंग देने में अल्लाह से बेहतर कौन है? और हम उसीके जिबादत-गुज़ार हैं। २ १३८

१०४ बाप को भी दोस्त न मानो, अगर वह मुनकिर हो

१ ऐ ईमानवालो! अपने बापों अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वह लोग ख़ुदा का इन्कार करने को ईमान के मुकाबले में अज़ीज़ रखें। और तुममें से जो लोग उनको दोस्त रखें वही गुनहगार हैं।

२ कह तुम्हारे बाप तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा कुम्बा और वह माल जो तुमने कमाये हैं और वह तिजारत जिसके मंदा पड़ जाने से तुम डरते हो और वह मकानात जिनको तुम पसंद करते हो अगर तुमको अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में लड़ने से ज्याद प्यारे हैं, तो तुम इन्तिज़ार करो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेजे। और अल्लाह बेहुक्मी करनेवालों को अपना रास्ता नहीं बतलाता। ६ २३ २४

१०५ अदब बड़ा उसकी इज़्ज़त बड़ी

१ बेशक अल्लाह के पास तुममें सबसे ज्याद. इज़्ज़त वाला वह है, जो तुममें सबसे ज्याद अदबवाला ही अल्लाह के साथ। और अल्लाह जाननेवाला ख़बरदार है। ४९ १३

मुनकिर-नास्तिक कुम्बा-घराना, परिवार माल-धन अदबवाला-नम्र विनीत।

१ ६ अल्लाह की मर्ज़ी के हवाले

१ और किसी चीज़ के बारे में हर्गिज़ यह न कहो, कि मैं कल यह करनेवाला हूँ।

२ मगर कहो, कि 'अगर अल्ला चाहे तो' १८ २३ २४

१ ७ भिमारत चट्टान पर, या धँसनेवाले कगार पर

१ क्या जिसने भिमारत की बुनियाद अल्लाह के डर और उसकी रज़ामंदी पर रखी वह बेहतर है? या वह, जिसने अपनी भिमारत की बुनियाद खोखला माटी के कगार पर रखी जो गिरने को ही है? फिर वह उसको लेकर, दोज़ख की आग में ढह पड़ी। ९ १ ९

२१ इसार और क़ुरबानी

१ ८ बहतरीन व्योपार

१ ऐ ईमानवालो! क्या मैं तुमको ऐसी तिजारत बतलाऊँ जो तुमको दर्दनाक अज़ाब से बचाये?

२ अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह की राह में जद्दो-जहद करो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम समझ रखते हो।

६१ १ -११

१ ९ सबसे बड़ा कार-सवाब

१ क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे-हराम के आबाद करने को उस शख्स के बराबर क़रार दिया जिसने अल्लाह पर और रोज़े-आख़िरत पर ए'तिक़ाद रखा और

ईसार और क़ुरबानी–त्याग एवं समर्पण मस्जिदे-हराम–पूज्य प्रार्थना-स्थल, मक्का की मस्जिद।

अल्लाह की राह में जद्दो–जहद की। यह अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह बेइन्साफ़ लोगों का रास्ता नहीं दिखाता।

२ सो जो ईमान लाये जिन्होंने घरबार छोड़ा और अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से लड़े वह अल्लाह के नज़दीक दर्जे में बहुत बड़े हैं। और वही लोग मुराद को पहुँचनेवाले हैं। ६ १६–२०

११० बेहतरीन ज़ख़ीरा

१ ऐ ईमानवालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जो मुनकिर हुए। और अपने भाइयों के बारे में जब कि वह लोग परदेस में सफ़र को निकले हों या लड़ते हों कहते हैं, कि अगर वह हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। ताकि अल्लाह उनके दिलों में इसको बाइसे-हसरत बना दे। और अल्लाह ही जिलाता है। और अल्लाह ही मारता है। और अल्लाह ही तुम्हारा सब काम देखता है।

२ और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की बख़्शिश और रहमत बेहतर है उस चीज़ से कि वह जमा करते हैं।

३ और अगर तुम मर गये या मारे गये तो बिलकुल अल्लाह ही के पास जमा किये जाओगे। ३ १५६–१५८

जद्दोजहद की–जूझा ज़ख़ीरा–संचय बाइस–कारण हसरत–पश्चात्ताप, बख़्शिश बिलकुल–अवश्यमेव।

१११ ज़मीन में हर जगह सहारा

१ जो अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा वह रूए-ज़मीन पर जाने की बहुत जगह और गुंजाइश पायेगा। और जो कोई अपने घर से हिजरत करके अल्लाह और रसूल की तरफ़ निकले फिर उसकी मौत आ जाये तो अल्लाह के ज़िम्मे उसका सवाब मुक़र्रर हो चुका और अल्लाह बड़ा मग़फ़िरत करनेवाला और बड़ा रहमतवाला है। ४ १००

११२ हुस्ने-सवाब

१ जिन्होंने वतन छोड़ा और जो अपने घरों से निकाले गये। और मेरी राह में सताये गये और लड़े और मारे गये तो ज़रूर उन लोगों की बुराइयाँ मैं दूर कर दूँगा। और उनको बाग़ों में दाखिल करूँगा जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं। यह बदला है अल्लाह की जानिब से। और अच्छा बदला तो अल्लाह ही के पास है। ३ १९५

११३ दोनों सूरतों में फ़ायदा

१ तो, हाँ! अल्लाह की राह में तो वह लोग लड़ें जो दुन्या की ज़िन्दगानी आख़िरत के बदले बेचते हैं। और जो कोई राहे-ख़ुदा में लड़े फिर मारा जाये या जीत ले तो दोनों सूरतों में हम उसको बड़ा सवाब देंगे। ४ ७४

रूए-ज़मीन–धरातल गुंजाइश–समाई जगह हिजरत–नेक काम के लिए वतन छोड़ना सवाब–प्रतिफल, पुण्य हुस्ने-सवाब–सद्गति पुण्य-फल दोनों सूरतों में–उभय पक्ष में।

११८ मदद का वादा

१ हमारे बंदों पैगंबरों के लिए हमारा यह कौल पहिले गुजर चुका है।—

२ कि बेशक उनको जरूर मदद दी जायेगी। ३७ १७१ १७२

११९ मदद करनेवालों की मदद होगी

१ ऐ ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा। और तुम्हारे पाँव जमा देगा। ४७ ७

१२० अल्लाह नजदीक है

१ जब मेरे बंदे तुमसे मेरे बारे में पूछें (तो कह दे) मैं नजदीक ही हूँ। पुकारनेवाले की पुकार का जवाब देता हूँ, जब कि वह मुझे पुकारता है। पस उनको चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लायें। ताकि वह नेक राह पर आयें। २ १८६

१२१ अल्लाह कुव्वते-इम्तियाज देगा

१ ऐ ईमानवालो! अगर अल्लाह का तक्वा इख्तियार करो तो वह तुम्हें तमीज देगा। और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर करेगा। और तुमको बख्शेगा। और अल्लाह बड़े फज्लवाला है। ८ २९

१२२ अल्लाह सकीनत उतारता है

१ वही है जिसने ईमानवालों के दिलों में तसकीन उतारी। ताकि उनको अपने ईमान के साथ ईमान और ज्यादा हो। ४८ ४

१२३ नजात हमारे जिम्मे

१ फिर हम अपने पैगंबरों और उन लोगों को जो ईमान

नेक राह—सन्मार्ग कुव्वते इम्तियाज—विवेकशक्ति तसकीन—शांति, अम्नोअमान नजात—मुक्ति।

लाये नजात देंगे। उसी तरह हमारा ज़िम्मा है, कि मोमिनों को बचा लें। १० १ ३

२५ सब्र चाहिए

१२४ निशानी के लिए जल्दी न करो

१ आदमी जल्दी के ख़मीर का बना है। अनक़रीब तुमको निशानियाँ दिखाऊँगा। पस तुम मुझसे जल्दी न करो। २१ ३७

१२५ चढ़ने में देर लगती है

१ फ़िरिश्ते और रूह उसकी तरफ़ एक दिन में चढ़ते हैं जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार बरस है।
२ पस सब्र कर। अच्छा सब्र कर। ७० ४ ५

१२६ ब-तद्रीज इर्तिक़ा

१ क़सम खाता हूँ शफ़क़ की।
२ और रात की। और उनकी जिनको वह समेट लेती है।
३ और चांद की जब वह पूरा हो जाये :—
४ कि तुम ज़रूर ज़ीना-ब-ज़ीना चढ़ोगे। ८४ १६ १९

सब्र—संयम मिक़्दार—संख्या फ़िरिश्ते—देवदूत रूह—जीव
ब-तद्रीज—क्रम से इर्तिक़ा—विकास ज़ीना-ब-ज़ीना—सीढ़ी-सीढ़ी से।

१२ नेक सुह्बत

२६ नेक सुह्बत

१२७ नबीं का साथ

१ जो अल्लाह का और उसके रसूल का कहा माने पस वह उ
लोगों के साथ है, कि जिन पर अल्लाह ने इन्आम किया है
यानी नबी और सिद्दिक़ और शहीद, और नेककार और य
लोग अच्छे साथी हैं।

२ यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़्ल है। और अल्लाह का
जाननेवाला है। ४ ६९-

१२८ नेकों से चिमटे रहो

१ अपने-आपको उनके साथ रोक रख जो अपने परवरदि
को सुब्ह व शाम पुकारते हैं। उसकी रज़ा चाहते हैं। अ
दुनयवी ज़िन्दगी की रौनक़ की चाह से तेरी आँखें उनसे फि
न जावें। १८

१२९ मुअल्लिम का तरीक़ए-तालीम

१ फिर (मूसा अलैहिस्सलाम ने) हमारे बन्दों में से एक बन्दे
पाया जिसको हमने अपने पास से रहमत अता की थी अ
अपने पास से उसको इल्म दिया था।

२ उससे मूसा ने कहा क्या मैं तेरे साथ रहूँ? इसलिए, कि
भली राह तुमको सिखायी गई है, वह तू मुझको सिखा दे।

नेक सुह्बत—सत्संगति नबी—सन्देश-वाहक सिद्दिक़—सत्य-निष्ठ शहीद—
सत्य के लिए जीवन न्योछावर करनेवाला, [illegible] नेककार—संत नेकी—सत्
रज़ा—प्रसन्नता, [illegible] मुअल्लिम—गुरु तरीक़ए तालीम—[illegible]

३ वह बोला। तू हरगिज़ मेरे साथ सब्र न कर सकेगा।
४ और तू क्योंकर सब्र करेगा ऐसी चीज़ के बारे में कि जो तेरी समझ के इहाते में नहीं है।
५ मूसा ने कहा। अगर अल्लाह ने चाहा तो ज़रूर तू मुझे सब्र करनेवाला पायेगा। और मैं तेरे किसी हुक्म को खिलाफ़-वर्ज़ी नहीं करूँगा।
६ वह बोला फिर अगर तू मेरी पैरवी करता है तो मुझसे किसी बात के बारे में कोई सवाल न करना जब तक मैं अपने-आप तेरे लिए उसके ज़िक्र की इब्तिदा न करूँ। १८ ६५–७०

१३० दुसूले-मिल्मे-दीन के लिए कुछ लोग पीछे रहें

१ मोमिनों के लिए मुनासिब नहीं कि सबके सब कूच कर जायें। उनकी हर जमामत में से एक हिस्सा क्यों न कूच करे, ताकि (बाक़ी लोग) दीन में समझ हासिल करें। और ताकि ये लोग अपनी क़ौम को जब कि वह लौटकर आयें होशियार करें ताकि वह बचें। ६ १२२

१३१ नेकोकारों की जमामत बनाओ

१ ऐ ईमानवालो! अल्लाह का तक़वा इख्तियार करो जैसा कि चाहिए। और ऐसी ही हालत में मरना कि तुम पूरी तरह अल्लाह के मुतीम् हो।

खिलाफ़-वर्ज़ी–विरोध इहाता–क्षेत्र नेकोकार–सज्जन जमामत समूह समाज मुतीम–मासाकारी।

२ और तुम सब इकट्ठा अल्लाह की रस्सी मज़बूत पकड़ो और मुतफ़र्रिक़ न हो जाओ। तुम्हारे ऊपर अल्लाह की जो निअ़मत है, उसे याद करो। कि जब तुम आपस में दुश्मन थे तो अल्लाह ने तुम्हारे दिल में उल्फ़त डाली और अब तुम उसकी निअ़मत से भाई भाई हो गये। और तुम आग के एक गढ़े के किनारे पर थे सो तुमको अल्लाह ने उससे नजात दी। इस तरह अल्लाह अपनी निशानियाँ तुम्हारे वास्ते बयान करता है। ताकि तुम राह पाओ।

३ और तुममें से एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए जो भलाई की तरफ़ बुलाती रहे, और अच्छे कामों का हुक्म करे और बुराई से मना' करे। यही लोग हैं जो मुराद पानेवाले हैं।

३ १०२–१ ४

१४२ परिन्दों की भी उम्मतें

१ ज़मीन में चलनेवाले जो भी जानवर हैं, और अपने दोनों बाज़ुओं से उड़नेवाले जो भी परिन्दे हैं, तुम्हारी ही तरह उम्मतें हैं।

६ ३८

मुतफ़र्रिक़—जुदा-जुदा। उल्फ़त—प्यार।

१३ दुनया से नाफ़रेफ़्तगी

२७ "यह दुनया फ़ानी जानी है" इसका इहसास

१३३ उजड़ा बाग

१ दुन्या की जिन्दगानी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आस्मान से पानी बरसाया। फिर उससे जमीन की नबातात जिसको आदमी और जानवर खाते हैं, खूब गुंजान होकर निकली। यहाँ तक कि जब उसने अपना सिंगार किया और खुशनुमा हुई, और जमीनवालों ने यह ख्याल किया कि यह फ़स्ल अब हमारे हाथ लगेगी नागाह उसपर हमारा हुक्म रात को या दिन को जा पहुँचा। फिर हमने उसको काटकर भूसी का ढेर कर डाला। गोया कि कल वहाँ वह मौजूद भी न थी। इस तरह हम निशानियों को मुफ़स्सिल बयान करते हैं उन लोगों के लिए, जो गौर करते हैं। १० २४

१३४ फ़स्ल पर पाला

१ लोग इस दुन्या की जिन्दगी में जो कुछ खर्च करते हैं, उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे एक हवा हो जिसमें पाला हो। वह हवा लग जाये ऐसे लोगों की खेती को कि जिन्होंने अपने हक में बुरा किया था। उस हवा ने उसे बर्बाद कर डाला। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया। बल्कि वह खुद ही अपने ऊपर जुल्म करते हैं। ३ ११७

नाफ़रेफ़्तगी–अनासक्ति इहसास–भावना नागाह–एकाएक मुफ़स्सिल–विस्तृत पाला–हिमवर्षा हक में–हित में।

१२५ दुनया को सबात नहीं

१ दुनया की जिन्दगी की मिसाल उनसे बयान कर। जैसे हमने आस्मान से पानी उतारा। फिर उससे ज़मीन की नबातात गुंजान हो गई। फिर वह ऐसा चूरा चूरा हो गई कि हवाएँ उसे उड़ाये फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।
२ माल और औलाद दुनया की जिन्दगानी की आरमाइश है। और बाक़ी रहनेवाली नेकियाँ तेरे परवर्दगार के नज़दीक सवाब में बेहतर हैं। और आरज़ू के लिहाज़ से भी बेहतर हैं।
१८ ६१ ४६

१२६ दुनया की रौनक आज़माइश के लिए

१ बेशक जो कुछ ज़मीन के ऊपर है, उसे हमने उसकी रौनक बनायी है। ताकि लोगों को आज़मायें कि उनमें से कौन अच्छा काम करता है।
१८ ७

१२७ दाइमी जिन्दगी का पट्टा किसीको नहीं

१ हमने तुमसे पहिले किसी आदमी के लिए हमेशा की जिन्दगी नहीं बनायी। फिर क्या अगर तू मर गया तो यह लोग हमेशा जिन्दा रहेंगे?
२ हर जी को मौत चखनी है। और हम तुमको बुरी और भली हालतों से खूब जानते हैं। और हमारे ही पास तुम लौटाये जाओगे।
२१ ३४ ३५

१२८ क्या तुम महफूज़ रहोगे?

१ क्या तुमको उन चीज़ों में जो यहाँ हैं, बेखटके छोड़ दिया जायेगा?
२ बागों में और इन चश्मों में?
३ और खेतों में और खजूरों में जिनके खोशे टूटे पड़ते हैं?
४ और तुम पहाड़ों में घर तराशते रहोगे इतराते हुए?
२६ १४६ १४९

सबात—स्थैर्य आज़माइश—आज़माना लिहाज़ से—दृष्टि से रौनक—शोभा महफूज़—सुरक्षित।

१३९ दुन्या की ज़िन्दगी महज़ दिल्बह्लाव

१ यह दुनया की जिन्दगी तो बजुज़ बहलाव और खेल के कुछ नहीं है। और हक़ीक़त में आख़िरत का घर ही ज़िन्दगी है। काश यह लोग जानते। २९ ६४

१४० तमन्नाओं के मौज़ूअ्

१ मरग़ूब चीज़ों की महब्बत ने लोगों को फ़रेफ़्ता किया है। जैसे औरतें बेटे सोने और चाँदी के जमा किये हुए ढेर, निशान लगे हुए घोड़े मवेशी और खेती। यह दुनयवी ज़िन्दगी की पूँजी है। और अल्लाह ही के पास अच्छा ठिकाना है। ३ १४

२८ गैर माद्दियत (वैराग)

१४१ ऐशो-आराम पर निगाह न डालो

१ और अपनी आँखें उन चीज़ों की तरफ़ न पसारो जो हमने उनमें से मुख़्तलिफ़ लोगों को दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ के तौर पर, फ़ायदा उठाने के लिए दे रखी हैं। ताकि उनको इनमें जाँचें। और तेरे परवरदिगार का रिज़्क़ बेहतर है। और बहुत बाक़ी रहनेवाला है। २० १३१

१४२ बीबी-बच्चों में बाज़ दुश्मन हो सकते हैं

१ अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। और ईमानवालों को चाहिए, कि अल्लाह ही पर तवक्कुल करें।

२ ऐ ईमानवालो! तुम्हारी बाज़ बीबियाँ और औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं। सो तुम उनसे बचो। और अगर उनको मुआफ़ करो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। ६४ १३ १४

तमन्नाओं के मौज़ूअ्–ख़्वाहिशात के विषय मरग़ूब–मनभावन देनेवाला फ़रेफ़्ता–आसक्त दरगुज़र करना–देखकर अनदेखा करना।

१४७ [illegible]

१ तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे लिए आजमाइश है। और अल्लाह ही के पास बड़ा सवाब है।

२ सो हस्बे इमकान अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। और सुनो और मानो। और उसकी राह में खर्च करो। इसमें तुम्हारा अपना भला है। जो कोई अपनी नफ़्सानी हिर्स से बचा लिया जाय तो वही लोग फ़लाह पानेवाले हैं। ६४ १५ १६

१४८ शैतान से होशियार

१ ऐ लोगो! यक़ीनन् अल्लाह का वादा सच्चा है। पस तुमको दुनियवी ज़िन्दगानी धोके में न डाले। और शैतान दग़ाबाज़ अल्लाह के बारे में तुमको हर्गिज़ दग़ा न दे।

२ बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है। सो तुम भी उसको दुश्मन समझो। वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है, कि वह दोज़ख़वालों में ही जावें। ३५ ५ ६

१४९ दोनों जहानों की खेती

१ जो कोई आख़िरत की खेती चाहता है, हम उसको खेती में ज्यादा देते हैं। और जो कोई दुनया की खेती चाहता है, उसको हम दुनया में से कुछ देते हैं। और उसके लिए आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं। ४२ २

मोमिन–विश्वासी हिर्स–लालच [illegible]

४ आबिद और मुल्हिद

१४ आबिद के सिफ़ात

२६ आबिद के पहलू

१४६ दस औसाफ़

१ इताअत-गुज़ार मर्द और इताअत-गुज़ार औरतें । और ईमान वाले मर्द और ईमानवाली औरतें । और फ़र्मांबर्दार मर्द और फ़र्मांबर्दार औरतें । और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें और सब्र करनेवाले मर्द और सब्र करनेवाली औरतें । आजज़ी करनेवाले मर्द और आजज़ी करनेवाली औरतें । सद्क़ा करनेवाले मर्द और सद्क़ा करनेवाली औरतें । रोज़ा रखनेवाले मर्द और रोज़ा रखनेवाली औरतें । और अपनी अस्मत की हिफ़ाज़त करनेवाले मर्द और अपनी अस्मत की हिफ़ाज़त करनेवाली औरतें । और अल्लाह को बहुत याद करनेवाले मर्द और अल्लाह को बहुत याद करनेवाली औरतें । इनके लिए अल्लाह ने अपनी बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है । ३३ ३५

३० ख़ुदा के परस्तार

१४७ रात में जागनेवाले

१ बेशक मुत्तक़ी बाग़ों और चश्मों में होंगे ।
२ लेते रहेंगे जो उनका परवरदिगार उनको देगा ।
वह इससे पहिले नेकी करनेवाले थे ।
३ वह रात को थोड़ा सोते थे ।
४ और जागकर, पिछली रात में गुनाहों की मुआफ़ी माँगते थे ।
५ और उनके मालों में माँगनेवालों का और नादारों का हक़ था ।
५१ १५-१९

औसाफ़—गुण लक्षण   इताअतगुज़ार—परायण   फ़र्मांबरदार—आज्ञाकारी दीन   रोज़ा—उपवास   इस्मत—चरित्र पवित्रता   परस्तार—उपासक ।

१४८ उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहें

१ हमारी आयतों को वही मानते हैं, कि जब उनको आयतों के जरिये समझाया जाता है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं। और अपने रब की तारीफ के साथ तस्बीह करते हैं। और तकब्बुर नहीं करते।

२ उनके पहलू बिछौने से जुदा रहते हैं। अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं। और हमारा दिया हुआ हमारी राह में खर्च करते हैं।

३ और कोई नहीं जानता कि उनके वास्ते उनकी आँखों की ठंडक पहुँचानेवाली क्या-क्या चीजें छुपाकर रखी गई हैं। यह सिला है उसका जो वह करते थे। ३२.१५–१७

१४९ पेशानी पर सज्दे

१ तू देखे उनको रुकूअ करते हुए, सज्दा करते हुए, अल्लाह का फ़ज्ल और उसकी रजामंदी तलाश करते हुए। उनकी सिमात उनकी पेशानियों पर सज्दे के असर से है। (और चेहरों पर खास किस्म का नूर और रौनक है)। यही है उनकी मिसाल तौरात में और यही है उनकी मिसाल इंजील में। जैसे कि खेती ने अपना अंखुआ निकाला। फिर उसको मजबूत किया। फिर मोटा हुआ। और अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया। कि किसानों को खुश करने लगा। ४८.२९

सिला–प्रतिफल, मुआविजा   रुकूअ–प्रणाम   सज्दा–अभिवादन
सिमात–पहचान   अंखुआ–अंकुर।

१५० करज़ते दिल

१ ईमानवाले वही हैं, कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो उसके दिल लरज़ जाते हैं। और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह आयतें उनका ईमान बढ़ा देती हैं। और वह अपने परवरदिगार पर ही भरोसा रखते हैं। ८ २

१५१ आजज़ी करनेवाले

१ खुशखबरी दे आजज़ी करनेवालों को

२ कि जिनके दिल लरज़ उठते हैं, जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है। और जो सब्र करनेवाले हैं मुसीबत पर, जो उन पर आती है। और जो सलात को क़ायम करनेवाले हैं। और जो हमारे दिये में से खर्च करते हैं। २२ ३४ ३५

१५२ रहमान के बंदे

१ बहुत बरकतवाला है वह, जिसने आस्मान में बुर्ज बनाये और उसमें एक चिराग़ और रोशन चाँद बनाया।

२ और वही है जिसने बदलते-बदलते रात और दिन बनाये। यह सब उनके वास्ते निशानात हैं, जो सोचना चाहते हैं, और शुक्र करना चाहते हैं।

३ और रहमान के बंदे वह हैं, जो ज़मीन पर आजज़ी से चलते हैं। और बेसमझ लोग उनको मुख़ातिब करते हैं, तो कहते हैं कि "सलाम है।

४ और जो लोग अपने परवरदिगार के आगे सज्दे में और क़ियाम में (खड़े) रात गुज़ारते हैं। २५ ६१-६४

लरज़ते हैं—काँपते हैं बुर्ज—राशि नक्षत्रमण्डल मुख़ातिब करना—बोलना।

२१ रासिखुल अक़ीदा

१५३ रज़ाजोई में जाँफ़रोशी

१ लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह की रज़ाजोई के लिए अपनी जान को बेचते हैं। और अल्लाह अपने बंदों पर शफ़क़त करनेवाला है। २ २०७

१५४ बाहमी दोस्त

१ बेशक जो लोग ईमान लाये और वतन छोड़ा और माल और जान से अल्लाह की राह में लड़े और जिन लोगों ने उन्हें जगह दी और मदद की यह लोग बाहम एक-दूसरे के दोस्त हैं। ८ ७२

१५५ अल्लाह के दोस्त (औलियाउ-अल्लाह)

१ याद रखो! जो अल्लाह के दोस्त हैं, उन पर न डर है, और न वह ग़मगीन होंगे।

२ यह वह लोग हैं, जो ईमानवाले हैं, और परहेज़गारी से रहते हैं।

३ उनके लिए दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में खुशख़बरी है। अल्लाह की बातों के लिए तब्दीली नहीं। यही बड़ी कामियाबी है। १ ६२–६४

१५६ अल्लाह का गिरोह

१ तू न पायेगा ऐसे लोगों को जो अल्लाह और योमे-आख़िरत पर ईमान रखते हों कि वह उन लोगों से दोस्ती रखते हों जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं। ख़्वाह, वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई, या उनके कुन्बे के लोग हों।

रासिखुल अक़ीदा—धर्मनिष्ठ जाँफ़रोशी—जान को बेचना शफ़क़त—ममता दयादृष्टि ग़मगीन—दुःखी खुशख़बरी—शुभवार्ता मुख़ालिफ़—विरुद्ध ख़्वाह—चाहे [illegible] गिरोह—मंडली

यही लोग हैं, जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है। और जिनकी अपने फ़ैज़ से मदद की है। और वह उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वह उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी। यह लोग अल्लाह के गिरोह हैं। ख़ूब सुन लो कि अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह पानेवाला है। ५८ २२

१२ साबिर

(५७ मुहम्मिल

१ ऐ ईमानवालो। कठिनाई में सब्र और सलात से मदद चाहो। बेशक अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है।

२ और जो अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, उनको मरा हुआ मत कहो। वह तो ज़िन्दा हैं। लेकिन तुम नहीं समझते।

३ और हम तुमको ज़रूर आज़मायेंगे। किसी क़दर डर और भूक से और मालों और जानों और फलों के नुक़्सान से। और खुशख़बरी दे सब्र करनेवालों को।

४ कि जब उनको मुसीबत पहुँचे तो कहें हम तो अल्लाह के हैं। और हम उसी तरफ लौट जानेवाले हैं।

५ ऐसे लोगों पर उनके परवरदिगार की जानिब से इनायतें हैं और रहमत है। और यही लोग सहीह राह पर हैं। २ १५५-१५७

साबिर, मुहम्मिल—धीर भिक्षाप्त—कृपा।

११ अहिंसा पर्व (क्रमागत)

१५८ मुआफ करनेवाले

१ अपने परवरदिगार की बख्शिश की तरफ दौड़ो। और जन्नत की तरफ जिसकी वुसअत आस्मान और ज़मीन है। जो तय्यार की गई है, मुत्तक़ियों के लिए।

२ जो खुशहाली और तंगी में अल्लाह की राह में खर्च करते हैं। और गुस्सा पी जानेवाले हैं। और लोगों से दरगुज़र करनेवाले हैं। और अल्लाह नेकी करनेवालों को महबूब रखता है।—

३ और उन लोगों को जो जब बेहयाई का काम करते हैं, या अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं, तो उन्हें अल्लाह याद आता है। पस अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगते हैं। और अल्लाह के सिवा कौन है, जो गुनाहों को बख्शे। और जानते बूझते वह अपने किये पर इसरार नहीं करते।

४ यही लोग हैं, जिनकी जज़ा उनके रब की तरफ से बख्शिश है। और बागात जिनके नीचे नहरें बहती हैं। यह लोग हमेशा उनमें रहेंगे। अमल करनेवालों का यह क्या खूब अज्र है।

३ १३३–१३६

१५९ सखी

१ यह अल्लाह की महब्बत पर, मुहताज और यतीम और कैदी को खाना खिलाते हैं।

२ महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए खिलाते हैं। (कहते हैं) हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं न शुक्रगुज़ारी।

वुसअत–व्याप सखी–उदार शुक्रगुज़ारी–कृतज्ञता, [illegible] महज़–केवल यतीम–अनाथ।

३ हम अपने रब से ख़ौफ़ रखते हैं, एक मुँह बनानेवाले और त्यौरी चढ़ानेवाले दिन का।

४ फिर अल्लाह ने उनको उस दिन की बुराई से बचा लिया। और उनको ताज़गी और ख़ुशी से मिला दिया। ७६ ८ ११

१६० बाहमी मशवरे से काम करनेवाले

१ और जो लोग गुनाहों और बेहूदाई के कामों से बचते हैं। और जब उन्हें ग़ुस्सा आता है तो मुआफ़ कर देते हैं।

२ और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार का हुक्म माना और सलात क़ायम की। और उनका काम बाहमी मशवरे से होता है। और हमारे दिये में से हमारी राह में ख़र्च करते हैं। ४२ ३७-३८

१६१ जोड़नेवाले

१ और वह लोग जो जोड़ते हैं उसको जिसके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। और अपने रब से डरते हैं। और बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं।

२ अपने परवरदिगार की रज़ा चाहने के लिए सब्र करते हैं। और सलात को क़ायम करते हैं। और हमने जो उन्हें दिया है उसमें से हमारी राह में ज़ाहिर और पोशीदा ख़र्च करते हैं। और नेकी से बदी को दूर करते हैं। यही लोग हैं, जिनके लिए नेक अंजाम है। १३ २१ २२

१४ आबिदों को मुबारकबाद

१६२ शैतान का बस किन लोगों पर नहीं

१ बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा (शैतान का) ज़रा भी बस नहीं चलेगा। मगर गुमराहों में जो तेरी राह चलें।

१५.४२

त्यौरी–भ्रुकुटि अंजाम–अन्त मुबारकबाद–अभिनंदन बिहिश्त–स्वर्ग दोज़ख़–नरक।

१५ मुलहिदों की ख़ुसूसियात

१५ बेयक़ीन

१६४ उनके दिल पत्थर से ज़्यादह सख़्त

१ इस पर भी (अल्लाह की निशानियाँ देखने के बाद भी) फिर तुम्हारे दिल पत्थर के मानिंद हो गये। या उससे ज़्यादा सख़्त। और बाज़ पत्थरों में तो ऐसे भी हैं, जिनसे चश्मे फूट निकलते हैं। और उनमें से बाज़ ऐसे हैं, जो फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलता है। और उनमें से ऐसे भी हैं कि अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। २७४

१६५ बेएतिक़ादी की इन्तिहा

१ अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें और वह दिनदहाड़े उसमें चढ़ने लगें

२ तब भी कहेंगे कि हमारी नज़र बाँध दी गयी है। बल्कि हम लोगों पर तो जादू कर दिया गया है। १५.१४ १५

१६६ मुतकब्बिर

१ उसने सोचा। और अटकल लगाई।

२ उस पर ख़ुदा की मार हो। कैसी अटकल दौड़ाई।

३ फिर ख़ुदा की मार हो। कैसी अटकल दौड़ाई।

४ फिर ग़ौर किया।

५ फिर त्यौरी चढ़ाई। और मुँह बनाया।

मुल्हिद–ममक्ष नास्तिक ख़ुसूसियात–वैशिष्ट्य बेयक़ीन–निश्चयहीन विश्वासहीन बाज़ई–वस्तुतः मुतकब्बिर–निरभिमानी अभिमानिन्।

६ फिर पीठ फेरी। और तकब्बुर किया।

७ फिर बोला 'यह तो जादू है, जो चला आता है' ७४ १८-२४

१५७ मुअ्जिज़े के तालिब

१ वह बोले हम तेरा कहा हरगिज़ न मानेंगे। जब तक तू हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा न जारी कर दे।

२ या तेरे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो। फिर उसके बीच-बीच में नहरें जारी कर दे।

३ या तू हम पर आस्मान टुकड़े-टुकड़े करके गिरा दे जैसे कि तू कहा करता है। या अल्लाह या फ़िरिश्तों को सामने ला।

४ या तेरे लिए सोने का बना एक घर हो। या तू आस्मान पर चढ़ जाए। और तेरे चढ़ने का भी हम हरगिज़ यक़ीन न करेंगे जब तक कि तू एक किताब उतार न लाये कि जिसे हम पढ़ें। तू कह, पाक है मेरा रब। मैं तो सिर्फ़ इन्सान हूँ। पैग़ाम पहुँचानेवाला। १७ ९०-९३

१५८ कठहुज्जती और मुनाफ़िक़

१ बाज़ लोग ऐसे होते हैं, कि वह अल्लाह के बारे में झगड़ते रहते हैं। बग़ैर जाने। बग़ैर हिदायत। और बग़ैर ऐसी किताब के जो रौशनी दे।—

२ तकब्बुर के साथ। ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करें। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में रुस्वाई है। और हम उनको क़ियामत के दिन भी आग की सज़ा चखायेंगे।

मुअ्जिज़ा—चमत्कार कठहुज्जती—विवादवादी मुनाफ़िक़—[illegible] तथाकथित भक्त रुस्वाई—दुर्गति।

३ और बा'ज लोग ऐसे होते हैं, कि किनारे पर अल्लाह की बन्दगी करते हैं। फिर अगर उनको नफ़ा पहुँचा तो उस भिबादत पर क़ायम हो गये। और अगर उन पर कोई आज़माइश आ पड़ी तो उलटे मुँह फिर गये। उन्होंने दुन्या और आख़िरत दोनों गँवाई। यही सरीह घाटा है। २२ ८ ९,११

१६९ मुनाफ़िक़ीन की मिसाल

१ उनकी मिसाल उस शख़्स की-सी है, जिसने आग जलाई। फिर जब आग ने उसके आसपास को रौशन किया तो अल्लाह उनकी रौशनी ले गया। और उनको अँधेरों में छोड़ दिया कि वह कुछ नहीं देखते।

२ बहरे हैं, गूँगे हैं अंधे हैं। पस वह नहीं पलटेंगे।

३ या उनकी मिसाल ऐसी है, जैसे आस्मान से ज़ोर से बारिश हो रही हो। उसमें अँधेरे हैं। और बादलों की गरज। और बिजली की चमक है। वह कड़क के मारे, मौत के डर से अपने कानों में उँगलियाँ ठूँस लेते हैं। और अल्लाह मुनकिरों को घेरे हुए है।

४ क़रीब है, कि बिजली उनकी निगाहें उचक ले जाये। जब वह उन पर चमकती है, तो उसकी रौशनी में चलने लगते हैं। और जब उन पर अँधेरा करती है, तो खड़े हो जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे, तो उनकी समाअत और बसारत ले जाय। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। २ १७—२०

सरीह—खुला, स्पष्ट समाअत—श्रवणशक्ति बसारत—दृष्टि।

११ दूसरी फ़ाहमियतफ़ास

१७० आसूदा लोग नहीं मानते

१ हमने किसी बस्ती में कोई ख़बरदार करनेवाला नहीं भेजा मगर वहाँ के आसूदा लोगों ने कहा। जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसको हम नहीं मानते।

२ और उन्होंने कहा। हम ज़्यादा माल और ज़्यादा औलादवाले हैं। और हमको कभी अज़ाब न होगा। ३४ ३४ ३५

१७१ मुनाफ़िक़ों के नज़दीक ईमान लाना हिमाक़त है

१ जब उनसे कहा जाता है के ईमान लाओ जिस तरह और लोग ईमान लाये। तो कहते हैं क्या हम ईमान लायें जिस तरह बेवक़ूफ़ ईमान लाये। जान लो! हक़ीक़त में वही बेवक़ूफ़ हैं। लेकिन जानते नहीं। २ १३

१७२ नफ़्स-परस्त और दहरिये

१ क्या तूने देखा उस शख़्स को जिसने अपनी ख़्वाहिशे-नफ़्सानी को अपना मा'बूद बना रखा है। और अल्लाह ने उसको बावजूद समझबूझ के गुमराह कर दिया है। और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी। और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है। फिर उसे अल्लाह के सिवा कौन राह पर लाये। तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते।

उलटा फ़ाहमियतफ़ासे—विपरीत बुद्धि आसूदा—धनवान् नफ़्स-परस्त—कामवासी दहरिये—नास्तिक गुमराह—मार्गभ्रष्ट आसूदा—धनवान्।

२ और वह कहते हैं, कि बजुज़ हमारी इस दुनयवी ज़िन्दगी के और कुछ नहीं। हम मरते हैं और हम जीते हैं। और नहीं हलाक करता हमको मगर ज़माना। ४५ २३ २४

१७३ "ख़ुदा जिन्हें नहीं देता, तो हम क्यों दें ?"

१ और जब उनसे कहा जाता है, कि अल्लाह ने जो कुछ तुमको दिया है, उसमें से उसके रास्ते में ख़र्च करो। तो मुन्किर ईमानवालों से कहते हैं कि क्या हम ऐसों को खिलायें कि जिन्हें अल्लाह चाहता तो खिला देता। तुम लोग तो सरीह गुमराही में हो। ३६ ४७

१७४ ईमानवालों को सतानेवाले

१ बेशक जिन्होंने ईमानवाले मर्दों को और ईमानवाली औरतों को ईज़ा दी फिर तौबः न की उनके वास्ते दोज़ख़ का अज़ाब है। और उनके लिए जलने का अज़ाब है। ८५.१०

१७५ अंजानों से बुरे बर्ताव को अच्छा समझनेवाले

१ अहले-किताब में बा'ज़ ऐसे हैं, कि अगर तू उनके पास माल का ढेर अमानत रखे तो वह तुझको वापस अदा कर दें। और बा'ज़ उनमें ऐसे हैं, कि अगर तू उनके पास एक दीनार अमानत रखे तो वह तुझे वापस न करें जब तक कि तू उनके सर पर सवार न हो। इसलिए, कि उनका कहना है, कि अनपढ़ लोगों के मुआमले में हम पर कोई गुनाह नहीं। और वह अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं। और वे जानते हैं। ३ ७५

ईज़ा—कष्ट।

३७ मुनकिरों के आ'माल अकारथ

१७६ उनका किया-धरा सब राख

१ जो लोग अपने परवरदिगार से मुनकिर हुए, उनके आ'माल की मिसाल उस राख की-सी है, जिसे एक तूफ़ानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो। वह कुछ न पायेंगे उसमें से जो उन्होंने कमाया। यही है दूर की गुमराही। १४ १८

१७७ मज़बूत पनाहगाहें काम न आयीं

१ बेशक हिज्रवालों ने रसूलों को झुठलाया।

२ और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं। तो वह उनसे मुँह फेरे रहे।

३ और वह इत्मीनान के साथ पहाड़ों में घर तराशते रहे।

४ तो सुबह होते ज़बर्दस्त धमाके ने उन्हें आ पकड़ा।

५ सो उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई। १५ ८ ८४

१७८ जिन-जिनके आ'माल ग़ारत

१ कह, क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बर दें, जो आ'माल के लिहाज़ से बहुत घाटे में हैं।

२ यह वह लोग हैं जिनकी सारी दौड़-धूप दुनिया की ज़िन्दगानी में खो गयी। और वह इसी ख़्याल में हैं, कि वह ख़ूब काम कर रहे हैं।

३ यही लोग हैं, जिन्होंने अपने परवरदिगार की निशानियों का और उसके मिलने का इन्कार किया। पस इनका किया-धरा सब ग़ारत हुआ। पस हम उनके वास्ते क़ियामत के दिन कोई वज़न क़ायम न करेंगे। १८ १ ३-१ ५

पनाहगाह—संरक्षण-स्थल पुख़्ता—मज़बूत।

१७९ बेअमल की तमसील गधे से

१ जिन पर किताब-तौरेत-लादी गयी फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया उनकी मिसाल गधे जैसी है, कि पीठ पर किताबें लादे हुए है। ६२ ५

१८ बुरा अंजाम

१८० बुलंदी से गिरना

१ जिसने अल्लाह का शरीक बनाया तो वह गोया आस्मान से गिरा। फिर उसको परिंदे उचक ले जाते हैं। या हवा उसको किसी दूर मक़ाम में फेंक देती है। २२ ३१

१८१ शैतान बुरा साथी

१ जो कोई अल्लाह की याद से मुँह मोड़ता है, उसके वास्ते हम एक शैतान मुक़र्रर करते हैं। पस वह उसका साथी बन जाता है।

२ और वह उनको राह से रोकते रहते हैं। और यह लोग इसी ख्याल में रहते हैं, कि हम राह पर हैं।

३ यहाँ तक कि जब हमारे पास आयेगा तो (शैतान से) कहेगा, काश! मेरे और तेरे दर्मियान मश्रिक और मग़्रिब की दूरी होती। क्या बुरा साथी है। ४३ ३६ ३८

१८२ शैतान किस पर सवार होता है ?

१ क्या तुमको बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।

२ वह उतरते हैं हर झूठे गुनाहगार पर।

३ जो (आस्मान की तरफ़) कान लगाते हैं। और अक्सर उनमें झूठे हैं।

बेअमल-अनाचारी तम्सील-दृष्टांत पीता-पानी।

४ और शाइर लोग तो उनकी पैरवी तो रास्ते से भटके हुए लोग करते हैं।

५ क्या तूने देखा नहीं कि वह हर मैदान में सर मारते फिरते हैं।

६ और यह, कि वह जो कुछ कहते हैं वह करते नहीं।

२६ २२१-२२६

१८३ हमारे क़सूर

१ (जन्नती दोज़ख़ियों से पूछेंगे) क्या चीज़ तुम्हें दोज़ख़ में ले गयी?

२ वह कहेंगे—हम सलात करनेवालों में से न थे।

३ हम मुहताज को खाना नहीं खिलाते थे।

४ और बकवासियों के साथ मिलकर, हम बकवास करते थे।

५ और हम जज़ा के दिन को झूठ क़रार दिया करते थे।

६ यहाँ तक कि हमें मौत आ गयी। ७४ ४२ ४७

१८४ ख़राबी है झुठलानेवालों के लिए

१ ख़राबी है उस दिन झुठलानेवालों के लिए।

२ क्या हमने पहिलों को हलाक नहीं किया।

३ फिर हम पिछलों को भी उनके साथ कर देंगे।

४ हम गुनाहगारों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।

५ तबाही है उस दिन झुठलानेवालों के लिए। ७७ १५ १९

१८५ काश! मैं ख़ाक होता!

१ ऐ लोगो बेशक हमने तुमको एक क़रीबी अज़ाब से होशियार कर दिया। जिस दिन हर आदमी अपने किये हुए आ'माल को देखेगा और काफ़िर कहेगा काश! मैं मिट्टी होता! ७८ ४

हलाक करना—नष्ट करना तबाही—सत्यानाश अज़ाब—सज़ा।

५ इ'तिकादे-दीन

१६ इ'त्तिफ़ादे-दीन

३६ दीन के उसूल

१८६ दीन का निचोड़

१ मज़्हबियत यह नहीं कि तुम अपना मुँह मशिरक़ की तरफ़ करो या मग़रिब की तरफ़। बल्कि मज़्हबियत यह है, कि कोई शख़्स ईमान रखे अल्लाह पर, और योमे-आख़िर पर, और फ़रिश्तों पर, और अल्लाह की किताबों पर, और पैग़म्बरों पर। और अल्लाह की मुहब्बत में माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को और माँगनेवालों का और किसीकी गर्दन छुड़ाने में। और सलात क़ायम करे। और ज़कात दे। और वह लोग जब अह्द करें तो अपने अह्द को पूरा करें। और तंगी मुसीबत और आफ़त के वक़्त सब्र करें। ये हैं रास्तबाज़ लोग। और यही मुत्तक़ी हैं। २ १७७

१८७ दीन का रास्ता

१ पस जिस तरह तुमको हुक्म हुआ है साबित क़दम रह। और तेरे साथ वह भी साबित क़दम रहें, जो ताइब हुए। और हद से न बढ़ो। बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखता है।

२ और उन लोगों की तरफ़ माइल न होना जिन्होंने ज़ुल्म किया। वरना आग की लपेट में आ जाओगे। अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई वली और सरपरस्त नहीं। फिर तुम्हारी मदद न की जायगी।

इ'त्तिफ़ादे-दीन—धर्मचर्चा गर्दन छुड़ाना—गुलाम को मुक्त करना रास्तबाज़—सच्चे ताइब—पछतेगा, टाँबा।

३ और नमाज़ कायम करो दिन के दोनों सिरे पर और कुछ रात गुज़रने पर। बेशक नेकियाँ बुराइयों को दूर करती हैं। यह एक याददेहानी है उन लोगों के लिए, जो अल्लाह को याद रखते हैं।

४ और सब्र कर। बेशक अल्लाह नेकी करनेवालों की उजरत जाये' नहीं करता। ११ ११२ ११५

१८८ अल्लाह की फ़ित्रत पर चलना ही दीन है

१ अपना रुख सीधा कर लो दीन के लिए यकसू होकर। अल्लाह की फ़ित्रत को इख़्तियार करो जिस पर उसने इन्सान को पैदा किया। अल्लाह की बनावट में कोई तब्दीली नहीं। यही सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। ३ ३

१८९ इस्लाम का अक़ीदा

१ जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, वह सब अल्लाह ही का है। और तुम अपनी दिल की बात ज़ाहिर करो या छुपाओ अल्लाह तुमसे इसका हिसाब लेगा। फिर जिसको चाहे बख़्शे। और जिसको चाहे, अज़ाब दे। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

२ यह रसूल इस पर ईमान लाया जो उसके परवरदिगार की तरफ़ से उस पर उतरा। और मोमिनीन भी ईमान लाये। हरएक ईमान लाया अल्लाह पर फ़िरिश्तों पर, किताबों पर और सब रसूलों पर। उनका कौल है, कि हम रसूलों में से किसीमें कोई फ़रक नहीं करते। हमने सुना और हमने माना।

याददेहानी—स्मरण देना   जाये—व्यर्थ नष्ट समाप्त   अक़्मल की फ़ित्रत—ईश्वरनिर्मित स्वभाव   अक़ीदा—निष्ठा।

ऐ हमारे परवरदिगार ! हम तेरी बख्शिश के तालिब हैं। और हमें तेरी ही तरफ लौटकर जाना है।

३ अल्लाह किसी शख्स पर जिम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी वुसअत भर। जिसने जो कुछ कमाया (उसका अज्र) उसके लिए है। और जिसने जो करतूत किया (उसका वबाल) उसी के लिए है। ऐ हमारे परवरदिगार! हमारी गिरिफ्त न कर, अगर हमसे भूल हो जाए या कुसूर हो जाए। ऐ हमारे रब! हम पर ऐसा बोझ न डाल जो तूने पहिले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर वह भार न डाल जिसकी हमें ताकत नहीं। और हमसे दरगुज़र कर। और हमको बख्श। और हम पर रहम कर। तू ही हमारा मौला है। मुनकिरों पर हमारी मदद कर। २ २८४ २८६

१९० अल्लाह की इताअत ही दीन है

१ क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा कुछ और चाहते हैं। हालाँकि आस्मान और ज़मीन की सारी चीजें चार व नाचार, अल्लाह ही के ताबिअ-फरमाँ हैं। और उसीकी तरफ सब लौटाये जायँगे। ३ ८३

१९१ मजबूत सहारा

१ जो कोई शख्स अपना रुख अल्लाह के ताबिअ करे तो बेशक उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। और अल्लाह की तरफ हर काम का अंजाम है। ३१ २२

वुसअत—व्याप शक्ति वबाल—दुःख, कष्ट भार—बोझ मौला—स्वामी, मित्र इताअत—दासता अंजाम—परिणाम।

५० मज़हबी रवादारी

१९२ दीन में ज़बरदस्ती नहीं

१ दीन के मुआमले में ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है। बेशक हिदायत गुमराही से अलग ज़ाहेर हो गयी है। अब जो कोई गुमराह करनेवाले ताग़ूत का इनकार करे, अल्लाह पर ईमान लाए, तो उसने मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। और अल्लाह सुननेवाला और जाननेवाला है। २.२५६

१९३ तमाम पैग़म्बरों पर ईमान

१ जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं, और अल्लाह और उसके रसूलों के दर्मियान तफ़रीक़ करना चाहते हैं, और कहते हैं, कि हम किसीको मानेंगे और किसीको न मानेंगे और उसके बीच में एक राह निकालने का इरादा रखते हैं

२ हक़ीक़तन् यही लोग मुन्किर हैं। और हमने मुन्किरों के लिए ज़लीलो-ख़्वार कर देनेवाली सज़ा तयार रखी है।

३ और जो लोग अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाये और रसूलों में फ़र्क़ नहीं किया उनको हम ज़रूर अज्र अता करेंगे। और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। ४.१५०-१५२

१९४ ईमानवाले सब एक उम्मत हैं

१ बेशक यह है तुम्हारी उम्मत वाहिद उम्मत। और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ। पस मुझसे डरो।

२ फिर लोगों ने अपने दीन को अपने दर्मियान काटकर, टुकड़े टुकड़े कर लिया। हर गिरोह मगन है उसमें जो उसके पास है। २३ ५२ ५३

रवादारी—सहिष्णुता तफ़रीक़—भेद ख़्वार—अपमानित अता करना—देना मज़हबी—धार्मिक दीन—धर्म।

१९५ मोमिनों को अपने से दूर न करो

१ जो लोग अपने परवरदिगार को सुबह और शाम पुकारते हैं और उसकी रज़ा चाहते हैं, उनको दूर न कर। उनके हिसाब में से तुम पर कुछ नहीं है। और न तेरे हिसाब में से उन पर कुछ है, कि तू उनको दूर करे। फिर ज़ालिमों में तेरा शुमार होगा। ६ ५२

१९६ किसीके मा'बूद को बुरा न कहो

१ यह लोग अल्लाह के सिवा जिनकी परस्तिश करते हैं, तुम उनको बुरा न कहो। कि वह हद से गुज़र कर बेसमझे अल्लाह को बुरा कहने लगेंगे। ६ १०८

१९७ भलाई में सबक़त करो

१ तुममें से हरएक के लिए हमने एक तरीक़ा और एक राह बनायी। और अगर अल्लाह चाहता तो तुमको ज़रूर एक जमाअत बनाता। लेकिन् उसने तुमको जो कुछ दिया है, उससे तुम्हें वह आज़माता है। इसलिए नेकियों में तुम एक-दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। अल्लाह ही के पास तुम सबको पहुँचना है। फिर जिस बात में तुम इख़्तेलाफ़ करते हो उस बारे में वह तुम्हें हक़ीक़त बता देगा। ५ ४१

१९८ बहस में मुनासिब तरीक़े से बहस करो

१ तुम अहले-किताब से सिर्फ़ इस तरीक़ा से मुबाहसा करो जो अहसन तरीक़ा है बजुज़ उन लोगों के जो उनमें ज़ालिम हैं। और कहो जो हम पर उतरा और जो तुम पर उतरा उस पर हम ईमान रखते हैं। और हमारा मा'बूद और तुम्हारा मा'बूद एक ही है। और हम उसके मुतीअ हैं। २९ ४६

मुबाहसा—मुनाज़रा अहसन—अच्छा।

१९९ तुम्हारा और हमारा रब एक ही है

१ बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है। पस उसकी बंदगी करो। यह सीधी राह है। ४३ ६४

२०० पूरब-पच्छिम-अल्लाह के पास सब बराबर हैं

१ और मश्रिक व मग्रिब सब अल्लाह ही के हैं। पस तुम जिस तरफ मुँह करो उसी तरफ अल्लाह का रुख (जात) है। बेशक अल्लाह बहुत गुंजाइशवाला और जाननेवाला है। २ ११५

२०१ बहिश्त किसी की मीरास नहीं

१ वह कहते हैं, यहूदी और ईसाई के सिवा और कोई हरगिज जन्नत में नहीं जायगा। यह तो उन लोगों की तमन्नाएँ हैं। कह, अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ।

२ क्यों नहीं जिसने अपनी हस्ती अल्लाह की इताअत में सौंप दी। और वह नेकी करनेवाला है तो उसके लिए उसका अज्र है उसके परवरदिगार के पास। न उनको कोई डर है, और न वह कभी गमगीन होंगे। २ १११ ११२

४१ दीन के अरकान

२०२ इबादत, नमाज़, ज़कात

१ और उनको यही हुक्म दिया गया कि उसकी बंदगी करें। दीन को उसीके लिए खालिस करते हुए, यकसू होकर। और नमाज कायम करें। और ज़कात अदा करें। और यह सीधा दीन है। ९८ ५

तमन्नाएँ—आकांक्षाएँ, मन के लड्डू अर्कान—विधि स्तम्भ।

२०३ पाँच नमाजें

१ वह जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र कर। और अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ उसकी तस्बीह कर। सूरज निकलने से पहिले और उसके डूबने से पहिले। और तस्बीह किया कर रात की कुछ घड़ियों में और दिन के दोनों किनारों पर। ताकि तू राज़ी हो। २० १३

२०४ खाने में अल्लाह का नाम

१ पस अगर तुम लोग अल्लाह की निशानियों पर ईमान रखते हो तो जिस पर अल्लाह का नाम जिकर किया गया हो उसमें से खाओ

२ और उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम जिकर न किया गया हो । ६ ११८ १२१

२०५ रोज़ा (सौम)

१ ऐ ईमानवालो। तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया है। जैसे इन लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था जो तुमसे पहिले थे। ताकि तुम परहेज़गारी इख्तियार करो।

२ चंद गिन्ती के रोज़ (रोजे रखो)। फिर तुममें से जो कोई बीमार हो तो दूसरे दिनों में गिन्ती (पूरी करे)। और जो लोग ताक़त रखते हैं, उन पर फ़र्ज़ है एक मिस्कीन को खाना खिलाना। फिर जो कोई ज़्यादह नेकी करे तो वह उसके वास्ते अच्छा है। और अगर तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो। २ १८३ १८४

२०६ हज

१ और हज और उमरः को अल्लाह के वास्ते पूरा करो। फिर अगर तुम (कहीं) घिर जाओ तो जो क़ुर्बानी मुयस्सर आये पेश करो

२ हज में शहवत की कोई बात कोई गुनाह, और कोई झगड़ा न हो । २ १९६ १९७

६ अख़्लाक

१७ हक़

४२ हक़ और बातिल की तमीज़

२०७ अक़्ल और जहालत में फ़र्क़

१ अंधा और देखनेवाला बराबर नहीं।
२ और न अंधेरा और न रोशनी।
३ और न साया और न धूप।
४ और नहीं बराबर होते जिन्दे और मुर्दे । ३५.१९–२२

२०८ पानी और झाग की मिसाल

१ उसने आस्मान से पानी उतारा। फिर अपनी मिक़्दार के मुवाफ़िक़ नाले बहने लगे। फिर वह सैलाब फूला हुआ झाग ऊपर ले आया। और उस चीज़ पर भी वैसा ही झाग होता है, जिसको जेवर या सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं। इस तरह अल्लाह हक़ और बातिल की मिसाल बयान करता है। पस जो कि झाग है वह सूखकर उड़ जाता है। और उसमें से जो चीज़ लोगों के काम आती है, सो ज़मीन में बाक़ी रह जाती है। इस तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। १३ १७

२०९ सच और झूठ को मत मिलाओ

१ हक़ और बातिल को गलत-मलत न करो। और हक़ को जानते बूझते न छुपाओ। २ ४२

२१० हक़ किसीकी ख़्वाहिश के ताबेअ् नहीं होता

१ अगर हक़ उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करे, तो आस्मान और ज़मीन और जो कोई उनके बीच में है, सब बिगड़ जायें। २३ ७१

२११ हक़ के मुक़ाबले में बातिल का ख़ातिमा

१ बल्कि हम सच को झूठ पर फेंक मारते हैं। फिर वह उसका सर फोड़ डालता है। पस नागाह वह मिट जाता है। २१ १८

अक़्ल—नीति हक़ और बातिल—सत्यासत्य जहालत—अज्ञान
मिक़्दार—मात्रा सैलाब—बाढ़।

५३ हकपरस्त

२१२ कहनी पसी करनी

१ ऐ ईमानवालो ! ऐसी बात क्यों कहते हैं, जो करते नहीं ।

२ अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजगी की है कि वह बात कहो जो करो नहीं । ६१ २ ३

२१३ सिर्फ दूसरों को नसीहत न करो

१ क्या तुम लोगों को नेक काम करने का हुक्म देते हो और अपने-आपको भूल जाते हो ? हालांकि किताब को तिलावत करते हो । फिर क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते ? २ ४४

२१४ मेहनत से काता हुआ सूत तोड़ डाला

१ अल्लाह का अहद पूरा करो । जब कि तुमने उससे अहद बाँधा । और कस्मों को पक्का करने के बाद, तोड़ न डालो । जब कि तुम अल्लाह को अपने ऊपर जामिन बना चुके हो । यकीनन, अल्लाह जानता है, जो कुछ तुम करते हो ।

२ और उस (सरफिरी) औरत के जैसे न हो जाओ कि जिसने मेहनत से काता हुआ अपना सूत टुकड़े-टुकड़े कर डाला । १६ ९१-९२

२१५ हकपरस्ती तकवा है

१ जो लोग सच्ची बात लेकर आये और जिन्होंने उसको सच माना वही लोग मुत्तकी हैं ।

२ वह जो कुछ चाहेंगे वह उनके परवरदिगार के पास है । यह नेकोकारों का सिला है । ३९ ३३ ३४

पाकिस्तानीय गुल्क—पाकिस्तानि हकपरस्त—सत्यकाम ।

५४ अच्छी ज़बान

२१६ अच्छी-बुरी बात की मिसाल

१ क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह ने पाकीज़ा बात की कैसी मिसाल बयान की है। उसकी मिसाल एक अच्छे दरख्त की सी है। जिसकी जड़ मज़बूत जमी हुई है। और उसकी शाखें आस्मान में हैं।

२ हर आन वह अपने रब के हुक्म से अपने फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। ताकि वह सबक़ हासिल करें।

३ और नापाक बात की मिसाल एक गंदे दरख्त की-सी है। जो ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाता है। उसके लिए कोई इस्तेहकाम नहीं। १४ २४—२६

२१७ सबसे अच्छी बात कहो

१ मेरे बंदों को कह दे कि वह बात कहा करें जो बेहतरीन हो। बेशक शैतान उनके दरमियान फ़साद डलवाता है। हक़ीक़त यह है, कि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। १७ ५३

२१८ सबसे अच्छी बात

१ उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है, जो अल्लाह की तरफ़ बुलाये। नेक काम करे और कहे, कि मैं उन लोगों में हूँ जिन्होंने अपने-आपको अल्लाह के हवाले कर दिया। ४१ ३३

२१९ सीधी बात

१ ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो। और सीधी बात कहो। ३३ ७०

आन—क्षण गंदा—अशुचि इस्तेहकाम—ठहराव स्थिरता फ़साद—झगड़ा।

४७ बदगोई से परहेज

२२० बुरी बात न कहो

१ बुरी बात जबान पर लाना अल्लाह पसंद नहीं करता। इल्ला यह, कि किसी पर ज़ुल्म हुआ हो। और अल्लाह सुननेवाला और जाननेवाला है।

२ अगर तुम भलाई ज़ाहिर करो या छुपाओ। या बुराई मुआफ करो। तो बेशक अल्लाह भी मुआफ करनेवाला बड़ी क़ुदरत वाला है। ४ १४८ १४९

२२१ बदगोई न करो

१ ऐ ईमानवालो! मर्दों को मर्दों की हँसी न उड़ानी चाहिए। शायद कि वह उनसे बेहतर हों। और न औरतें औरतों की हँसी उड़ायें। शायद कि वह उनसे बेहतर हों। और एक-दूसरे को ऐब न लगाओ। और एक-दूसरे को बुरे अल्काब से न पुकारो। ईमान के बाद गुनाह का नाम ही बुरा है। और जो उससे बाज़ न आयें वही ज़ालिम हैं।

२ ऐ ईमानवालो! दूसरों पर शक करने से बचते रहो। बेशक बाज़ शक गुनाह हैं। और किसीकी जासूसी और टोह में न लगो। तुममें कोई किसीकी ग़ीबत न करे। भला तुममें से किसीको यह पसंद आयेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? तो तुमको उससे घिन आए। और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह तौबा कबूल करनेवाला मेहरबान है। ४९ ११ १२

बदगोई—अपशब्द वाणी गीबत—पृष्ठनिन्दा।

१८ अहिंसा (बेआज़ारी)

४६ इन्साफ़

२२६ एक जान को बचाना तमाम इन्सानों को ज़िन्दगी बख्शना है

१ हमने बनी इस्राईल पर लिखा कि जिसने किसी इन्सान को बग़ैर किसी जान के बदले या दुनिया में फ़साद फैलाने के सिवा किसी और वजह से कत्ल किया उसने गोया तमाम इन्सानों को कत्ल कर दिया। और जिसने किसी जान को बचाया उसने गोया तमाम इन्सानों को ज़िन्दगी बख़्शी । ५.३५

२२७ फ़साद न फैलाना

१ अपने परवरदिगार को पुकारो। गिड़गिड़ाते हुए, और चुपके-चुपके। बेशक वह हद से बढ़नेवालों को पसंद नहीं करता।

२ इस दुनिया में फ़साद बरपा न करो। जब कि उसकी इस्लाह हो चुकी है। और उसीको पुकारो। डर और तमअ् के साथ। बेशक अल्लाह की रहमत नेकी करनेवालों के क़रीब है।

७ ५५ ५६

२२८ दुश्मनी करनेवाले से भी बेइन्साफ़ी न करो

१ ऐ ईमानवालो ! अल्लाह के वास्ते रास्ता पर कायम रहनेवाले और इन्साफ़ की गवाही देनेवाले बनो। और किसी क़ौम की अदावत तुम्हें मुश्तइल न कर दे कि तुम इन्साफ़ न कर सको। इन्साफ़ करो। यही बात तक्वा से ज़्यादह क़रीब है। और अल्लाह का तक्वा इख़्तियार करो। बेशक अल्लाह, तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। ५.८

तमअ्–लालच क़ौम अदावत–बैर मुश्तैद–तैयार इस्लाह–सुधार।

२२९ दोस्ती के लिए हमेशा मुस्तैद रहो

१ अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो तू भी उसके लिए झुक जा। और अल्लाह पर भरोसा रख। बेशक वही है सुननेवाला, जाननेवाला।

२ और अगर वह तुमको धोखा देने का इरादा रखते हों। तो तेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। उसीने तुमको अपनी मदद से और ईमानवालों से तक़वियत पहुँचाई है।—

३ और मोमिनों के दिल एक-दूसरे से जोड़ दिये। अगर तू ज़मीन में जो कुछ है, सब ख़र्च कर डालता तो भी उनके दिलों को जोड़ न सकता। लेकिन् अल्लाह ने उनके दिल जोड़ दिये। बेशक वह ग़ालिब हिकमतवाला है। ८ ६१–६३

४७ इन्साफ़ (ठीक माकूलता) से मुआफ़ी बेहतर

२३ सब्र बेहतरीन रास्ता है

१ अगर बदला लो तो इस क़दर बदला लो जिस क़दर तुमको ईज़ा पहुँचाई गयी। और अगर सब्र करो तो सब्र करनेवालों के लिए बेहतर है।

२ और तू तो सब्र ही कर। और यह तेरा सब्र करना अल्लाह ही की मदद से है। और उन पर रंज न कर। और उनकी चालबाज़ियों से तंग न हो।

३ बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो तक़्वा से काम लेते हैं, और एहसान करनेवाले हैं। १६ १२६ १२८

तक़वियत—ताक़त बाज़ू—बोलबाला मुस्तैद—तैयार।

२३१ मुआफ़ करना बेहतर है

१ वह लोग जब उन पर ज़्यादती होती है, तो जवाब देते हैं।

२ और बुराई का बदला उतनी ही बुराई है। फिर जो कोई मुआफ़ करे और इस्लाह करे, तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है। बेशक वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता। ४२ ३६-४०

४८ भलाईवाली ख़सीला

२३२ मुआफ़ कर और अल्लाह की पनाह माँग

१ मुआफ़ करने की आदत डाल। और नेकी का हुक्म देता जा। और जाहिलों से किनारा-कश रह।

२ और अगर शैतान का वसवसा (छेड़) तुझे उभार, तो अल्लाह की पनाह माँग। बेशक वह सुननेवाला-जाननेवाला है।

३ बेशक जो लोग ख़ुदातरस हैं, उनको जब कभी शैतान की तरफ़ से कोई ख़्याल छू भी जाता है, तो वह चौकन्ने हो जाते हैं। पस यकायक उनकी आँखें खुल जाती हैं। ७ १९९–२०१

२३३ बुराई का अच्छाई से मुकाबला करो

१ बुराई का दफ़ीया ऐसे बर्ताव से करो जो बहुत अच्छा हो। हम ख़ूब जानते हैं जो यह बयान करते हैं।

२ और कह, ऐ परवरदिगार ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, शैतान के वसवसों से।

३ और ऐ मेरे रब मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, इससे कि शैतान मेरे पास आयें। २३ ९६–९८

ख़ुदातरस—ईश्वर से डरनेवाला।

२३४ अल्लाह से मुआफ़ी के ख्वास्तगार औरों को मुआफ़ करें

१ लोगों को चाहिए के मुआफ़ करें और दरगुज़र करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुमको मुआफ़ करे? और अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है। २४ २

२३५ दुश्मन दोस्त हो जाते हैं

१ नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती। बदी को दूर करने के लिए, जवाब में ऐसा बर्ताव करो जो बहुत अच्छा हो। फिर यकायक वह शख्स कि जिसके और तेरे दरमियान दुश्मनी है ऐसा होगा कि गोया वह तेरा दिली दोस्त है।

२ और यह बात उसीको नसीब होती है, जो मुस्तकिल-मिज़ाज है। और यह बात उसीको नसीब होती है, जो बड़े नसीबवाला है। ४१ ३४ ३

२३६ मुहब्बत कैसे पैदा होती है

१ बेशक जो लोग ईमान लाते हैं, और जिन्होंने नेक काम किये उनमें वह रहमान मुहब्बत पैदा करता है। १९.९

४९ दीन का अमल

२३७ पड़ोसियों से नेक बर्ताव

१ क्या तूने उस शख्स को देखा जो जज़ा के दिन को झुठलाता है?

२ पस यही वह शख्स है, जो यतीम को धक्के देता है।

३ और मुहताज को खाना देने के लिए किसीको तरग़ीब न देता।

ख्वास्तगार-इच्छुक नसीब होना-भाग्य में आना मुस्तकिल मिज़ाज-स्थिर स्वभाव का दीन-आचार जज़ा-बदला तरग़ीब देना-प्रोत्साहित करना।

४ पस खराबी है उन नमाज़ियों के लिए,
५ जो अपनी नमाज़ में ग़ाफ़िल हैं।
६ वह जो रियाकारी (दिखलावा) करते हैं।
७ और पड़ोसियों को रोज़मर्रा के बरतने की छोटी चीजें भी इस्तिअमाल करने नहीं देते। १०७ १-७

२९८ आपस में सब्र और रहम की ताकीद

१ क्या हमने इन्सान को दो आँखें नहीं दीं।
२ और ज़बान और दो होंठ।
३ और दिखला दीं उसको दोनों राहें।
४ पस वह घाटी में नहीं पड़ा।
५ और तू क्या जाने के वह घाटी (पड़ाव) क्या है ?
६ गुलामी की ज़ंजीर से किसी गर्दन को छुड़ाना है।
७ या भूक के दिन में खाना खिलाना है।—
८ रिश्तेदार यतीम को
९ और ख़ाक-नशीन मिस्कीन को।
१ फिर उन लोगों में से होना। जो ईमान लाये। और आपस में एक-दूसरे को सब्र की ताकीद करते हैं। और एक-दूसरे को रहम करने की ताकीद करते हैं। ९ ८-१७

२९९ आपस में हक़ और सब्र की ताकीद

१ क़सम है ज़माने की
२ यक़ीनन इन्सान घाटे में है।

ताकीद—ज़ोरदार हुक्म ख़ाक-नशीन—धूल में बैठा हुआ।

३ सिवाय उन लोगों के जो ईमान रखते हैं। और नेक काम करते हैं। और आपस में एक-दूसरे को हक़ की ताकीद करते हैं। और एक-दूसरे को सबर की ताकीद करते हैं। १०३ १-३

२४० नेक काम में एक-दूसरे की मदद करो

१ नेकी और परहेज़गारी में एक-दूसरे की मदद करो। और ज़ुल्म पर एक-दूसरे के साथ मदद न करो। ५ ३

२४१ नेक काम की दौड़ में बाज़ी जीतो

१ हर एक के लिए एक सिम्त है, जिसकी तरफ वह मुड़ता है। पस तुम भलाइयों में सब्क़त करो। जहाँ कहीं तुम होगे अल्लाह तुम सबको इकट्ठा कर लायेगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। २ १४८

५० बुराई से बदख़-ताख़ुक

२४२ झूटों की मत सुन

१ पस तू कहना मत मान झुठलानेवालों का।

२ वह चाहते हैं कि तू मुलायम पड़े। तो वह भी मुलायम पड़ें।
और तू कहा न मान बहुत क़स्में खानेवाले ज़लील का।

४ वह में क—जो चुगलख़ोर है।

५ भले काम से रोकनेवाला हद से बढ़नेवाला गुनाहगार है।

६ जो सख़्त-मिज़ाज है। और उन सबके बाद वह है, बुराई और मलामत में मशहूर।

७ और यह सब इस (घमंड) से कि माल और बेटे रखता है।

६८ ८-१४

सिम्त-दिशा सब्क़त करो-आगे बढ़ो बदख़-ताख़ुक-असहयोग मलामत-निन्दा।

४१ नागुज़ीर मुक़ाबला

२४३ मुक़ाबले की अदम-मौजूदगी में मुक़द्दस मुक़ामात मिस्मार होते

१ उन लोगों को लड़ाई की इजाज़त दी जाती है, जिनसे लड़ाई की जा रही है इस वास्ते कि उन पर ज़ुल्म हो रहा है। और बेशक अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है।—

२ जिन लोगों को नाहक़ उनके घरों से निकाला गया सिर्फ़ उनके इस कहने पर कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है। और अगर अल्लाह लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता तो दुर्वेशों के ख़ल्वतख़ाने और नसारा की इबादतगाहें, और यहूद के इबादतख़ाने और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता है, ढा दिये जाते। और बेशक अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा जो उसकी मदद करेगा। बेशक अल्लाह क़वी और ग़ालिब है। २२ ३९ ४०

२४४ दीन के तहफ़्फ़ुज़ के लिए महदूद मुक़ाबला

१ जिन लोगों ने अल्लाह की राह में घर-बार छोड़ा फिर मारे गये या मर गये उनको अल्लाह ज़रूर अच्छा रिज़्क़ देगा। और यक़ीनन् अल्लाह सबसे बेहतर रोज़ी देनेवाला है।

२ वह उन लोगों को ज़रूर ऐसी जगह दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद करेंगे। बेशक अल्लाह जाननेवाला और हलीम है।

३ यह हुआ। और जो शख़्स बदला ले उतना ही जिस क़द्र कि उसको सताया गया है। उस शख़्स पर अगर फिर से ज़्यादती हो तो अल्लाह उसकी ज़रूर मदद देगा। बेशक अल्लाह मुआफ़ करनेवाला बख़्शनेवाला है। २२ ५८–६०

४२ सूरे-बकरात

२४५ एक गिजा से उकता जाना

१ जब तुमने कहा ऐ मूसा ! हम एक ही तरह के खाने पर हरगिज सब्र नहीं करेंगे। पस अपने रब से हमारे लिए दुआ करो कि हमारे लिए वह चीजें पैदा कर दे, जिसे जमीन उगाती है। यानी साग-तरकारी और गेहूँ, और दाल और प्याज। मूसा ने कहा क्या तुम बेहतर चीज के बदले में अदना दर्जे की चीज लेना चाहते हो ? तो किसी शहर में जा उतरो। जो कुछ तुम माँगते हो वहाँ मिल जायेगा। और उन पर जिल्लत और बेबसी मुसल्लत कर दी गई। और वह अल्लाह के गजब में आ गये ।६ २ ६१

अदना—घटिया-कीमत जिल्लत—अपमान मुसल्लत कर दी गई—थोपी गई।

(१) बेहतर—अल्लाह का दिया रिज्क (२) अदना—[illegible] ने माँगा हुआ [illegible]। ([illegible])

४३ पाकीज़गी

२४६ ख़ुद को पाक कहनेवाले

१ क्या तूने उनको देखा जो अपने आपको पाक कहते हैं। हालाँकि अल्लाह ही पाक बनाता है जिसको चाहता है। (और उन पाकीज़गों का दा'वा रखनेवालों को भी सज़ा होगी। उसमें)— उन पर ज़र्रा बराबर (खजूर की गुठली की लकीर के बराबर) भी ज़ुल्म न होगा। ४४६

२४७ पाकीज़गी रहमत है

१ ऐ ईमानवालो! शैतान के क़दमों की पैरवी न करना और जो शैतान के क़दमों की पैरवी करेगा तो बेशक वह बेहयाई और नामा'कूल काम करने का हुक्म करता है। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुममें से एक भी कभी पाक न होता। लेकिन् अल्लाह जिसको चाहता है पाक करता है। और अल्लाह सुननेवाला और जाननेवाला है। २४२१

२४८ ग़ैर इरादी क़ुसूरों से बचना अल्लाह की रहमत से मुमकिन है

१ जो बड़े गुनाहों से और फ़हश बातों से बचते हैं, सिवाय ग़ैर इरादी क़सूरों के। बेशक तेरा रब वसीअ बख़्शनेवाला है। और वह तुमको उस वक़्त से ख़ूब जानता है, जब तुमको ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे।

पाकीज़गीये-नफ़्स—आत्मशुद्धि ब्रह्मचर्य काम-संयम गैरइरादी क़ुसूर—स्खलन फ़हश बातें—पैशाचिक बातें।

पस तुम अपने तक्दूदुस का इज़्हार न करो। वह खूब जानता है कि कौन तक्वावाला है। ५३ ३२

२४९ अंदरूनी और बेरूनी गुनाहों से बाज़ आओ

१ ज़ाहिरी गुनाह और बातिनी गुनाह छोड़ दो। जो लोग गुनाह कमाते हैं, उनको उनके उस करतूत का बदला ज़रूर दिया जायेगा। ६ १२

२५० पाकीज़गी और ज़िक्रुल्लाह

१ बेशक बामुराद हुआ वह शख़्स। जिसने पाकीज़गी इख़्तियार की।

२ और अपने परवरदिगार का नाम याद किया। फिर सलात पढ़ी। ८७ १४ १५

२५१ तक्वा और फुजूर की तमीज़ रक्खो

१ क़सम है नफ़्स की। और उस ज़ात की जिसने उसको दुरुस्त किया।

२ फिर आगाह किया उस नफ़्स को उसकी बदी से और उसकी परहेज़गारी से।

३ और यक़ीनन, वह शख़्स मुराद को पहुँचा जिसने नफ़्स को पाक किया।

४ और नामुराद हुआ वह, जिसने उसको पामाल किया। ९१ ७-१

२५२ इस्मत की हिफ़ाज़त

१ ऐ आदम के बेटो! बेशक हमने तुम पर लिबास उतारा है, जो तुम्हारी शर्मगाहें ढाँकता है, और जो ज़ीनत है। और तक्वा का पहनावा बेहतरीन पहनावा है। यह अल्लाह की निशानियों में से है। ताकि यह लोग नसीहत हासिल करें।

तक्दूदुस—पवित्रता फुजूर—व्यभिचार, दुराचार ज़ीनत—शोभा।

२ ऐ आदम के बेटो। तुमको शैतान फ़ित्ने में मुब्तला न कर दे। जैसा कि तुम्हारे माँ-बाप को बेहिश्त से निकलवाया। उनके कपड़े उनसे उतरवाये। ताकि उनको उनकी शर्मगाहें दिखा दे। वह और उसका कुंबा तुमको इस तरह से देखते हैं, कि तुम उनको नहीं देख सकते। बेशक हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते।

३ और वह लोग जब कोई बुरा काम करते हैं, तो कहते हैं। कि हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है। और अल्लाह ही ने हमको ऐसा करने का हुक्म दिया है। बेशक अल्लाह बुरे कामों का हुक्म नहीं दिया करता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं। ७ २६-२८

५५३ ग़ैर मुस्तनद रहबानीयत

१ फिर उनके बाद पै दर पै हमने रसूल भेजे। और उनके बाद मर्यम के बेटे ईसा को भेजा। और उसको इंजील अता का। उसकी इत्तिबाअ् करनेवालों के दिलों में नरमी और रहम पैदा कर दिया। और उन्होंने तर्के-दुनिया (रहबानीयत) अपनी तरफ से नया निकाला था। उसको हमने उन पर लाज़िम नहीं किया था। मगर उन्होंने अल्लाह की रज़ा ढूँढने के लिए वह किया। फिर उसको जैसे निभाना चाहिए था नहीं निभाया। फिर हमने उनमें जो ईमानवाले थे उनको उनका अज्र दिया। और बहुत से उनमें नाफ़रमान थे। ५७ २७

ग़ैरमुस्तनद-अप्रमाणित रहबानीयत-सन्यास दर पै-लगातार इत्तिबाअ-अनुसरण लाज़िम-ज़रूर नाफ़रमान-आज्ञा न माननेवाला।

१

२५४ ब्रह्मचारी—यहया अलैहिस्सलाम

१ उस जगह ज़करिया ने अपने परवरदिगार को पुकारा। कहा ऐ मेरे परवरदिगार, मुझको अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता कर। बेशक तू दुआ का सुननेवाला है।

२ फ़रिश्तों ने पुकारकर कहा जब कि वह हुजरे में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था। कि अल्लाह तुझको यहया की खुशखबरी देता है। और वह कलिमतुल्लाह ईसा की तसदीक़ करनेवाला। सरदार हसूर (ब्रह्मचारी) नबी होगा। और सालिहीन में से होगा।

३ ३८ ३९

२५५ मक़ाम का हाज़िर-नाज़िर जानकर ख़्वाहिशे-नफ़्सानी रोकना

१ फिर जब आयेगा वह बड़ा हंगामा।

२ उस दिन आदमी याद करेगा जो सभी उसने की थी।

३ और दोज़ख़ सामने लायी जायगी कि वह उसे देखें।

४ पस जिसने सरकशी की होगी।

५ हयाते-दुनिया को तरजीह दी होगी।

६ पस दोज़ख़ ही उसका ठिकाना होगा।

७ और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा हो और उसने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका हो।

८ तो बेशक उसका ठिकाना बहिश्त ही है। ७९ ३४-४१

कलिमतुल्लाह—ईश्वरीय वचन तसदीक़ करना—सच्चा बताना सालिहीन—नेक हाज़िर—उपस्थित नाज़िर—देखनेवाला तर्जीह देना—श्रेष्ठ मानना।

२२ पाकीज़गीए-अमीरात

४४ अद्म सर्का

२५६ सूद हराम है

१ जो लोग सूद खाते हैं वह नहीं खड़े होंगे मगर उस शख्स की तरह, जिसको शैतान ने छूकर बावला कर दिया। ऐसा इसलिए कि वह कहते हैं, कि तिजारत भी तो सूद ही जैसी है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया है, और सूद को हराम। लिहाजा जिस शख्स को उसके परवरदिगार की तरफ से नसीहत पहुँचे। और वह सूद से बाज आ जाय। तो जो कुछ पहले वसूल हो चुका वह उसका है। और उसका मुआमला अल्लाह के हवाले है। और जो कोई इसके बाद फिर सूद लेगा। तो वही हैं आगवाले जिसमें वह हमेशा रहेंगे।

२ अल्लाह सूद का मठ मार देता है। और सदकात को नशव-नुमा देता है। और नाशुक्रे बदअमल को पसंद नहीं करता।

२ २७५-२७६

२५७ रकम सूद पर न दो, जकात में दो

१ सो जो कुछ तुम सूद पर देते हो ताकि लोगों के माल में (पहुँच कर) वह बढ़े वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता। और जो कुछ जकात (पाक दिल से) अल्लाह की राह में देते हो अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के इरादे से। तो ऐसे ही लोग अल्लाह के पास अपना दिया हुआ दुगना करनेवाले हैं।

३० ३९

पाकीज़गीए-अमीरात—अर्थशुचिता   अद्म-सर्का—अस्तेय   मठ मारना—समूल नष्ट करना   मठ—जीत का हीम   नशोनुमा—फूलना-फलना   बदअमल—दुराचारी   खुशनूदी—प्रसन्नता।

८ सही नाप और तौल

१ और मद्यन की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा। भाइयो अल्लाह की बंदगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं। और नाप-तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको फ़रागत की हालत में देखता हूँ। और ऐसे दिन के अज़ाब से डरता हूँ, जो तुम सबको आ घेरेगा।

२ और ऐ भाइयो! इन्साफ़ के साथ पूरे नाप और तौल करो। और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दिया करो। और ज़मीन पर फ़साद फैलाते न फिरो।

३ अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिए बेहतर है। अगर तुम ईमानवाले हो। और मैं तुम पर कोई निगराँ नहीं हूँ।

११ ८४–८६

७९ पाक की कमाई शैतान की कमाई

१ बड़ी ख़राबी है नाप-तौल में कमी करनेवालों के लिए

२ कि जब लोगों से नाप लें तो पूरे-पूरे लें —

३ और जब उनको नापकर या तौलकर दें तो घटाकर दें।

८३ १–३

७१ हवस न करें

१ और तमन्ना न करो उस चीज़ की कि जिससे अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है। ४ ३२

फ़रागत—मालदारी हवस—लोभ लालच फ़ज़ीलत—श्रेष्ठता।

४४ मल्लिहज़ गैरमुस्लिम

२६१ मुसलमान में सारा

१ हाँ तुम लोग ऐसे हो कि तुमको अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है, तो तुममें कोई ऐसा होता है कि बुख्ल करता है। और जो कोई बुख्ल करता है, वह खुद अपने लिए बुख्ल करता है। और अल्लाह तो बेनियाज है। और तुम मुहताज हो। और अगर तुम मुँह फेरोगे तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को लायेगा। फिर वह तुम्हारे जैसे नहीं होंगे। ४७ ३८

२६२ कंजूस कंजूसी सिखाता है

१ और तुम सब अल्लाह की इबादत करो। और उसके साथ किसीको शरीक न बनाओ। और माँ-बाप के साथ खुशअख़लाकी के साथ बर्ताव करो। और क़राबतदारों और यतीमों और मिस्कीनों और पड़ोसी रिश्तेदार, और अजनबी हमसाये और पास बैठनेवाले साथी और मुसाफिर के साथ अच्छा सुलूक करो। और उनके साथ जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं। बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतरानेवाले शेखीबाज को।

२ जो कंजूसी करते हैं। और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं। और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से जो उनको दिया है, छुपाते हैं। ऐसे नाशुकरों के लिए, हमने जिल्लत की सजा तयार रखी है।

४ २६ ३७

मल्लिहज़—मार्ग मैदान मदद—मुहताज, मोहताज बुख्ल—कंजूसी गवारा—मुसलमान खुशअख़लाकी—शौहरत्व क़राबतदार—रिश्तेदार शेखीबाज—बसाड़।

५८ सही नाप और तौल

१ और मद्यन की तरफ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा। भाइयो अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। और नाप-तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको फ़राग़त की हालत में देखता हूँ। और ऐसे दिन के अज़ाब से डरता हूँ जो तुम सबको आ घेरेगा।

२ और ऐ भाइयो! इन्साफ़ के साथ पूरी नाप और तौल करो। और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दिया करो। और ज़मीन पर फ़साद फैलाते न फिरो।

३ अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिए बेहतर है। अगर तुम ईमानवाले हो। और मैं तुम पर कोई निगराँ नहीं हूँ।

११ ८४–८६

५९ नाप की कमाई शैतान की कमाई

१ बड़ी ख़राबी है नाप-तौल में कमी करनेवालों के लिए

२ कि जब लोगों से नाप कर लें तो पूरा-पूरा लें —

३ और जब उनको नापकर या तौलकर दें तो घटाकर दें।

८३ १–३

६० हसद न करें

१ और तमन्ना न करो उस चीज़ की कि जिसके ज़रिये अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है। ४ ३२

फ़राग़त—सम्पन्नता हसद—द्वेष कामना फ़ज़ीलत—श्रेष्ठता।

२६६ क़ारून की सबक़-आमोज़ कहानी

१ क़ारून मूसा की बिरादरी में से था। फिर उनके मुक़ाबले में सरकशी करने लगा। और हमने उसको इतने ख़ज़ाने दिये थे के उसकी कुंजियाँ उठाने से कई ज़ोरावर शख़्स थक जाते थे। जब उसकी बिरादरी ने उससे कहा। इतरा मत। लाज़मी अल्लाह को इतरानेवाले नहीं भाते।

२ और जो तुझको अल्लाह ने दिया है, उसके ज़रीए आख़िरत के घर की जुस्तजू कर। और दुनिया से अपना हिस्सा यहाँ से लेना न भूल। और इहसान कर। जैसे कि अल्लाह ने तेरे साथ इहसान किया है। और ज़मीन में फ़साद मत चाह। अल्लाह को फ़साद करनेवाले पसंद नहीं।

३ बोला। बेशक यह माल तो मुझे एक हुनर से मिला है जो मेरे पास है। क्या उसे मा'लूम नहीं कि अल्लाह ने उससे पहले कई जमाअतें हलाक की हैं। जो उससे ज़्यादह क़वी और मालदार थीं। और गुनहगारों से उनके गुनाह पूछे नहीं जाते।

४ फिर एक बार वह अपनी बिरादरी के सामने अपने ठाट से निकला। उसे देखकर उन्होंने कहा जो दुनियवी ज़िन्दगी के ख़्वाहाँ थे। अये काश। हमको भी मिलता। जैसा कुछ क़ारून को मिला है। बेशक वह बड़े नसीबवाला है।

५ और जिनको समझ-बूझ मिली थी वह बोले। ख़राबी है तुम्हारे लिए। अल्लाह का सवाब बेहतर है उन लोगों के लिए, जो ईमान रखते हैं और अच्छे काम करते हैं। और यह उनको ही दिया जाता है, जो सब्रवाले हैं।

सबक़-आमोज़—पाठ सिखानेवाली जुस्तजू करना—ढूँढना क़वी—बलवान् ख़्वाहाँ—इच्छुक।

२६३ कंजूसों की दुर्गत

१ जो लोग अल्लाह के दिये हुए फ़ज़्ल में कुन्ल करते हैं। वह यह गुमान न करें कि उनके लिए बेहतर है। नहीं। बल्कि वह उनके लिए बुरा है। क़ियामत के रोज़ वह माल जिसमें उन्होंने कुन्ल किया था तौक बनाकर उनके गले में डाला जायगा। आस्मान और ज़मीन की मीरास अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की खबर रखता है। ३ १८०

२६४ सोना-चाँदी ज़खीरा करनेवाले

१ ऐ ईमानवालो! बहुत से अहले-किताब आलिम और दुरवेश लोगों के माल नाहक खा जाते हैं। और उन्हें अल्लाह की राह से रोकते हैं। और जो लोग सोना-चाँदी जमा' करके रखते हैं। और उसको अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते। तो उनको एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की खुशखबरी दे दो।

२ जिस दिन कि उस माल पर दोज़ख की आग दहकायी जायगी। फिर उसीसे उनकी पेशानियों करवटों और पीठों को दागा जायगा। (और उनसे कहा जायगा) यह है जो तुमने अपने वास्ते जमा कर रखा था। तो अब अपनी समेटी हुई दौलत का मज़ा चखो। ९.३४ ३५

२६५ ज़मीन से चिमटनेवाले

१ ऐ ईमानवालो! तुमको क्या हुआ है। कि जब तुमसे कहा जाता है, कि अल्लाह की राह में कूच करो। तो तुम ज़मीन से चिमटकर रह जाते हो। क्या आखिरत को छोड़कर, दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये हो? तो दुनियाकी ज़िन्दगी का सरो-सामान आखिरत के मुकाबिले में बहुत हकीर है। ९.३८

ज़खीरा-इकट्ठा, कुन्ल तौक-हँसली दुरवेश-फ़कीर।

२६९ कसूरते-दौलत के लिए मुक़ाबला का अंजाम

१ कसरत की चाह ने तुमको ग़ाफ़िल किया।
२ यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा मिले।
३ हरगिज नहीं। अनक़रीब तुम्हें मा'लूम हो जायगा।
४ फिर हरगिज नहीं। अनक़रीब तुम्हें मा'लूम हो जायगा।
५ हरगिज नहीं। काश तुम यक़ीन करके जानते।
६ बेशक तुमको दोज़ख ज़रूर देखना है।
७ फिर उसको ज़रूर यक़ीन की आँखों से देखोगे।
८ फिर उस दिन तुमसे ज़रूर पूछा जायगा निअमतों के बारे में।

१०२ १–८

४६ सदक़ात

७० सदक़ात के बारे में तम्सीलें

१ जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी ही है। जैसे एक दाना कि उससे सात बालें उगीं। हर बाल में सौ दाने हों। अल्लाह जिसके लिए चाहता है बढ़ाता है। और अल्लाह बड़ी वुसअतवाला और जाननेवाला है।
२ जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं। और फिर खर्च करके न एहसान जताते हैं, और न ईज़ा पहुँचाते हैं। उनके लिए उनका अज्र उनके परवरदिगार के यहाँ है। और उनके लिए न डर है। और न वह ग़मगीन होंगे।
३ एक भली बात और मुआफ़ कर देना उस सदक़े से बेहतर है, कि जिसके पीछे ईज़ा हो। और अल्लाह बेनियाज़ और निहायत बुर्दबार है।

कसूरते दौलत–धन वैभव अनक़रीब –निकट में बालें–बाली
बुर्दबार–सहिष्णु।

६ फिर हमने उसको और उसके घर को ज़मीन में धँसा दिया और अल्लाह के अलावा उसकी फिर कोई ऐसी जमाअत न हुई, जो उसकी मदद करती। न वह खुद मदद पा सका।

७ और वह लोग जो कल तक उसके जैसा होने की आरज़ू कर रहे थे कहने लगे। अरे-अरे! अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है। और जिसके लिए चाहता है, तंग कर देता है। और अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो हमको भी ज़मीन में धँसा देता। अरे-अरे! मुनकिर कभी फ़लाह नहीं पाते। २८ ७९–८२

२९७ उनका वहाँ कोई दोस्त नहीं होता

१ वह ख़ुदाये-अज़ीम पर ईमान नहीं रखता था।
२ और मुहताज के खिलाने पर तरग़ीब नहीं देता था।
३ पस आज उसका यहाँ कोई दोस्त नहीं रहा। ६९ ३३–३५

२९८ कहता है, रब ने इज़्ज़त दी, और उसीने ज़लील किया

१ पस आदमी को जब उसका परवरदिगार आज़माता है, यानी उसको इज़्ज़त देता है और निअमत देता है, तो कहता है कि मेरे परवरदिगार ने मुझे इज़्ज़त दी।

२ और जब उसको जाँचता है, और उस पर रोज़ी तंग कर देता है तो कहता है के मेरे परवरदिगार ने मेरी तौहीन की।

३ हरगिज़ नहीं। बल्कि तुम यतीम की क़द्र नहीं करते।
४ और मुहताज को खिलाने पर एक-दूसरे को नहीं उभारते?
५ और मीरास का माल खा जाते हो समेट-समेटकर।
६ और माल को जी-जान से प्यार करते हो। ८९ १५–२०

७५१ सदक़ा में अच्छी चीज़ें दो

१ ऐ ईमानवालो जो तुमने कमाया है या जो कुछ तुम्हारे लिए हमने ज़मीन से पैदा किया है, उसमें से उम्दा चीज़ अल्लाह की राह में ख़र्च करो। और यह इरादा न करो कि रद्दी चीज़ अल्लाह की राह में ख़र्च करो। हालाँकि तुम ख़ुद वह चीज़ लेनेवाले नहीं। इल्ला यह, कि उसके लेने में तुम चश्मपोशी बरत जाओ। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ है, और तारीफ़ का मुस्तहिक़ है। २ २६७

७५२ पोशीदा सदक़ात

१ अगर तुम सदक़ात अलानिया दो तो यह भी अच्छा है। और अगर तुम उसको छुपाकर हाजतमंदों को दो तो वह तुम्हारे लिए ज़्यादह बेहतर है और तुमसे तुम्हारी कुछ बुराइयाँ दूर करेगा। और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़ूब बाख़बर है।

२ २७१

७५३ सदक़ा बिनमाँगे

१ सदक़ा उन तंगदस्तों के लिए, जो अल्लाह के काम में इस तरह घिर गये हैं कि मुल्क में दौड़-धूप नहीं कर सकते। उनकी ख़ुद्दारी की वजह से नावाक़िफ़ शख़्स उनको ग़नी समझता है। तुम उनके चेहरों से उनको पहचान सकते हो। वह लोगों से पीछे पड़कर कुछ नहीं माँगते। और जो कुछ माल तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे बेशक अल्लाह उसको जानता है।

चश्मपोशी–देखा अनदेखा करना   मुस्तहिक़–हक़दार   अलानिया–प्रकट   हाजतमंद–ज़रूरतमंद   तंगदस्त–जिनके हाथ में पैसा नहीं है   ग़नी–सर्वसम्पन्न।

४ ऐ ईमानवालो! अपने सदक़ात को एहसान जतलाकर या ईज़ा पहुँचाकर, बातिल न करो। उस शख़्स की तरह, जो अपना माल अल्लाह की राह में सिर्फ़ लोगों के दिखलाने के लिए ख़र्च करता है और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। सो उसकी मिसाल ऐसी है। जैसे एक चट्टान उस पर कुछ मिट्टी पड़ी है। फिर उस पर ज़ोर का मेंह बरसा तो उसने पत्थर को साफ़ कर दिया। ऐसे लोगों का उनका कमाया हुआ कुछ भी हाथ नहीं लगता। और अल्लाह मुन्किरों को सीधी राह नहीं दिखाता।

५ और जो लोग अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए और अपने दिल के सबात के लिए, अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल ऐसी है। जैसे बुलंदी पर एक बाग़ है। और उस पर ज़ोर का मेंह पड़ा। तो वह बाग़ अपना फल दुगना लाया। और अगर उस पर मेंह न पड़ा तो हल्की फुहार भी काफ़ी है। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देखनेवाला है।

६ क्या तुममें से कोई यह पसंद करेगा? कि उसका एक खजूर या अंगूर का बाग़ हो। उसके नीचे नहरें बहती हों। उसके उस बाग़ में हर तरह के फल हों। वह बूढ़ा हो गया हो और औलादें नातवाँ रखता हो कि इस हाल में उस बाग़ पर एक बगोला आ पड़े जिसमें आग हो। जिससे वह बाग़ जल जाये। इस तरह अल्लाह तुमसे अपनी बातें बयान करता है। ताकि तुम ग़ौर करो। २ २६४–२६६

मेंह–मेघ सबात–स्थिरता नातवाँ–अशक्त बगोला–घूमती हुई आग, बवंडर।

२७१ सदक़े में अच्छी चीज़ें दो

१ ऐ ईमानवालो जो तुमने कमाया है, या जो कुछ तुम्हारे लिए हमने जमीन से पैदा किया है, उसमें से उम्दा चीज़ अल्लाह की राह में ख़र्च करो। और यह इरादा न करो कि रद्दी चीज़ अल्लाह की राह में ख़र्च करो। हालाँकि तुम ख़ुद वह चीज़ लेनेवाले नहीं। इल्ला यह, कि उसके लेने में तुम चश्मपोशी बरत जाओ। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ है, और तारीफ़ का मुस्तहिक़ है। २ २६७

२७२ पोशीदा सद्क़ात

१ अगर तुम सदक़ात अलानिया दो तो यह भी अच्छा है। और अगर तुम उसको छुपाकर हाजतमंदों को दो तो वह तुम्हारे लिए ज़्यादह बेहतर है और तुमसे तुम्हारी कुछ बुराइयाँ दूर करेगा। और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़ूब बाख़बर है।

२ २७१

२७३ सद्क़ा किनको

१ सदका उन तंगदस्तों के लिए, जो अल्लाह के काम में इस तरह घिर गये हैं, कि मुल्क में दौड़ धूप नहीं कर सकते। उनकी ख़ुद्दारी की वजह से नावाक़िफ़ शख़्स उनको ख़ुशहाल समझता है। तुम उनके चेहरों से उनको पहचान सकते हो। वह लोगों के पीछे पड़कर कुछ नहीं माँगते। और जो कुछ माल तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे बेशक अल्लाह उसको जानता है।

चश्मपोशी—देखा-अनदेखा करना मुस्तहिक़—हक़दार अलानिया—प्रकट
हाजतमंद—ज़रूरतवाला तंगदस्त—जिनके हाथ में धन नहीं है ख़ुद्दारी—स्वाभिमान।

२ जो लोग अपने माल रात-दिन छुपे और खुले अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उनका अज्र उनके परवरदिगार के पास है। उनको न कोई डर है। और न वह ग़मगीन होंगे।

२ २७३ २७४

२७४ सबसे प्यारी चीज़ अल्लाह को

१ तुम नेकी को हरगिज़ हासिल न कर सकोगे जब तक कि अपनी प्यारी चीज़ को अल्लाह की राह में खर्च न करो। और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में खर्च करोगे तो अल्लाह उसे जानता है। ३ ६२

२७५ जीत भी अपने हाथों से

१ ऐ ईमानवालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुमको अल्लाह के बारे में गाफ़िल न कर दे। और जो ऐसा करें तो ऐसे ही लोग घाटे में हैं।

२ और हमने जो कुछ तुमको दिया है, उसमें से अल्लाह की राह में खर्च करो। क़ब्ल इसके कि तुममें से किसीको मौत आ जावे। तो कहने लगे ऐ परवरदिगार! तूने मुझे एक थोड़ी-सी मुद्दत तक मुहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ देता और नेक लोगों में शामिल हो जाता।

३ और अल्लाह हरगिज़ किसी जी को जब उसकी मौत आ जायगी तो मुहलत नहीं देगा। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बाख़बर है।

६३ ६—११

२३ मसलाकी ता'लीम

४७ अच्छाई की ताकृत

२७६ अच्छाई और बुराई की तमीज़

१ कह, नापाक और पाक बराबर नहीं होते। गो नापाक की कस्रत तुमको कितने ही ता'ज्जुब में डालती हो। इसलिए ऐ अक़्लमन्दो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। ताकि तुम्हारी नजात हो। ५ १०३

४८ अख़्लाक़ी हिदायतें

२७७ अख़्लाक़ की जामेअ् ता'लीम

१ बेशक अल्लाह हुक्म करता है इन्साफ़ करने का और भलाई करने का और क़राबतदारों के देने का। और (मना) करता है, बेहयाई और नामा'क़ूल काम से और जुल्म व ज़्यादती से। और तुमको समझाता है, ताकि तुम सबक़ हासिल करो।

१६ ६०

२७८ अख़्लाक़ी ज़िन्दगी का नक़्शा

१ (१) तेरे परवरदिगार ने फ़ैसला कर दिया है, कि उसके सिवा किसीकी इबादत न करो। और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करो। अगरचे तेरे पास उनमें से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनको उफ़ तक न कह। और न उनको झिड़की दे और उनसे अदब से बात कर।

२ और उनके सामने आजिज़ी और मेहरबानी से झुककर रह। और दुआ किया कर। और कह ऐ रब। उन दोनों पर रहम कर जैसा कि उन्होंने मुझे बचपन में पाला।

३ (२) तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम नेक हो तो वह ख़िताक़ार की तरफ़ लौट आनेवालों को बख़्शनेवाला है।

जामेअ्—समावेशक सुलूक—बरताव।

४ (२) रिश्तेदार और मुहताज और मुसाफ़िर को उनका हक़ देते रहो (४) फ़ुज़ूलख़र्ची न करना।

५ बेशक फ़ुज़ूल ख़र्च लोग शैतान के भाई हैं। और शैतान अपने परवरदिगार का बड़ा नाशुक्रा है।

६ (५) और अगर तू अपने परवरदिगार की रहमत की तलब में जिसकी तुझे उम्मीद है उनसे इअ्‌राज़ करे तो उनको नरमी से जवाब दे।

७ (६) और न तो (कंजूसी से) अपना हाथ गर्दन से बाँध रख और न बिलकुल (फ़ुज़ूलख़र्ची से) खुला फैला दे। कि मलामतज़दा और आजिज़ बनकर बैठ रहे।

८ बेशक तेरा परवरदिगार, जिसके लिए चाहता है, रिज़्क़ कुशादा कर देता है। और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। बेशक वही अपने बंदों से बाख़बर, देखनेवाला है।

९ (७) और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से न मार डालो। हम उनको भी रोज़ी देते हैं और तुमको भी। दर-हक़ीक़त उनको मार डालना बड़ी ख़ता है।

१ (८) और ज़िना के क़रीब न फटको। वह यक़ीनन् बेहयाई है, वह बुरी राह है।

११ (९) और उस जान को क़त्ल न करो जिसको अल्लाह ने मना' किया है मगर हक़ के साथ। और जो ज़ुल्म से मारा गया उसके वारिस को इख़्तियार दिया है। तो वह उस बारे में हद से न निकल जाये। बेशक उसकी मदद की जाती है।

इअ्‌राज़ करना—मुँह मोड़ना कुशादा—विशाल मुफ़्लिसी—ग़रीबी
दर-हक़ीक़त—वास्तव में ज़िना—व्यभिचार।

१२ (१) और यतीम के माल के पास न जाओ मगर अच्छी निय्यत से। यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाये। और (११) अहद को पूरा करो। और बेशक अहद की बाज़पुर्स होगी—

१३ (१२) और जब माप कर दो तो पूरा भरकर दो। और ठीक तराज़ू से तोलो। यह बेहतर है। और इसका अंजाम भी बेहतर है।

१४ (१३) और किसी ऐसी बात के पीछे न लग जिसका तुझे इल्म नहीं। बेशक कान और आँख और दिल सबकी बाज़पुर्स होगी।

१५ (१४) और ज़मीन में इतराता हुआ न चल। न तू ज़मीन को फाड़ सकता है। और न पहाड़ों की बुलंदी को पहुँच सकता है।

१६ इस अहकाम में से हर एक का बुरा पहलू तेरे रब के नज़दीक नापसन्दीदा है।

१७ यह इन हिकमत की बातों में से है, जो कि तेरे रब ने तुझ पर वह्य की है। १७ २३–३६

२७९ बेटे को लुक़मान की नसीहत

१ हमने लुक़मान को हिकमत अता की कि अल्लाह का शुकर अदा करो। जो कोई शुकर करता है, वह अपने भले के लिए करता है। और जो नाशुकरी करता है तो अल्लाह बेनियाज़ है, और तारीफ़ के लायक़।

बाज़पुर्स होगी—पूछा जायगा अहद—अभिवचन नापसन्दीदा है—भाती नहीं अता—प्रदान।

और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा। कि बेटा! (१) एक खुदा के साथ किसीको शरीक न ठहराना। बेशक शिर्क बड़ा जुल्म है।

३ (२) और हमने इन्सान को उसके माँ-बाप के मुता'ल्लिक ताकीद कर दी है। उसकी माँ ने उसको थक-थककर पेट में रखा। और उसका दूध दो बरस में छूटता है। कि तू मेरी और अपने माँ-बाप की शुकरगुज़ारी कर। मेरे ही तरफ़ लौटकर आना है।

४ (३) और अगर वह दोनों तुझे इस बात पर मजबूर करें कि उस चीज़ को मेरा शरीक मान जिसका तुझे कोई इल्म नहीं। तो उन दोनों का कहना मत मान। और (४) दुनया में उनका अच्छी तरह साथ दे। और (५) उस शख्स की राह इख्तियार कर जो मेरी तरफ़ रुजूअ हुआ। मेरी तरफ़ तुमको लौटकर आना है। फिर मैं तुमको वह सब कुछ बतला दूँगा जो तुम करते थे।

५ (६) बेटा! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो चाहे वह किसी पत्थर में हो या आस्मानों में या ज़मीन में। अल्लाह उसे यक़ीनन् हाज़िर करेगा। बेशक अल्लाह बड़ा बारीकबीन बाख़बर है।

६ (७) बेटा! सलात को क़ायम कर। (८) और भली बात का हुक्म कर। (६) और बुराई से रोक। (१) और तुम पर जो आ पड़े उस पर सब्र कर। बेशक यह हिम्मत का काम है।

ज़ुल्म–दाग।

७ (११) और लोगों की तरफ़ अपने गाल मत फुला। (१२) और ज़मीन पर इतराकर न चल। बेशक अल्लाह किसी मुतकब्बिर शेख़ीबाज़ को पसंद नहीं करता।

८ (१३) और चाल में मियाना-रवी इख़्तियार कर। (१४) और अपनी आवाज़ को नरम कर। बेशक, आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधे की है। ३१ १२-१९

७८० अच्छा गृहस्थ

१ हमने इन्सान को हुक्म दिया कि अपने माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करे। उसकी माँ ने तकलीफ़ से उसका बोझ उठाया। और तकलीफ़ से उसे जनम दिया। और उसका हमल और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में पूरा होता है। यहाँ तक कि जब जवानी को पहुँचता है और चालीस बरस का हो जाता है तो कहने लगता है। कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उन नियामतों का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझे और मेरे माँ-बाप को अता की हैं। और यह, कि मैं नेक काम करूँ। जिससे तू राज़ी हो और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह कर। वाक़ई मैं तेरी तरफ़ लौट आया। और मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ।

२ यह वह लोग हैं कि हम उनके किये हुए बेहतर काम उनसे क़बूल करते हैं और उनकी बुराइयाँ मुआफ़ करते हैं। ये लोग जन्नतवालों में हैं। और उनसे जो वादा किया जाता था वह सच्चा वादा था। ४६ १५ १६

[illegible]
१

२४ आदाबे-मुआशरत

४६ आदाब

२८१ शर्बे मुनश्शियात

१ लोग शराब और जुए के बारे में तुमसे पूछते हैं। कहो, उन दोनों में बड़ा गुनाह है। और, लोगों के लिए उनमें कुछ फ़ायदे हैं। मगर उनका गुनाह उनके फ़ायदे से बहुत ज़्यादः है। २ २१९

२८२ जवाब में ज़्यादः अदब बरतो

१ जब तुमको तहीयत[*] के साथ सलाम किया जाये तो तुम उसको उससे बेहतर तरीक़े से जवाब दो या उसीको फेर दो। बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेनेवाला है। ४ ८६

२८३ किसीके घर में दाखिल होने के आदाब

१ ऐ ईमानवालो! अपने घरों के सिवा किसी और घर में दाखिल न हो जब तक कि इजाज़त न ले लो और घरवालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। ताकि तुम याद रखो।

२ पस अगर उस घर में किसीको न पाओ तो उसमें दाखिल न हो। यहाँ तक कि तुमको इजाज़त न मिल जाय। और अगर तुमसे कहा जाय कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए बहुत पाकीज़गी की बात है। और अल्लाह तुम्हारे सब कामों का इल्म रखता है। २४ २७-२८

---

[*] तहीयत—आदर।

२८४ मजलिसी आदाब

१ ऐ ईमानवालो ! जब तुमको कहा जाता है, कि मजलिसों में कुशादगी करो तो कुशादः कर दो। अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा करेगा। और जब तुमको उठने के लिए कहा जाये तो उठ जाओ। तुममें से जो ईमान रखते हैं, और इल्म रखते हैं, अल्लाह उनके दर्जे बुलंद कर देगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाखबर है। ५८ ११

२८५ सिफ़ारिश में जिम्मेदारी

१ जो नेक बात की सिफ़ारिश करेगा, उसको उसमें हिस्स: मिलेगा। और जो कोई बुरी बात की सिफ़ारिश करेगा वह उसमें हिस्स: पायेगा। और अल्लाह हर चीज पर नजर रखने वाला है। ४ ८५

२८६ मस्लहतें

१ ऐ ईमानवालो ! जब तुम सरगोशी करो तो गुनाह और ज्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशी न करो। नेकोकारी और तक़वा के लिए मस्लहत करो। और अल्लाह से डरते रहो। उसीके पास तुम सब जमा किये जाओगे।

२ क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह जानता है, जो कुछ आस्मानों में है, जो कुछ जमीन में है। कोई मस्लहत तीन आदमियों की ऐसी नहीं जिसमें वह अल्लाह चौथा न हो। और न पाँच आदमियों की सरगोशी जिसमें वह छठ्ठा न हो। और न उससे कम और न ज्यादः। मगर वह उनके साथ होता है। ख्वाह वह कहीं भी हों। फिर वह उनको क़ियामत के दिन उनके सब कामों की खबर देगा। बेशक अल्लाह हर चीज को जानता है। ५८ ६ और ७

सरगोशी—कानाफूसी, मस्लहत।

७ इन्सान और उसकी फ़ित्‌रत

मनुष्य और उसका स्वभाव

२५ इन्सान

९० इन्सान की खुसूसियतें

२८७ इन्सान की इम्तियाज़ी सलाहियत—शुरूक

१ जब तेरे रब ने फ़िरिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नायब बनानेवाला हूँ। तो फ़िरिश्तों ने कहा कि क्या तू ज़मीन में किसी ऐसे को मुक़र्रर करेगा जो उसमें फ़साद पैदा करे और खून बहाये? हालाँकि हम तेरी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं। और तेरी तक़्दीस करते हैं। कहा बेशक मैं जानता हूँ, जो कुछ तुम नहीं जानते।

२ और अल्लाह ने आदम को सब चीज़ों के नाम सिखा दिये। फिर उनको फ़िरिश्तों के सामने पेश किया। और कहा मुझे उनके नाम बताओ अगर तुम सच्चे हो।

३ उन्होंने कहा पाक है तू। हमको तूने जो कुछ सिखाया उसके सिवा हम कुछ नहीं जानते। बेशक तू ही जाननेवाला हिक्मतवाला है।

४ कहा ऐ आदम! फ़िरिश्तों को उनके नाम बता दे। तो जब उसने उनको उनके नाम बता दिये तो अल्लाह ने कहा क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आस्मानों और ज़मीन की मख़्फ़ी हक़ीक़तें जानता हूँ? जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो वह भी जानता हूँ। और जो कुछ छुपाते हो उसे भी।

५ और जब हमने फ़िरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन सबने सज्दा किया बजुज़ शैतान के। उसने इन्कार किया। और अपनी बड़ाई के घमंड में पड़ गया। और नाफ़र्मानों में शामिल हो गया। —— २ ३०–३४

सलाहियत–योग्यता   खून–बाबी   तस्बीह करना–पुनीतता का वर्णन करना   मख़्फ़ी–गुप्त।

२८८ इन्सान को अल्लाह ने दोनों हाथों से बनाया

१ कहा ऐ इब्लीस ! जिस चीज़ को मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया उसको सज्दः करने से तुझे क्या चीज़ मानिअ् हुई ? ३८ ७५

२८९ तीन ख़ास निअ्मतें—किताब, मीज़ान और लोहा

१ हमने अपने रसूलों को खुली निशानियाँ देकर भेजा है। और उनके साथ हमने किताब उतारी है। और मीज़ान उतारी ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें। और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ा ख़तरा है, और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं। ५७ २५

२९० अल्लाह की अमानत

१ हमने यह अमानत आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की। सबने उसको उठाने से इन्कार कर दिया। और उससे डर गये। और इन्सान ने उसको उठा लिया। वाक़ई यह बड़ा बेबाक और बड़ा नादान है। ३३ ७२

२९१ दो सिरे—बेहतरीन और बदतरीन

१ वाक़ई हमने इन्सान को बेहतरीन साख्त में पैदा किया।
२ फिर हमने उसको लौटा दिया निचलों में सबसे ज़्यादः निचला बनाकर। ९५ ४ ५

२९२ तीन दर्जे—रज़ील औसत और अफ़्ज़ल

१ तो बाज़े उनमें अपनी जान पर ज़ुल्म करनेवाले हैं। और बाज़े उनमें मियानारव हैं। और बाज़े उनमें अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों में सबसे अच्छे हैं। यही बड़ा फ़ज़्ल है। ३५ ३२

मीज़ान—तराज़ू ख़तरा—भय बेबाक—निर्भय बेहतरीन और बदतरीन—सर्वोत्तम तथा सर्वहीन साख्त—बनावट रज़ील—नीच अफ़्ज़ल—उच्च औसत—मध्यम।

२९३ इन्सान की तख़्लीक़ का मक़सद

१ मैंने जिन्न और इन्सान को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया कि वह मेरी बंदगी करें।

२ मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता। और न यही चाहता हूँ, कि वह मुझे खिलायें।

३ बेशक अल्लाह ही सबको रोज़ी देनेवाला ज़ोरावर, और ताक़तवर है। ५१ ५६–५८

६१ इन्सान की ख़ामियाँ

२९४ बेहिम्मत

१ अगर फ़ायदा क़रीब होता और सफ़र मा'मूली होता तो वह लोग ज़रूर तेरे साथ हो लेते। मगर उन पर तो यह मसाफ़त बहुत कठिन हो गई। ९ ४२

२९५ तजुर्बे से सबक़ नहीं लेते

१ क्या उन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की है, जिससे कि वह देखते कि उनसे पहलों का क्या अंजाम हुआ? वह उनसे क़ुव्वत में ज़्यादा थे। और उन लोगों ने ज़मीन को जोता-बोया था। और जितना इन्होंने इसको आबाद किया है, उससे ज़्यादा उन्होंने इसको आबाद किया था। उनके पास उनके रसूल खुली निशानियाँ लेकर आये। सो अल्लाह उन पर ज़ुल्म करनेवाला न था। बल्कि वह ख़ुद अपने-आप पर ज़ुल्म कर रहे थे।

३० ९

२९६ तलव्वुन-मिज़ाज

१ अगर हम इन्सानों को अपनी तरफ़ से रहमत का मज़ा चखा देते हैं, फिर उससे उसको छीन लेते हैं तो वह नाउम्मीद और नाशुकरा हो जाता है।

ख़ामी—कमी मसाफ़त—सफ़र तलव्वुन मिज़ाज—अस्थिरचित्त।

२ और अगर हम उसको तकलीफ़ के बा'द को उसको पहुँची है, निअ्मत का मज़ा चखा दें तो वह कहने लगता है, कि मेरे सारे दुख-दर्द दूर हो गये। बेशक वह बड़ा इतरानेवाला शेख़ी बाज़ है। ११.१.१०

२९७ हरीस

१ मैंने उसको अकेला पैदा किया।
२ और धाप रहनेवाले बेटे।
३ और उसके लिए हर तरह की तय्यारी कर दी।
४ फिर भी हवस रखता है, कि मैं उसे और बढ़ाऊँ। ७४.१२-१५

२९८ बहिस्तिमाक

१ बेशक इन्सान बेसब्र पैदा किया गया है।
२ जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है, तो घबरा जाता है।
३ और जब उसको फ़ायदा पहुँचता है, तो (दूसरों को उसमें हिस्सा देने में) कुड़कुड़ाता है। ७०.१९-२१

२९९ बहिस और ग़ाफ़िल

१ क्या ये लोग देखते नहीं कि वह हर साल एक बार या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं। फिर भी वह न तो तौबा करते हैं। और न कोई सबक़ लेते हैं। ९.१२६

३ बुराई की तरफ़ जल्द बढ़नेवाला

१ (सालिह अलैहिस्सलाम ने कहा) ऐ मेरे लोगो! भलाई से पहिले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो। अल्लाह से मुआफ़ी क्यों नहीं माँगते। ताकि तुम पर रहम किया जावे। २७.४६

बेतलबक़ाक़—शहरमहीन बेहिस—आफ़तहीन निर्लज्ज।

९२ बुराई का इन्सान

२०१ नफ़स बुराई सिखाता है

१ मैं अपने नफ़्स की बराअत नहीं करता। बेशक इन्सान की ख्वाहिश (नफ़्स) तो बुराई का हुक्म देती है। इल्ला यह, कि किसी पर मेरे रब की रहमत हो। बेशक मेरा परवरदिगार बख्शनेवाला मेहरबान है। १२ ५३

२०२ अगर अल्लाह सज़ा देता

१ अगर अल्लाह लोगों को उनके आ'माल की पादाश में पकड़ता तो रूए-ज़मीन पर एक मुतनफ़्फ़िस न छोड़ता। ३५ ४५

२०३ भलाई अल्लाह की और बुराई तेरी

१ जो भलाई तुझे पहुँची है, वह अल्लाह की तरफ़ से हुई है। और जो मुसीबत तुझको पहुँची है, वह तेरे नफ़्स की तरफ़ से है। ४ ७९

९३ इन्सान फ़रामोश

२०४ ऐ इन्सान! तू नाशुक्रा क्यों हुआ?

१ ऐ इन्सान! तुझको किस चीज़ ने तेरे करीम परवरदिगार से बहका दिया?
२ जिसने तुझको पैदा किया। फिर तुझे ठीक किया। फिर तुझे बराबर किया।
३ जिस सूरत में चाहा तुझे तरतीब दिया। ८२ ६—८

२०५ नाशुक्रगुज़ार

१ बाक़ई इन्सान अपने परवरदिगार का नाशुक्रा है।
२ और बिला शुबा इस बात पर गवाह भी है।

बराअत—प्रशंसा नफ़्स—आत्मा पादाश—सज़ा मुतनफ़्फ़िस—प्राणी।

३ और वह माल की मुहब्बत में पक्का है।

४ भला वह नहीं जानता कि जब उठाया जायगा जो कुछ कब्रों में है।

५ और हासिल किया जायगा जो कुछ सीनों में है।

६ बेशक उनका परवरदिगार उस रोज़ उनके हाल से खूब आगाह है। १० ९–११

१०६ मुसीबत में अल्लाह की याद। और खुशी में फ़रामोशी

१ जब इन्सान को तकलीफ़ पहुँचती है तो वह लेटे बैठे खड़े हमको पुकारता है। फिर जब हम उससे वह तकलीफ़ हटा देते हैं, तो ऐसा चल निकलता है, गोया किसी तकलीफ़ के पहुँचने पर उसने हमको पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुज़र जानेवालों के लिए, उनके करतूत खुशनुमा बना दिये गये।

१० १२

१०७ समंदर और किनारे की मिसाल

१ वह अल्लाह ही है, जो तुमको खुश्की और तरी में फिराता है। यहाँ तक कि जब तुम किश्तियों में होते हो और किश्तियाँ लोगों को लेकर मुआफ़िक़ हवा से चलती हैं, और लोग उससे खुश होते हैं। कि उन किश्तियों पर तुंद हवा आती है। और उन पर हर तरफ़ से मौजें उठी चली आती हैं। और वह समझ लेते हैं, कि वह घिर गये। तो वह दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उससे दुआएँ माँगने लगते हैं। कि अगर तूने हमको इससे बचा लिया तो हम ज़रूर शुक्र-गुज़ार हो जायेंगे।

फ़रामोशी–विस्मरण खुशनुमा–प्रियदर्शन खुश्की और तरी–जल-थल तुंद–तेज़ कुपित।

२ फिर जब अल्लाह उनको बचा लेता है, तो वह फ़ौरन् ही ज़मीन में नाहक़ सरकशी करते हैं। ऐ लोगो! तुम्हारी यह सरकशी तुम्हारे ही ख़िलाफ़ है। तुमयही चंद रोज़ ज़िन्दगी का मज़ा उठा लो। फिर हमारे ही पास तुमको लौटकर आना है। तो हम तुम्हें बतला देंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे। १० २२ २३

१०८ यह मेरी असलियत है!

१ इन्सान ख़ुशहाली की दुआ माँगने से थकता नहीं। और अगर उसको तकलीफ़ पहुँचती है, तो वह बहुत मायूस नाउम्मीद होता है।

२ और किसी तकलीफ़ के बा'द जो उसको पहुँचती है, हम उसे अपनी रहमत का मज़ा चखा दें। तो वह चखकर कहेगा कि 'यह मेरे वास्ते है'।

३ और जब हम इन्सान पर नियामतें भेजते हैं, तो वह मुँह फेर लेता है और पहलूतही करता है। और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है, तो वह लम्बी-चौड़ी दुआवाला हो जाता है। ४१ ४९ ५० ५१

२४ मोमिन और मुन्किर

१०९ भलाई पर यक़ीन रखनेवाला और भलाई पर यक़ीन न रखनेवाला

१ क़सम है रात की जब छा जाये।
२ और दिन की जब रौशन हो जाये।
३ और उस चीज़ की, जिसने पैदा किये नर और मादा।
४ बेशक तुम्हारी सभी मुख़्तलिफ़ है।

ख़ुशहाली—अच्छी अवस्था पहलूतही—उपेक्षा, अलग रहना सभी—दौड़ धूप, प्रयास।

५ तो जिसने अल्लाह की राह में दिया। और परहेज़गारी इख़्तियार की।

६ और भली बात की तसदीक़ की।

७ तो हम उसके लिए आसानियाँ बहम पहुँचायेंगे।

८ और जिसने बुख़्ल किया। और बेपर्वाई बरती।

९ और भली बात को झुठलाया।

१० तो हम उसको आसानी से सख़्ती में (दोज़ख़ में) पहुँचा देंगे।

११ और उसका माल उसके काम न आयेगा जब वह गढ़े में गिरेगा।

१२ बेशक रहनुमाई हमारे ज़िम्मे है।

१३ बेशक दुनिया और आख़िरत दोनों हमारी ही हैं।

१४ तो हमने तुमको एक भड़कती हुई आग से आगाह कर दिया।

१५ उसमें वही गिरेगा जो बदबख़्त है।—

१६ जिसने झुठलाया और मुँह फेरा।

१७ और उस आग से वह बचा लिया जायगा जो बड़ा परहेज़गार है।

१८ जो अपना माल अल्लाह की राह में देता है ताकि पाक हो जाये।

१९ और उस पर किसीका एहसान नहीं है कि (जिसका इस तरह) बदला दिया जा रहा है।

२० इल्ला यह, कि उसको अपने रब्बे-आ'ला की रज़ा मक़सूद है।

२१ और अनक़रीब वह राज़ी हो जायगा। ९२ १-२१

बहम—एक साथ बदबख़्त—अभागा इल्ला यह कि—सिवाय इसके कि रब्बे-आ'ला उच्च प्रभु मक़सूद—अभीष्ट।

८ रसूल

५ तो जिसने अल्लाह की राह में दिया। और परहेज़गारी इख़्तियार की।

६ और भली बात की तसदीक़ की।

७ तो हम उसके लिए आसानियाँ बहम पहुँचायेंगे।

८ और जिसने बुख़्ल किया। और बेपरवाई बरती।

९ और भली बात को झुठलाया।

१० तो हम उसको आसानी से सख़्ती में (दोज़ख़ में) पहुँचा देंगे।

११ और उसका माल उसके काम न आयेगा जब वह गढ़े में गिरेगा।

१२ बेशक रहनुमाई हमारे ज़िम्मे है।

१३ बेशक दुनिया और आख़िरत दोनों हमारी ही हैं।

१४ तो हमने तुमको एक भड़कती हुई आग से आगाह कर दिया।

१५ उसमें वही गिरेगा जो बदबख़्त है।—

१६ जिसने झुठलाया और मुँह फेरा।

१७ और उस आग से वह बचा लिया जायगा जो बड़ा परहेज़गार है।

१८ जो अपना माल अल्लाह की राह में देता है ताकि पाक हो जाये।

१९ और उस पर किसीका एहसान नहीं है कि (जिसका इस तरह) बदला दिया जा रहा है।

२० इल्ला यह, कि उसको अपने रब्बे-आ'ला की रज़ा मत्लूब है।

२१ और अनक़रीब वह राज़ी हो जायगा। ९२.१-२१

[illegible]—एक काम बदबख़्त—अभागा इल्ला यह कि—सिवाय इसके कि रब्बे-आ'ला उच्च प्रभु मत्लूब—अभीष्ट।

२६ रसूल

५५ रसूल, सबकी बहबूदी के लिए

३१० रसूल अपनी मादरी ज़बान में बोलते हैं

१ हमने कोई भी रसूल भेजा तो उसकी क़ौम की ज़बान बोलनेवाला भेजा। ताकि वह उन्हें अच्छी तरह खोलकर समझा सके। १४ ४

३११ हर क़ौम के लिए रसूल

१ हरएक जमाअत का एक रसूल है। फिर जब उनका वह रसूल आता है, तो उनके दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला होता है। और उन पर ज़ुल्म नहीं होता। १० ४७

५६ रसूल इन्सान ही हैं

३१२ पहले के रसूल भी इन्सान ही थे

१ हमने तुमसे पहले सिर्फ़ आदमियों को ही पैग़म्बर बनाकर भेजा है, जिनको हम वह्य भेजते थे। पस अगर तुम्हें मा'लूम न हो तो ज़िक्रवालों से पूछो।

२ और हमने उनके बदन ऐसे नहीं बनाये थे कि वह खाना न खाते हों। और न वह हमेशा रहनेवाले थे। २१ ७-८

३१३ बाल-बच्चों में रहनेवाले

१ तुमसे पहले हम बहुत से पैग़म्बर भेज चुके हैं। और हमने उनको बीवियों और बच्चोंवाला किया। और किसी पैग़म्बर के लिए मुमकिन न था कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी ले आये। हरएक वा'द लिखा हुआ है। १३ ३८

रसूल—प्रेषित बहबूदी—कल्याण वा'द—अभिवचन।

२ उनके रसूलों ने उनसे कहा हम तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं। मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिन पर चाहता है, इहसान करता है। और यह हमारे इख़्तियार में नहीं कि बग़ैर अल्लाह के हुक्म के तुम्हारे पास कोई सनद ला सकें। और अल्लाह पर ही ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

३ और हमको क्या हुआ कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें। जब कि उसने हमको हमारी राहें दिखा दीं। और जो अज़ीयतें तुम हमको दे रहे हो हम उन पर ज़रूर सब्र करेंगे। और भरोसा करनेवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

१४ १०–१२

९७ रसूलों के चन्द ख़ुसूसी औसाफ़

३१७ साबित-क़दम

१ कितने ही ऐसे नबी हैं, जिनके साथ मिलकर बहुत से ख़ुदा परस्त लड़े। सो अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं तो वह न हिम्मत हारे, न कमज़ोर हुए, और न वह दबे। और अल्लाह साबित-क़दम रहनेवालों से मुहब्बत करता है।

२ और वह बोले तो सिर्फ़ यह बोले 'ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे गुनाहों को और हमारे काम में ज़्यादती होती हो उसको मुआफ़ कर। हमारे क़दम जमा दे और मुनकिरों पर हमको मदद दे।

३ फिर अल्लाह ने उनको दुनिया का सवाब भी दिया। और आख़िरत का सवाब भी दिया। और अल्लाह नेक काम करने वालों को पसंद करता है।

३ १४६–१४८

अज़ीयतें—द [illegible] ज़ुल्मी—निर्दयी [illegible] साबित-क़दम—दृढ़निश्चयी।

३१४ तमाम रसूलों को शैतान से साबिका पड़ा

१ तुमसे पहले किसी ऐसे रसूल और नबी को नहीं भेजा, कि जब कभी उसने तमन्ना की तो शैतान ने उस तमन्ना में वसवसा' डाला न हो। पस अल्लाह शैतान के वसवसे' को हटा देता है। और अपनी निशानियों को मुहकम करता है। और अल्लाह जाननेवाला और हिक्मतवाला है। २२.५२

३१५ अल्लाह के रसूल इन्सान ही क्यों ?

१ लोगों के पास जब कभी हिदायत आयी तो उनको ईमान से किसी चीज ने नहीं रोका। मगर उनके इस क़ौल ने कि अल्लाह ने इन्सान को पैग़म्बर बनाकर भेजा है।

२ कह, अगर ज़मीन में फ़िरिश्ते इतमिनान से चल-फिर रहे होते तो हम ज़रूर किसी फ़िरिश्ते को उन पर पैग़म्बर बनाकर, आस्मान से उतारते। १७.९४-९५

३१६ रसूल इन्सान हैं, मगर अल्लाह के मुरसल हैं

१ उनके रसूल बोले क्या अल्लाह के बारे में तुमको शक है, जो आस्मानों और ज़मीन का बनानेवाला है? वह तुम्हें बुला रहा है। ताकि तुम्हारे क़ुसूर मुआफ़ करे, और तुमको एक वक़्ते मुक़र्रर तक मुहलत दे। उन्होंने कहा। तुम तो हम जैसे ही इन्सान हो। तुम उसकी बंदगी से रोकना चाहते हो जिसकी बंदगी हमारे बाप-दादा करते रहे। सो तुम हमारे पास कोई सनद ले आओ।

साबिका—संबंध मुहकम—पक्का, मज़बूत इतमिनान से—शांति से मुरसल—कृपापात्र सनद—प्रमाणपत्र।

२ उनके रसूलों ने उनसे कहा हम तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं। मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिन पर चाहता है, इहसान करता है। और यह हमारे इख्तियार में नहीं कि बगैर अल्लाह के हुक्म के तुम्हारे पास कोई सनद ला सकें। और अल्लाह पर ही ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

३ और हमको क्या हुआ कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें। जब कि उसने हमको हमारी राहें दिखा दीं। और जो अज़ीयतें तुम हमको दे रहे हो हम उन पर बराबर सब्र करेंगे। और भरोसा करनेवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

१४ १०-१२

४७ रसूलों के चंद खुसूसी अवसाफ़

११७ साबित-क़दम

१ कितने ही ऐसे नबी हैं, जिनके साथ मिलकर बहुत से ख़ुदा परस्त लड़े। तो अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं तो वह न हिम्मत हार न कमज़ोर हुए, और न मद दबे। और अल्लाह साबित-क़दम रहनेवालों से मुहब्बत करता है।

२ और वह बोले तो सिर्फ यह बोले ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे गुनाहों को और हमारे काम में ज़्यादती होता हो उसको मुआफ़ कर। हमारे क़दम जमा दे और मुन्किरों पर हमारी मदद दे।

३ फिर अल्लाह ने उनको दुनिया का सवाब भी दिया। और आख़िरत का सवाब भी दिया। और अल्लाह नेक काम करने वालों को पसंद करता है। ३ १४६-१४८

अंग्रेज़ी-१४१ कुरान कुर्बानी-दिलेरी भावार्थ-हुक्म दाखिल न ज़-र्रापरस्ती।

११८ धुतकार

१ तुमसे पहले बहुत से पैगंबर झुठलाये जा चुके। तो उन्होंने झुठलाये जाने पर, और ईज़ा दिये जाने पर सब्र किया। यहाँ तक कि उनको हमारी मदद पहुँच गयी। और अल्लाह की बातों को बदलनेवाला कोई नहीं। और बेशक तेरे पास पैगंबरों की खबरें आ चुकी हैं।

२ और अगर उन लोगों की बेरुखी तुम पर गिराँ है, तो अगर कुछ तुमसे हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूँढ ले या आस्मान में सीढ़ी ढूँढ फिर उनके पास कोई निशानी ले आ। और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको ज़रूर हिदायत पर जमा कर देता। पस तू नादान मत बन। ६ ३४-३५

११९ मुनाफ़िक़ इस्लाम में हिदायत करनेवाले

१ जब उनमें से एक जमाअत ने कहा तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करनेवाला है या सख्त सज़ा देनेवाला है। उन्होंने जवाब दिया तुम्हारे रब के हुज़ूर, मा'ज़रत पेश करने के लिए और इसलिए कि शायद वह बचें। ७ १६४

बेरुखी करना—मुँह फेरना　　मुनाफ़िक़—विरोधी।

५८ रसूलों के क़िस्सों से फ़ायदे

३२० रसूलों की कहानियाँ क्यों कहीं ?

१ यह पैग़म्बरों के क़िस्से जो हम तुम्हें सुनाते हैं। यह वह चीज़ें हैं, जिनके ज़रीए हम तेरे दिल को मज़बूत करते हैं। और इसमें तेरे पास हक़ आया है। और ईमानवालों के लिए नसीहत और याद-दहानी है। ११ १२०

५९ नूह अलैहिस्सलाम

३२१ नूह की नजात

१ नूह ने हमें पुकारा था। पस हम बेहतरीन फ़र्याद-रस[^1] हैं।
२ हमने उसको और उसके घरवालों को बड़ी भारी घबराहट से नजात दी। ३७ ७५-७६

३२२ "नाफ़र्मान बेटा तेरे कुन्बे से बाहर है"

१ नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा। कहा ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है। और बेशक तेरा वा'दः सच्चा है। और तू सब हाकिमों में बड़ा बेहतर हाकिम है।
२ ख़ुदा ने फ़र्माया ऐ नूह! वह तेरे घरवालों में से नहीं है। यक़ीनन्, वह एक बिगड़ा हुआ काम है। सिहाज़ उस बात का सवाल मुझसे न कर जिसका तुझे इल्म नहीं। मैं तुझे नसीहत करता हूँ, कि तू जाहिलों में से न हो। ११ ४५ ४६

---

[^1]: फ़र्याद-रस—अर्थात् सुननेवाला दुखिया—न्यायकर्ता।

७० इब्राहीम अलैहिस्सलाम

१२३ गुलजारे-इब्राहीम

१ (इब्राहीम ने) कहा—क्या तुम अल्लाह के सिवा ऐसे की शिबादत करते हो जो न तुम्हारा कुछ भला कर सकता है, न कुछ बुरा कर सकता है?

२ तुफ़ है तुम पर, और उन चीजों पर जिनकी तुम अल्लाह के सिवा शिबादत करते हो। क्या तुम समझते नहीं?

३ वह लोग एक-दूसरे से बोले अगर तुम कुछ करनेवाले हो तो इसको जला दो। और अपने मा'बूदों की मदद करो।

४ हमने कहा ऐ आग! तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती हो जा। २१ ६६–६९

१२४ इब्राहीम का अल्लाह पर ईमान

१ इब्राहीम ने कहा भला देखते हो जिसकी तुम शिबादत करते हो।

२ तुम और तुम्हारे पहिले के बाप-दादा।

३ पस वाक़ई वह मेरे दुश्मन हैं। मगर परवरदिगारे-आलम

४ कि जिसने मुझे पैदा किया। और वही मेरी रहनुमाई करता है।

५ और वही है जो खिलाता है, पिलाता है।

६ और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही शिफ़ा देता है।

७ और वही है जो मुझको मारेगा। फिर जिलायेगा।

८ और जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ, कि क़ियामत के दिन मेरी ख़ता मुआफ़ करेगा।

गुलजार-फूल का बगीचा परवरदिगारे-आलम-जगत्प्रभु रहनुमाई-मार्गदर्शन शिफ़ा-आरोग्य।

९ ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे हिक्मत दे। और मुझे नेकों में दाखिल कर।
१० और आनेवालों में मेरे वास्ते सचाई की ज़बान अता कर।
११ और मुझको जन्नते-नईम के वारिसों में शामिल कर।
१२ और मेरे बाप को मुआफ कर कि वह गुमराहों में से है।
१३ और जिस दिन लोग उठाये जायेंगे उस दिन मुझे रुस्वा न कर।
१४ जिस दिन कि माल और औलाद काम न आयेंगे।
१५ रुस्वा न कर, कि अल्लाह के हुजूर में कल्बे-सलीम (चंगा दिल) लेकर आये। २६ ७५-८६

३२५ बाप-बेटे का मुकालमः

१ बेशक वह (इब्राहीम) बहुत सच्चा नबी था।
२ जब उसने अपने बाप से कहा ऐ मेरे बाप! तू उसकी इबादत क्यों करता है, जो न सुनता है न देखता है, न तेरे कुछ काम आता है?
३ ऐ मेरे बाप! मेरे पास वह इल्म आया है जो तेरे पास नहीं। तो तू मेरे कहने पर चल। मैं तुझे सीधी राह दिखा दूँगा।
४ ऐ मेरे बाप! शैतान की इबादत न कर। बेशक शैतान रहमान का नाफ़र्मान है।
५ ऐ मेरे बाप! मैं डरता हूँ, कि रहमान की तरफ़ से तुझ पर कोई अज़ाब आ जाये तो तू शैतान का साथी हो जाये।

नईम—निआमत अच्छी रुस्वा—बदनाम हुजूर—उपस्थिति मुकालमा—संवाद।

६ इब्राहीम के बाप ने कहा ऐ इब्राहीम ! क्या तू मेरे माबूदों से फिरा हुआ है ? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझको ज़रूर संगसार करूँगा। और मेरे पास से हमेशा के लिए दूर हो जा।

७ इब्राहीम ने कहा सलाम अलैक। मैं अपने परवरदिगार से तेरे लिए मग़फ़िरत तलब करूँगा। बेशक वह मुझ पर बहुत मेहरबान है।

८ और मैं तुम लोगों से और जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो उनसे किनारा करता हूँ। और मैं अपने परवरदिगार की इबादत करूँगा। मुझे उम्मीद है कि अपने परवरदिगार की इबादत करके मैं बदनसीब न हूँगा।

१९ ४१-४८

१२६ नरम दिल इब्राहीम

१ इब्राहीम का अपने बाप के लिए बख़्शिश की दुआ करना सिर्फ़ उस वादे के सबब था कि जो उसने उससे किया था। फिर जब उस पर ज़ाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है, तो उससे बे-ताल्लुक़ हो गया। बेशक इब्राहीम बड़ा रहम-दिल था। हलीम था।

९ ११४

१२७ इब्राहीम अलैहिस्सलाम के फ़र्ज़न्द—इस्माईल

१ जब वह लड़का (इस्माईल) उसके (इब्राहीम) साथ दौड़ने की उम्र को पहुँचा तो इब्राहीम ने कहा बेटा ! मैं ख़्वाब में क्या देखता हूँ, कि तुझे ज़बह कर रहा हूँ। फिर देख तेरी क्या राय है ? बोला ऐ बाप ! तुझको जो हुक्म किया जाता है उसकी ता'मील कर। अगर अल्लाह ने चाहा तो तू मुझे सब्र करनेवाला पायेगा।

संगसार करना—पथराव करना, पत्थर मारकर मार डालना   रहम-दिल—रहमदिल-दर्दमन्द   ज़बह करना—काटना।

२ फिर जब दोनों मुतीअ हुए और (इब्राहीम ने) उसको माथे के बल गिराया।

३ तो हमने पुकारा कि ऐ इब्राहीम।

४ बेशक तूने ख़्वाब को सच कर दिखाया। बेशक हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

५ बेशक यह बड़ी खुली हुई आज़माइश थी। ३७ १०२–१०६

७१ मूसा अलैहिस्सलाम

१०८ मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ मक़बूल

१ मूसा ने कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिए मेरा सीना खोल दे।

२ और मेरा काम मेरे लिए आसान कर।

३ और मेरी ज़बान से गिरह खोल दे।

४ कि लोग मेरी बात समझें।

५ और मेरे वास्ते मेरे कुन्बे से एक मुआविन मुक़र्रर कर।

६ मेरे भाई हारून को।

७ उसीसे मेरी कुव्वत मज़बूत कर।

८ और उसको मेरे काम में शरीक कर।

९ ताकि हम तेरी पाकी बहुत बयान करें।

१० और तुझको बहुत याद करें।

११ बेशक तू हमको देखनेवाला है।

१२ कहा ऐ मूसा! तूने जो माँगा तुझे दिया गया। २० २५–३६

कुन्बा—घराना मुआविन—मददगारी।

७२ ईसामसीह अलैहिस्सलाम

१२९ ईसा अलैहिस्सलाम का इज़हार कि वह हमेशा बा-बरकत है

१ (ईसा) बोले। बेशक मैं अल्लाह का बंदा हूँ। उसने मुझे किताब दी। और मुझको नबी बनाया।

२ और मुझे बरकतवाला बनाया। जहाँ मैं कहीं रहूँ। और मुझको सलात और ज़कात की ताकीद की है, जब तक जीता रहूँ।

३ और अपनी माँ के साथ मुझे अच्छा सुलूक करनेवाला बनाया। और मुझको जब्र करनेवाला बद-बख़्त नहीं बनाया।

४ और सलाम (अमनो रहमत) है, मुझ पर। जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूँगा और जिस दिन उठूँगा मैं ज़िन्दः होकर।

५ यह है ईसा मर्यम का बेटा। १९.३०–३४

१३१ ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर चढ़ाया जाना एक भ्रम

१ उनके इस कहने पर कि हमने मर्यम के बेटे ईसामसीह रसूलुल्लाह को मार डाला। (हमने उनको सज़ा में मुब्तला किया)। और उन्होंने उसको न मारा न उसको सूली दी बल्कि वह धोखे में डाल दिये गये। और जो लोग इस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं, वह ज़रूर इसमें शक में हैं। उनको इसका कोई इल्म नहीं। वह सिर्फ़ गुमान पर चल रहे हैं। और यक़ीनन् उन्होंने उसको मारा नहीं।

२ बल्कि उसको अल्लाह ने अपनी तरफ़ उठा लिया। और अल्लाह ग़ालिब हिकमतवाला है। ४.१५७–१५८

बा-बरकत—धन्य   जब्बार—आततायी, अत्याचार   मुश्तबा—संदेह पैदा हुआ।

१३१ यहया अलैहिस्सलाम मीसामसीह् के मुसदिक

१ हमने कहा ऐ यह्या किताब को मजबूती से थाम ले। और हमने उसको लड़कपन में हिकमत अता की।

२ और अपने पास से रहमदिली और पाकीजगी दी। और वह मुत्तकी था।

३ और अपने माँ-बाप से नेक सुलूक करनेवाला था। और सरकश और नाफ़रमान नहीं था।

४ और सलाम (शान्ति रहमत) है उस पर। जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन जिन्दा होकर उठेगा। १६ १२–१५

१३२ ईसा अलैहिस्सलाम के पैरव

१ ईमान रखनेवालों की दोस्ती में क़रीबतर तू उन लोगों को पायेगा जो कहते हैं कि नसारा हैं। यह इसलिए कि बा'ज़ उनमें आलिम हैं। और इबादत करनेवाले दुर्वेश हैं। और वह तकब्बुर नहीं करते।

२ और जब वह उस कलाम को सुनते हैं, जो रसूल पर उतारा गया तो तू देखेगा कि उनकी आँखें आँसुओं से उमड़ती हैं। इस वजह से कि उन्होंने हक़ को पहचाना है। वह कहते हैं, 'ऐ परवरदिगार! हम ईमान लाये हैं। हमको शाहिदों के साथ लिख ले। ५, ८५ ८६

७३ रसूल गैर-मुतज़किरा

१३३ रसूल, जिनका ज़िक्र नहीं हुआ

१ हमने तुमसे पहले बहुत पैगम्बर भेजे जिनमें बा'ज़ का ज़िक्र हमने तुमसे किया। और बा'ज़ वह हैं, जिनका ज़िक्र तुमसे नहीं किया । ४० ७८

२७ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

७४ ता'लीमे-नबी

१५४ पहली वह्य

१ पढ़ अपने परवरदिगार के नाम से जिसने पैदा किया।
२ पैदा किया इन्सान को जमे हुए खून से।
३ पढ़ और तेरा परवरदिगार बड़ा करीम है,
४ जिसने सिखाया क़लम से।
५ सिखाया इन्सान को जो वह नहीं जानता था। ९६ १–५

१५५ मे'राज

१ पाक है वह, जो ले गया एक रात अपने बंदे को मस्जिदुल्हराम से दूर की मस्जिद तक। जिसके माहौल को हमने बरकत दी है, ताकि उसको अपनी निशानियाँ दिखलायें। बेशक वह सुननेवाला देखनेवाला है। १७ १

१५६ बिला शुबा उसने देखा

१ यह तुम्हारा साथी दीवाना नहीं।
२ और वाक़ई उसने उसको खुले आसमान के किनारे पर देखा।
३ और वह ग़ैब की बातें बताने में बख़ील नहीं है। ८१ २२ २४

मे'राज—दिव्य प्रवास।
मस्जिदुल्हराम—पवित्र मस्जिद, मक्का शरीफ़ की मस्जिद।
माहौल—परिसर।
बिला शुबा—बेशक।
ग़ैब—अप्रकट।
बख़ील—कृपण।

७५ अल्लाह की हिदायत

२२७ पाबन्द इबादत का हुक्म

१ नमाज़ क़ायम कर सूरज ढलने से रात के अँधेरे तक और फ़ज्र के वक़्त क़ुर्आन पढ़। यक़ीनन् फ़ज्र का क़ुर्आन पढ़ना मशहूद है।

२ और रात को क़ुर्आन के साथ नमाज़े-तहज्जुद पढ़। यह तेरे लिए नफ़्ल (ज़ायद चीज़) है। उम्मीद है, कि तुझको तेरा रब मक़ामेमहमूद पर पहुँचा दे।

३ और कह, ऐ परवरदिगार! मुझे जहाँ भी ले जा सचाई के साथ ले जा। और जहाँ से भी निकाल सचाई के साथ निकाल और अपने पास से एक्तेदार दे (जो) मदद देनेवाला हो।

४ और कह, हक़ आ गया है। और बातिल मिट गया बेशक बातिल तो मिटनेवाला ही है। १७ ७८–८१

२२८ महज़ पैग़ाम पहुँचानेवाला

१ ख़्वाह कोई वा'दा जो हमने उनसे किया है, हम तुझको दिखला दें। ख़्वाह तुझको उठा लें। पस तेरा ज़िम्मा सिर्फ़ पहुँचा देना है। और हमारा काम हिसाब लेना है। १३ ४०

मशहूद है–उपस्थित किया गया नमाज़े तहज्जुद–आधी रात के बाद की नमाज़ महमूद–स्तुति-योग्य इक्तेदार–सत्ता, प्रतिष्ठा महज़–फ़क़त।

१६९ हिदायत तेरा काम नहीं

१ बेशक तू मुर्दों को सुना नहीं सकता। और बहरों को अपनी आवाज़ सुना नहीं सकता जब कि वह पीठ फेरकर चल दें।
२ और तू अन्धों को उनकी गुमराही से राह दिखानेवाला भी नहीं। तू तो सिर्फ़ उन्हींको सुना सकता है, जो हमारी निशानियों पर ईमान रखते हैं, फिर वह मुतीअ भी हैं। २७ ८०-८१

१७० मुहम्मद और अन्धा

—क्या जानता है कि रहमत किस पर होगी?—

१ त्योरी चढ़ाई, और मुँह फेरा।
२ कि उसके पास अन्धा आ गया।
३ और तुझे क्या मा'लूम है, शायद वह पाक हो जाता।
४ या सोचता तो समझाना उसके काम आता।
५ तो वह, जो पर्वा नहीं करता।
६ उसके तो तू दर पे है।
७ हालांकि तुझ पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि वह पाक नहीं होता।
८ और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आया।
९ और वह डरता है।
१० तो तू उससे तगाफ़ुल करता है। ८० १-१०

दर पे है–पीछे लगा है तगाफ़ुल–बेपर्वाही।

३४१ बिला ख़ौफ़ पैग़ाम पहुँचाओ

१ ऐ रसूल ! तुम पर तेरे रब की तरफ़ से जो कुछ उतारा गया है, उसे तू पहुँचा दे। और अगर तू न करे, तो तूने उसका पैग़ाम नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तुमको (मुख़ालिफ़) आदमियों से बचा लेगा। ५ ७०

३४२ कोई कुछ कहे, तू मरने तक इबादत कर

१ यक़ीनन हम जानते हैं, कि उनकी बातों से तेरा दिल तंग हो जाता है।

२ पस तू अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान कर। और सज्दा करनेवालों में हो जा।

३ और अपने रब की इबादत किये जा। यहाँ तक कि तुमको मौत आ जाये। १५ ९७—९९

३४३ आख़िरी फ़ैसला करने तक साथियों से मश्वरा कर

२ यह अल्लाह की रहमत है, कि तू उन लोगों के लिए नरम दिल वाक़िअ हुआ है। वर्ना अगर तू तुन्दख़ू सख़्त दिल होता तो वह तेरे गिर्दो-पेश से छट जाते। तो तू उनको मुआफ़ कर। और उनकी बख़्शिश की दुआ कर। और काम में उनसे मश्वरा ले। फिर जब तू अज़्म कर ले तो फिर अल्लाह पर भरोसा कर। बेशक अल्लाह भरोसा करनेवालों को पसंद करता है। ३ १५९

३४४ कोशिश कर, अल्लाह की याद के साथ

१ हमने तेरे लिए तेरा सीना खोल नहीं दिया ?
२ और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।
३ जिस बोझ ने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

तुन्दख़ू—गुस्सैल-क्रोधी गिर्दो-पेश—दायें, बायें और सामने अज़्म—दृढ़ निश्चय।

४ और हमने तेरे लिए तेरा ज़िक्र बुलंद किया ।
५ तो बेशक मुश्किल के साथ आसानी है ।
६ बेशक मुश्किल के साथ आसानी है ।
७ फिर जब तू फ़ारिग़ हो जाये तो मेहनत कर ।
८ और अपने परवरदिगार की तरफ़ दिल लगा । ९४ १–८

१४५ निज के तजुर्बे की रौशनी में हिदायत

१ क़सम है चाश्त के वक़्त (चढ़े दिन) की ।
२ और रात की जब कि छा जाये ।
३ तेरे परवरदिगार ने तुझको न छोड़ा और न नाराज़ हुआ ।
४ और अलबत्ता पिछली (आइंदा) ज़िन्दगी बेहतर है तेरे लिए पहिली ज़िन्दगी से ।
५ और तेरा परवरदिगार तुझे ज़रूर देगा । फिर तू ख़ुश हो जायगा ।
६ क्या उसने तुझको यतीम नहीं पाया । फिर जगह दी ।
७ और पाया तुझे भटकता हुआ । पस राह दिखलाई ।
८ और तुझको मुफ़लिस पाया । फिर ग़नी कर दिया ।
९ पस जो यतीम हो उस पर जब्र न कर ।
१० और जो माँगनेवाला हो उसे मत झिड़क ।
११ और अपने परवरदिगार की निअमत का तज़किरा करता रह ।
९३ १–११

फ़ारिग़–मुक्त तज़किरा–चर्चा ।

७१ क़ौम का एहसान

२४६ पाँच तौहीदात (कुछ समझा)

१ कह, मैं तो सिर्फ़ एक बात समझाता हूँ कि तुम अल्लाह के वास्ते दो-दो एक-एक खड़े हो जाओ। फिर सोचो कि तुम्हारे इस साथी को कुछ दिवानगी नहीं। वह तो सिर्फ़ होशियार करनेवाला है। एक बड़ी आफ़त आने से पहिले।

२ कह, मैंने तुमसे जो मुआवज़ा माँगा हो तो वह तुम ही रखो। मेरा मुआवज़ा उसी अल्लाह के ज़िम्मे है। और वह हर चीज़ का देख रहा है।

३ कह, बेशक मेरा परवरदिगार हक़ नाज़िल करता है। और वह गैब की बातें जानता है।

४ कह, हक़ आया। और बातिल न पैदा करता है और न फेरकर लाता है।

५ कह, अगर मैं गुमराह हो जाऊँ तो सिर्फ़ अपनी ही जान के लिए गुमराह हूँगा। और अगर मैं हिदायत पाऊँ तो इसी सबब से कि मेरा परवरदिगार ने मुझको वह्य भेजी है। बेशक वह सुननेवाला है नज़दीक है। ३४ ४६–५०

[illegible]

७७ जीमाक़ की दौलत

१४७ नमाज़ में मदविम्मत

१ बेशक तेरा परवरदिगार जानता है कि तू और तेरे साथियों में से कुछ लोग (नमाज़ में) खड़े रहते हैं। दो तिहाई रात के क़रीब और आधी रात और तिहाई रात ।
७३ २

१४८ अल्लाह की खासी कुमक

१ अगर तुम नबी की मदद न करोगे तो यक़ीन जानो अल्लाह ने उसकी मदद उस वक़्त की है जिस वक़्त मुन्किरों ने उसको निकाल दिया था। जब कि वह दो में का दूसरा था दोनों गार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था "ग़म न करो" यक़ीनन् अल्लाह हमारे साथ है। उस वक़्त अल्लाह ने उस पर अपनी तरफ़ से सुकूने-क़ल्ब नाज़िल किया। और उसकी ऐसे लश्करों से मदद की कि जो तुमको नज़र नहीं आते थे। और मुन्किरों का बोल नीचा कर दिया। और अल्लाह ही का बोल-बाला रहा। और अल्लाह ग़ालिब है, हिक्मतवाला है। ९ ४

१४९ मिसाहत का बहतरीन नमूना

१ बेशक तुम्हारे लिए मा'नी उस शख़्स के लिए, जो अल्लाह की और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बहुत याद करता है, रसूलुल्लाह के अंदर एक उमदः नमूना है।
३३ २१

१५ रसूल और मोमिन का ता'ल्लुक़

१ ईमानवालों को नबी से अपनी जान से ज़्यादह लगाव है ।
३३ ६

मदविम्मत–लगभग कुमक–सहायता गार–गुफा उमदः–उत्तम।

१५५ आम राय से मज़हब नहीं

१ दुनिया में ज़्यादः लोग ऐसे हैं कि अगर तू उनका कहना मानने लगे तो वह तुमको अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे। वह सिर्फ़ गुमान पर चलते हैं। और सिर्फ़ क़ियास-आराइयाँ करते हैं।

६ ११६

७८ रसूल का मिशन

१५६ रसूल-अल्लाह की रहमत

१ और हमने तुमको नहीं भेजा मगर दुनिया के लोगों के लिए रहमत बनाकर। २१ १ ७

१५७ पाँच तरह का काम

१ ऐ नबी! बेशक हमने तुमको भेजा है। बतानेवाला (शाहिद) खुशख़बरी देनेवाला और होशियार करनेवाला बनाकर।

२ और अल्लाह की तरफ़ से उसके हुक्म से बुलानेवाला और रोशन-चिराग़ बनाकर। ३३ ४५ ४६

७९ दुरूद भेजो

१५८ मुहम्मद पर दुरूद भेजो

१ बेशक अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं। ऐ ईमानवालो! तुम दुरूद भेजो। और उस पर सलाम भेजो सलाम कहकर। ३३ ५६

मज़हब—मसलक मज़हब दुरूद—दुआ और सलाम, खासकर रसूल पर।

२८ फ़लसफ़ा

८० कायनात

३८९ तख़लीक़ बेसबब नहीं

१ हमने आस्मान जमीन और जो कुछ उसमें है उसको बेकार नहीं बनाया।

२ अगर हम कोई मशग़ला ही इख़्तियार करना चाहते तो उसको अपने पास ही से कर लेते अगर हमको यह करना होता।

२१ १६ १७

३६ तख़लीक़ बे-मानी नहीं

१ वह जो अल्लाह को याद करते हैं, उठते-बैठते और लेटते और आस्मान और जमीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं। (पुकार उठते हैं कि) अये परवरदिगार! तूने यह सब कुछ फ़ुज़ूल और बेमक़सद पैदा नहीं किया। ३ १९१

फ़लसफ़ा—तत्त्वज्ञान दर्शन कायनात—सृष्टि।

८२ रूह

२६१ तख़्लीक़ बा-मक़सद

१ क्या तुमने यह गुमान कर लिया है, कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है ? और यह कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाये जानेवाले हो ? २३ ११५

२६२ नींद मौत का तम्सील-मानन्द

१ वही है, जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है। और दिन में जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। फिर उठाता है तुमको कि मुक़र्रर मुद्दत पूरी हो। फिर उसीकी तरफ़ तुमको लौट जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो। ६ ६

२६३ नींद और मौत

१ अल्लाह खींच लेता है, जानों को उनकी मौत के वक़्त और जिनको मौत नहीं आई, उनको नींद की हालत में खींच लेता है। फिर जिन पर मौत मुक़र्रर हो चुकी है। उनको रोक लेता है। और बाक़ी को भेज देता है एक मुद्दते-मुक़र्रर के लिए। इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो सोच-विचार करनेवाले हैं। ३९ ४२

२६४ रूह के बारे में सवाल

१ यह लोग तुमसे रूह के बारे में पूछते हैं। कहो, रूह मेरे, परवरदिगार के हुक्म से है। तुम लोगों ने इल्म से कम ही हिस्सा पाया है।

रूह—जीवात्मा बा-मक़सद—सोद्देश्य, तख़्लीक़ तम्सील मानन्द—पूर्वानुमा क़ब्ज़ करना—खींचना मसाल—मसलाव।

२ और अगर हम चाहें, तो वह चीज़ ले जायें जो हमने तेरी तरफ़ वह्य की है । १७ ८५ ८६

३६५ ग़ैब का ज़िल्म नहीं

१ कह, मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं। और न मैं ग़ैब का ज़िल्म रखता हूँ। और न मैं तुमसे कहता हूँ, कि मैं फ़िरिश्ता हूँ। मैं सिर्फ़ उस वह्य की पैरवी करता हूँ, जो मेरी तरफ़ की गई है । ६ ५०

३६६ अगर ग़ैब का ज़िल्म होता

१ कह, मैं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा और नुक़्सान का इख़्तियार नहीं रखता। मगर जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब जानता तो भलाई में से बहुत लेता और मुझे बुराई लगती नहीं । ७ १८८

३६७ ग़ैर ज़रूरी सवाल न पूछो

१ अये ईमानवालो! ऐसी बातें न पूछा करो कि अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जायें तो तुम पर गिरां गुज़रें । ५ १०४

गिरां-स्वर्द गिरां गुज़रना-दिल पर बोझ होना।

८२ मुल्हिम्[*]

१५८ जिसे चाहता है, उस पर अपनी रूह उतारता है

१ बुलन्द दर्जोंवाला साहिबे-अर्श। अपने बंदों में से जिस पर चाहता है, अपने हुक्म से रूह उतारता है। ताकि मुलाक़ात के दिन हुशियार करे। ४ १५

१५९ मुहर्रिके-क़ल्ब

१ ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाह व रसूल के कहने को बजा लाओ। तुमको हम इसलिए बुलाते हैं कि हम तुमको ज़िन्दगी बख़्शें। और यह जान लो कि अल्लाह हाइल है आदमी और उसके दिल के दरमियान। और यह, कि उसीके पास तुम जमा किये जाओगे। ८ २४

मुल्हिम—अंतर्यामी मुहर्रिके-क़ल्ब—अंतर्यामी अन्तःप्रेरक।

२९ क़ानूने मुकाफ़ाते अमल

८३ क़ानूने मुकाफ़ाते अमल में बुनियादी एतेक़ाद

१५० ग्यारह नुकात

१ कि कोई बोझ ढोनेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं ढोता।
२ इन्सान ने जो सअय की है, वही उसके लिए है।
३ और उसकी सअ्य जरूर देखी जायगी।
४ फिर उसको पूरा-पूरा बदला मिलेगा।
५ और तेरे रब तक सबको पहुँचना है।
६ और वही हँसाता है, रुलाता है।
७ वही मारता है जिलाता है।
८ उसीने नर और मादः का जोड़ा बनाया है।
९ एक बूँद से जब वह डाली जाती है।
१० उसके ज़िम्मे है दो बारः पैदा करना।
११ और वही दौलतमंद करता है। और वही रजा व क़नाअत का सरमाया देता है।
१२ और वही है सितारे-शिअरा का रब। ५३ ३८-४९

८४ मुकाफ़ाते अमल का क़ानून अटल

१५१ अपनी फ़िक्र अपना ज़िम्मा

१ अये ईमानवालो ! अपनी फ़िक्र करो। दूसरे की गुमराही से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता जब कि तुम राह पर हो। अल्लाह ही की तरफ़ तुम सबको लौटकर जाना है। फिर वह तुम्हें बतला देगा कि तुम क्या करते रहे हो। ५ १०८

मुकाफ़ाते अमल-कर्मविपाक मुजाज़-दण्ड, भुगत कार्य क्रिया-प्रतिक्रिया— ——— ——।

२७२ अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी

१ जो सीधी राह पर चलता है वह अपने ही भले को चलता है। और जो गुमराह हुआ वह अपने ही बुरे को गुमराह हुआ। और कोई बोझ ढोनेवाला दूसरे का बोझ नहीं ढोता।

१७ १५

२७३ अल्लाह उसीकी हालत बदलता है जो अपने अंदर तब्दीली लाता है

१ हक़ीक़त यह है कि अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह, जो उसके जी में है, उसे नहीं बदलती। और अल्लाह जब किसी क़ौम पर मुसीबत डालना चाहता है, तो वह टलती नहीं और अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार नहीं।

१३ ११

२७४ हम आप ही अपने दुश्मन हैं

१ तुमको जो मुसीबत पहुँचती है, वह तुम्हारे हाथों ने जो कमाया उस वजह से है। और बहुत से गुनाह तो वह मुआफ़ ही करता है।

४२ ३

२७५ नेकी का बदला दसगुना

१ जो नेकी लेकर आये तो उसके लिए उसका दसगुना है। और जो बदी लेकर आये तो उसके बराबर बदला दिया जायेगा। और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

६ १६

२७६ भलाई का अंजाम भलाई

१ भलाई का बदला भलाई ही है।

५५ ३

३७७ अल्लाह की ज़मीन बसी है

१ कह मेरे बंदो ! जो ईमान लाये अपने परवरदिगार का तक्वा इख्तियार करो। जो लोग इस दुनया में नेकी करते हैं उनके लिए नेक सिला है। और अल्लाह की ज़मीन ज़्यादा है। यक़ीनन्, सब्र करनेवालों को उनका सवाब बेशुमार मिलता है। ३९ १०

३७८ नेक कलाम और अच्छे काम की इज़्ज़त

१ जो इज़्ज़त चाहता है तो (वह समझ ले) कि सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। सुथी बात उसी तक पहुँचती है। और नेक काम को वह बुलंदी बख्शता है। और जो लोग बुरी-बुरी बातें करते हैं, उनके लिए सख्त अज़ाब है। और उनका मक नेस्तो-नाबूद होगा। ३५ १०

८४ मरने के बाद भी या'माल का नतीजा टलता नहीं

३७९ जो यहाँ अन्धा वह वहाँ भी अन्धा

१ जो शख्स इस दुनया में (दीन का) अन्धा रहा वह आखिरत में भी अन्धा रहेगा और राह बहुत खोया हुआ होगा। १७ ७२

३८० अल्लाह की मीज़ान

१ क़ियामत के दिन हम इन्साफ की तराजुएँ रखेंगे। फिर किसी जी पर कुछ भी जुल्म न किया जायेगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी अमल होगा तो हम उसको ला हाज़िर करेंगे। और हम हिसाबवाले काफी हैं। २१ ४७

मक—कपट नेस्तो-नाबूद—नष्ट।

३८१ भूकम्प-प्रकरण

१ जब ज़मीन अपनी भूँचाल से हिलाई जायगी।

२ और ज़मीन अपने बोझ निकाल बाहर करेगी।
और इन्सान कहेगा कि इसको क्या हुआ।

४ उस दिन वह अपनी बातें बयान करेगी।

५ इसलिए, कि तेरे परवरदिगार ने उसे यही हुक्म भेजा।

६ उस दिन लोग निकलेंगे बिखरे हुए। ताकि वह अपने आ'माल को देखें।

७ पस जो ज़र्रा बराबर भलाई करेगा वह उसे देखेगा।

८ और जो ज़र्रा भर बुराई करेगा वह उसे देखेगा। ९९.१–८

३८२ हल्का पल्ला भारी पल्ला

१ वह खड़खड़ा डालनेवाली।

२ क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली?

३ और तूने क्या समझा कि क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली?

४ जिस दिन होंगे लोग जैसे बिखरे हुए पतंगे।

५ और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।

६ पस जिसका पल्ला भारी होगा।

७ तो वह खुशगवार ज़िन्दगी में होगा।

८ और जिसका पल्ला हल्का हुआ।

९ तो उसका ठिकाना गढ़ा (हाविय) है।

१० और तूने क्या समझा कि वह क्या है?

११ आग दहकती हुई। १ १ १–११

भूँचाल—भूकम्प।

३० हयात बा'दल् मौत

८५ क़ियामत नहीं टलेगी

८५/१ पत्थर हो जाओ या लोहा

१ कहते हैं क्या हम जब हड्डियाँ और चूरा चूरा होकर रह जायेंगे तो क्या हम नये सिरे से पैदा करके उठाये जायेंगे ?

२ कह, तुम पत्थर हो या लोहा हो जाओ। या और कोई चीज़ जो तुम्हारे जिय में बड़ी लगे।

३ फिर वह कहेंगे फिर कौन हमें लौटाकर लायेगा ? कह, वही जिसने तुमको पहिली बार पैदा किया। । १७ ४९-५१

८६ नफ़्से लव्वामः की गवाही

१ मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की।

२ और क़सम खाता हूँ उस नफ़्स की जो बुराई पर मलामत करे।

३ क्या इन्सान यह ख़्याल करता है, कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी न करेंगे।

४ क्यों नहीं। हम क़ादिर हैं कि उसकी उँगलियों की पोर-पोर दुरुस्त करें। ७५ १-४

हयात बा'दल् मौत [illegible]

८७ क़ियामत का दिन

२८५ क़ियामत एक वाक़िआ

१ क़सम है उनकी जो उड़ाकर बिखेरनेवाली हैं।
२ फिर क़सम उनकी जो बोझ उठानेवाली हैं।
३ फिर नर्मी से चलनेवाली हैं।
४ फिर हुक्म से बाँटनेवाली हैं।
५ बेशक तुमसे जिसका वादा किया गया वह ज़रूर सच है।
६ और बेशक इन्साफ़ ज़रूर होनेवाला है। ५१ १–६

२८६ कोई किसीका नहीं होगा

१ फिर जब आयेगी कान फोड़ देनेवाली।
२ उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से
३ अपनी माँ और अपने बाप से।
४ अपनी साथवाली (बीबी) से और अपनी औलाद से।
५ उस दिन उनमें से हर आदमी की एक ऐसी हालत होगी जो उसके लिए काफ़ी होगी। (वह उसको दूसरों से बेपर्वा कर देगी)। ८० ३३–३७

२८७ कोई सिफ़ारिश काम नहीं आयगी

१ और डरो उस दिन से जब कोई किसीके ज़रा काम न आयेगा। न किसीकी तरफ़ से कोई मुआविज़ा क़बूल किया जायेगा। और न किसीकी तरफ़ से सिफ़ारिश क़बूल होगी। और न उनको कोई मदद दी जायेगी। २.१२३

१८८ कियामत की बारह निशानियाँ

१ जिस वक्त सूरज लपेटा जायेगा ।
२ और सितारे झड़ जायेंगे ।
३ और पहाड़ चलाये जायेंगे ।
४ और जब बियाती दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी ।
५ और जब जंगली जानवर इकट्ठा किये जायेंगे ।
६ और जब समन्दर भड़काये जायेंगे ।
७ और जब जानें मिलाई जायेंगी ।
८ और जब जिन्दा गाड़ी हुई (लड़की) से पूछा जायगा ।
९ कि किस गुनाह से वह मारी गई ।
१० और जब आ'माल-नामे खोले जायेंगे ।
११ और आस्मान की खाल उतारी जायेगी ।
१२ और जब दोजख दहकायी जायेगी ।
१३ और जब बैहिश्त नज़दीक की जायेगी ।
१४ हर जी जानेगा कि उसने क्या किया है । ८१ १-१४

८८ बैहिश्त व दोजख वगैरः का बिराम

१८९ जंजीर तौक और दहकती आग

१ हमने मुन्किरों के लिए, जंजीरें तौक और दहकती आग तैयार रखी है । ७६ ८

आ'माल-नामे-कर्मपत्र निशान-अवतरण ।

१९० कान आँख और खाल भी गवाही देंगी

१ जिस दिन अल्ला के दुश्मन आग की तरफ़ जमा किये जायेंगे तो उनकी टोलियाँ बनायी जायेंगी ।

२ यहाँ तक कि वह जब उस आग के पास आ जायेंगे तो उनके कान उनकी आँखें और उनकी खालें उनके खिलाफ़ उनके करतूतों की गवाही देंगी ।

३ और वह अपने चमड़ों से कहेंगे तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी ? वह जवाब देंगे हमको उसी अल्लाह ने बुलवाया जिसने हर चीज़ को गोया किया । और उसीने तुमको पहिली बार पैदा किया । और उसीकी तरफ़ तुम लौटाये जा रहे हो ।

४ और तुम (गुनाह करते वक़्त) छुपाते थे । (तो) इस ख्याल से नहीं कि (कल को) तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे खिलाफ़ गवाही देंगी । बल्कि तुमको यह गुमान था कि तुम्हारे बहुत से करतूतों को अल्लाह नहीं जानता ।
४१ १९–२२

१९१ परहेज़गारों का मक़ाम

१ यह आखिरत का घर हम उन लोगों के लिए खास करते हैं, जो न ज़मीन में बड़ा बनने का इरादा करते हैं, न फ़साद का । और मुत्तक़ियों के लिये नेक अंजाम है । २८ ८३

१९२ दूध और शहद की नहरें

१ परहेज़गारों से जिस जन्नत का वा'दा किया गया है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें पानी की नहरें हैं, जो पानी बिगड़ने वाला नहीं। और दूध की नहरें हैं, जिसका मज़ा बदला हुआ नहीं होगा। और ऐसे शरबत की नहरें हैं, जो पीनेवालों के लिए मज़ा देंगी। और शहद की नहरें जो शहद साफ़ किया हुआ होगा। और उन जन्नतवालों के लिए वहाँ तरह-तरह के मेवे हैं। और उनके परवरदिगार की तरफ़ से मग़फ़िरत[1]। ४७ १५

१९३ आ'राफ़

१ और उन दोनों (बेहिश्त और दोज़ख़) के दर्मियान एक हदे फ़ासिल है। और आ'राफ़ के ऊपर कुछ लोग होंगे। हर एक को उसकी निशानी से वह पहचान लेंगे। और जन्नतवालों को पुकारकर कहेंगे तुम पर सलामती है। वह अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए। मगर उसके उम्मीदवार हैं।

२ और जब उनकी निगाहें दोज़ख़वालों की तरफ़ फिरेंगी तो वह कहेंगे ऐ हमारे परवरदिगार, हमें उन गुनहगारों में शामिल न कर। ७ ४६ ४७

१९४ ईमान + इरादा + सअ्-= रज़ाए-इलाही

१ जो आख़िरत का इरादा करता हो और उसके लिए सओ करे, जैसी कि उसके लिए सअी करनी चाहिए, और वह ईमानवाला हो। तो ऐसे हर शख़्स की सअी मश्कूर (क़ाबिलेक़द्र) होगी। (उसको अपनी कोशिश का फल मिलकर रहेगा।) १७ १९

मग़फ़िरत—क्षमा आ'राफ़—दरम्यान रज़ाए-इलाही—ईश्वरी प्रसन्नता, प्रभु प्रसाद।

१९५ दायें बायें और मुक़र्रबीन

१ तुम हो जाओगे तीन क़िस्में ।

२ दाहिनेवाले कैसे अच्छे हैं दाहिनेवाले ।

३ और बायेंवाले कैसे बुरे हैं बायेंवाले ।

४ और आगे निकल जानेवाले सबसे आगेवाले हैं ।

५ वह लोग मुक़र्रब हैं । ५६ ७–११

१९६ मुख़्रे आख़िरत या मुख़्रे दुनिया

१ ऐ इन्सान ! तुझे मेहनत करनी है, अपने परवरदिगार तक पहुँचने के लिए । खूब मेहनत कर फिर । तू उससे मिलनेवाला है ।

२ पस जिसका आ'माल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया गया ।

३ तो उससे हिसाब लिया जायगा आसान हिसाब ।

४ और वह अपने लोगों की तरफ़ खुश होकर लौटेगा ।

५ और जिसको अपना आ'माल-नामा पीठ के पीछे से दिया गया ।

६ वह पुकारेगा मौत-मौत !

७ और वह जहन्नम में दाखिल होगा ।

८ बेशक वह अपने अहलो-अयाल में खुश था ।

९ वाक़ई उसने गुमान किया था कि वह हरगिज़ न लौटेगा ।

८४ ६–१४

मुक़र्रबीन–निकटवर्ती अगलेवाले जहन्नम–नरक ।

३९७ मगर जब अल्लाह चाहे

१ जो बदबख़्त होंगे वह आग में होंगे। वहाँ वह चीख़ेंगे। और धाड़ें मारकर रोयेंगे।

२ वह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक कि आस्मान और ज़मीन रहें, इल्ला यह कि तेरा रब चाहे। पस बेशक तेरा परवरदिगार जो चाहता है, उसे कर डालता है।

३ और वह लोग जो नेकबख़्त होंगे वह जन्नत में होंगे। वह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक कि आस्मान और ज़मीन रहें, इल्ला यह कि तेरा रब चाहे। यह अतिया लाज़वाल है।

११ १०६–१ ८

८६ तुमाइन-र्-हमत

३९८ नफ़्से मुत्मइन्न

१ ऐ इत्मीनानवाली रूह !

२ लौट जा अपने परवरदिगार की तरफ़। तू उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी।

३ पस मेरे (अल्लाह के) बन्दों में शामिल हो जा।

४ और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। ८६ २७–३०

नेकबख़्त—भाग्यवान्, इल्ला यह—सिवाय इसके, अतिया—देन, लाज़वाल—अक्षय, तुमाइन-रहमत—शांतिमय, नफ़्से मुत्मइन्न—हे शांतजीव।

१० अल्लाह की रहमत

१९९ अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी रहमत

१ अल्लाह ने ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों से ऐसे बाग़ों का वाद: किया है, जिसके नीचे नहरें बहती हैं। वो उनमें हमेशा रहेंगे। और उन सदा-बहार बाग़ों में पाकीज़ा घरों का भी वाद: है। और सबसे बढ़कर अल्लाह की रज़ा हासिल होगी। यही है बड़ी कामियाबी। ९ ७२

४ व उज़्लिफ़तिल जन्नतु

१ परहेज़गारों के लिए, बेहिश्त नज़दीक लाई जायेगी। दूर न होगी।
२ (कहा जायगा) यह है जिसका वाद: हर रुजूअ करनेवाले पाबंदी करनेवाले के लिए तुमसे किया गया।
३ जो डरता है रहमान से बग़ैर देखे। और जो रुजूअ करनेवाला दिल के साथ आता है।
४ उसमें सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ। यह हमेशा रहने की जगह है।
५ वह जो कुछ चाहेंगे वहाँ उनके लिए मौजूद है।

और हमारे पास और भी ज़्यादा है।

५ ३१-३

●

रहमत–मतलब व उज़्लिफ़तिल जन्नतु का मज़ीदुन्–और हमारे पास ज़्यादा है।

हमारा धार्मिक साहित्य

(विनोबा)

गीता-प्रवचन (हिन्दी) (अजिल्द)	१ १
गीता-प्रवचन (हिन्दी) (सजिल्द)	२ ५
Talks on The Gita	3 00 2 00
गीता-प्रवचनानि (संस्कृत)	१
गीता-प्रवचन (उर्दू)	१ ५
गीता प्रवचन (उर्दू नागरी लिपि)	१ ५
नामघोषा सार	१ ५
आत्मज्ञान और विज्ञान	१ ५
Science & Self knowledge	1 00
प्रेरणा-प्रवाह	१ २५
जपुजी	१
ज्ञानदेव-चिन्तनिका	१
आश्रम-प्रश्नोपनिषद्	१
स्त्री-शक्ति	१
संत सूक्तियाँ	५
शुचिता से आत्मदर्शन	४
सर्वोदय-पात्र	४
राम नाम : एक चिन्तन	१
भगवान् के दरबार में	१२

(दादा धर्माधिकारी)

स्त्री-पुरुष सहजीवन	१ ५
गांधी पुण्य-स्मरण	५

(श्री कृष्णदत्त भट्ट)

धर्मों की फुलवारी	• ५
वैदिक धर्म क्या कहता है ? (तीन भाग) प्रत्येक	१
जैन धर्म क्या कहता है ?	• ५
बौद्ध धर्म क्या कहता है ?	• ५
पारसी धर्म क्या कहता है ?	• ५
यहूदी धर्म क्या कहता है ?	५
ताओ और कनफ्यूश धर्म क्या कहता है ?	५
ईसाई धर्म क्या कहता है ?	५
इस्लाम धर्म क्या कहता है ?	५
सिख धर्म क्या कहता है ?	५
भजन साहित्य परिचय — र. रा. दिवाकर	१
पुरंदरदास के भजन — बाबुराव कुमठेकर	१
नीति-निर्झर — भगवत	१ २५
ताओ उपनिषद् — मनोहर दिवाण	७५

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी

रूहुल्-क़ुरान अन्य भाषाओं में

एसेंस ऑफ कुरान (अंग्रेजी)	४ ०
रूहुल्-कुरआन (उर्दू)	४ ०
रूहुल्-कुरआन (उर्दू नागरी लिपि)	२ ०
कुरान-सार (हिन्दी) अजिल्द २ ५ सजिल्द	३ ०
कुराण-सार (मराठी)	२.५
कुरान-सार (बंगला)	(प्रेस में)
रूहुल्-कुरआन (अरबी)	(प्रेस में)
रूहुल्-कुरआन (अरबी उर्दू)	
एसेंस ऑफ कुरान (अरबी-अंग्रेजी)	

●